तिब्बे
नब्वी
सल्लल्लाहु अ़लैहि
वसल्लम
Maktab_e_Ashraf

तिब्बे नबवी

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

नाम किताब

तिब्बे नबवी

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Tibb-e-Nabavi

Edition : 2015

Pages: 160

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जिस्मानी सेहत

इलाज— सही बुख़ारी में हज़रत उबादह रज़ि० से रिवायत है— "नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं औरतों से निकाह करता हूं और जो आदमी मेरे तरीक़े से इन्कार करे वह हम में से नहीं" और सुनने अबू दाऊद व नसाई व हाकिम में माक़िल बिन यसार से रिवायत है नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐसी औरतों से निकाह करो जो अपने पतियों से मुहब्बत और अधिक बच्चे पैदा करने वाली हों क्योंकि मैं तुम्हारी कसरत (अधिक आबादी) की वजह से दूसरी उम्मतों पर गर्व करूंगा।

और सही बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि० से रिवायत है—"नबी करीम सल्ल० का इर्शाद है कि ऐ जवानों के गिरोह! तुम में जो निकाह की ताक़त रखे उसे निकाह करना चाहिए इसलिए कि निकाह आंख को ढांकने वाला और शर्मगाह को रोकने वाला है और जो निकाह की ताक़त न रखे उसको रोज़ा रखना चाहिए इसलिए कि रोज़ा मानो ख़स्सी कर देता है।"

फ़ायदा— हदीस शरीफ़ में दो इलाज बताए गए हैं। एक तो

निकाह करना, दूसरे रोज़ा रखना। इसलिए कि निकाह करने से इन्सानी जिस्म खून के फसाद और फोड़े-फुन्सियों से महफ़ूज़ रहेगा लेकिन साथ ही मुबाशरत की अधिकता से परहेज़ भी आवश्यक है क्योंकि इससे इन्सानी जिस्म कमज़ोर हो जाता है और तरह-तरह की बीमारियां लग जाती हैं।

और यदि ग़रीबी के कारण शादी न कर सकता हो तो रोज़ा रखना चाहिएं क्योंकि रोज़ा रखने से रतूबत की अधिकता नहीं होती और बलग़मी रोगों से नजात मिल जाती है लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि रोज़े सुन्नत तरीक़े से रखा करें क्योंकि कभी-कभी रोज़े की अधिकता से रतूबते असली खुश्क हो जाती है। इस प्रकार सौदावी मिज़ाज बन जाता है।

रोज़ा रखने का मसनून तरीक़ा

रोज़े का मसनून तरीक़ा यह है कि हफ्ते में दो रोज़े रखो। एक शनिवार को दूसरा जुमरात को इसलिए कि इसका हुक्म मुस्लिम, अबू दाऊद निर्मिज़ी में अनेक बार आया है और हर महीने में तीन रोज़े रखे। इनको हुजूर सल्ल0 ने कई तरीक़ों से रखा है। कभी तो तेरह, चौदह व पन्द्रह तारीख़ का रोज़ा रखा। कभी दिनों के हिसाब से एक महीने में इतवार पीर का रोज़ा रखा और दूसरे महीने में मंगल बुद्ध और जुमरात का रोज़ा रखा।

अतएव जामेअ तिर्मिज़ी में हज़रत आइशा रज़ि0 से एक हदीस नकल की है कि कभी दिनों व तारीख़ों की कैद न फरमाते बल्कि

जिस तारीख़ में चाहते ये तीनों रोज़े रखा करते थे। और साल भर में मसनून तरीक़ा यह है कि रमज़ान के महीने के पूरे रोज़े रखे और ईद के छः रोज़े और मुहर्रम के दो रोज़े और ज़िलहिज्जा के नौ रोज़े रख करे। जो आदमी इस मसनून तरीक़े से रोज़े रखेगा उसकी रतूबत न तो ज़्यादा पैदा होगी और न ही पूरी तरह ख़ुश्क ही होगी।

जब नयी दुल्हन को घर में लाए तो

इलाज— जब दुल्हन को लाए तो उसका हाथ पकड़कर यह दुआ पढ़े :

अल्ला हुम्मम इन्नी असअलुक मिन ख़ैरिहा व ख़ैरी मा जबलतुहा व अऊज़ु बिक मिन शर्रि मा जब-लतुहु अलैह।

''ऐ अल्लाह मैं इसकी बेहतरी और इसको ऐबों की बेहतरी का सवाल करता हूं और इसकी बुराई और इसके ऐबों की बुराई से पनाह चाहता हूं।''

फ़ायदा— यह रिवायत अबू दाऊद और दूसरी किताबों में अम्र बिन औफ़ से नक़ल की गयी है। इस दुआ की बरकत यह है कि अल्लाह इस औरत की बुराई दूर कर देगा और उसके घर में इस औरत की नेकी फैला देगा और यदि कोई आदमी बान्दी व गुलाम का कोई जानवर खरीदे तो उसकी पेशानी को पकड़ कर भी यही दुआ पढ़े। मसनून तरीक़ा यह है कि जब दुल्हन को घर में लाए तो उसके दोनों पांव धोकर पानी को घर के कोनों में छिड़क दे। इससे अल्लाह तआला घर में खैरव बरकत प्रदान करेगा।

मुबाशरत के समय शैतान से हिफ़ाज़त

इलाज— जब मुबाशरत करना चाहे तो पहले यह दुआ पढ़ ले :

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मजन्निबनश्शैताने व जन्निबनश्शैताना मा रज़क़त-न

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से ऐ अल्लाह! हमको शैतान से दूर रख और जो नेमत हमें तूने दी उससे शैतान को दूर रख।

मुबाशरत का सही समय

इलाज— फकीह अबुल्लैस ने अपनी किताब बुस्तान में लिखा है कि मुबाशरत के लिए सबसे बेहतर समय रात के आख़िरी भाग का है क्योंकि पहले हिस्से में अमाश्य में खाना भरा होता है। मुबाशरत करते समय इस बात का ध्यान रहे कि मुंह किबले की ओर न हो।

मुबाशरत के उसूल

इलाज— मर्द व औरत को चाहिए कि सोहबत के समय नंगे न हों बल्कि चादर आदि ओढ़े रहें क्योंकि नबी सल्ल0 ने फरमाया है कि वहशी जानवरों की तरह नंगे न हों। फकीह अबुल्लैस ने अपनी किसाब बुस्तान में लिखा है कि नंगे होकर मुबाशरत करने से औलाद बेशर्म पैदा होती है।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक आदमी नबी सल्ल० के पास आया और शिकायत की कि मेरे घर में औलाद पैदा नहीं होती। नबी सल्ल० ने इलाज बताया कि "तू अंडे खाया कर।"

हज़रत अबु हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने हज़रत जिबरील अलै० से अपनी मर्दाना ताक़त की शिकायत की जिबरील अलै० ने कहा कि आप हरीसा खाया करें क्योंकि इसमें चालीस मर्दों की ताक़त है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल० का इर्शाद है कि तुम मेहंदी का ख़िज़ाब लगाया करो। क्योंकि मेहंदी मर्दाना ताकत पैदा करती है और हुज़ैल बिन हकम कहते हैं कि नबी सल्ल० का इर्शाद है कि बदन से बालों को जल्द साफ करना मर्दाना ताकत को बढ़ाता है। (ग़ायतुल अहकाम)

मुबाशरत के समय बातें करना

इलाज—फकीह अबुल्लैस ने बुस्तान में लिखा है कि मुबाशरत के समय ज़्यादा बातें न की जाएं क्योंकि ख़तरा है कि लड़का गूंगा न पैदा हो।

बिना ग़ुस्ल मुबाशरत का नुक़सान

यदि किसी आदमी को एहतलाम हुआ हो और वह बिना ग़ुस्ल किए अपनी पत्नी से मुबाशरत करे तो इस बात का ख़तरा है कि लड़का कन्जूस या दीवाना न हो जाए। इसलिए ऐसी बातों से

बचना चाहिए। यह इलाज साहिबे एहयाउल उलूम ने बुस्तान में लिखा है।

खड़े होकर मुबाशरत करना

इलाज— साहिबे कुनियः ने लिखा है कि खड़े होकर मुबाशरत करना ठीक नहीं है। इससे बदन कमज़ोर व दुर्बल हो जाता है और पेट भरा होने पर मुबाशरत नहीं करनी चाहिए ऐसा करने से सन्तान बेवकूफ़ व कम अक्ल पैदा होती है।

महीने के बीच में मुबाशरत करना

इलाज— अबू नईम ने किताबुत्तिब्ब में लिखा है कि नबी सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 से फरमाया कि ऐ अली! आधे महीने में अपनी पत्नी के साथ मुबाशरत न किया करो क्योंकि इस तरीख़ में शैतान आया करते हैं।

मुबाशरत के बाद पेशाब करना

इलाज— साहिबे शरअतुल इस्लाम में लिखा है कि मुबाशरत के बाद पेशाब अवश्य कर लेना चाहिए। नहीं तो किसी लाइलाज रोग का शिकार हो जाने का डर है।

मुबाशरत के बाद अंग (लिंग) को धोना

इलाज— फकीह अबुल्लैस ने लिखा है कि सोहबत व मुबाशरत

के बाद अपने लिंग को धो लेना चाहिए। इससे बदन स्वस्थ रहता है लेकिन मुबाशरत के तुरन्त बाद ठंढे पानी से न धोएं क्योंकि इस तरह बुख़ार होने का ख़तरा रहता है।

मुबाशरत के समय औरत की शर्मगाह देखना।

इलाज— साहिबे शरअतुल इस्लाम ने लिखा है कि मुबाशरत के समय औरत की शर्मगाह को न देखे क्योंकि इससे यह ख़तरा लगा रहता है कि कहीं औलाद अंधी न पैदा हो।

बच्चे की पैदाइश की तकलीफ़ व उसका इलाज

इलाज— फतावा हुज्जत में लिखा है कि यदि किसी औरत को बच्चा होने के समय मुश्किल या तकलीफ़ हो तो यह तावीज़ लिख कर और सफ़ेद कपड़े में लपेट कर औरत की बायीं रान पर बांध दिया जाए।- इंशाअल्लाह बच्चा बड़ी आसानी व बिना किसी तकलीफ के पैदा होगा। तावीज़ यह है :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम0 व अलकत मा फीहा व त-ख़ल्लत वअज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त। अहयन अशरा हिय्यन0

''शुरू अल्लाह के नाम से जो मेहरबान और रहम करने वाला है और जब ज़मीन निकाल फेंकेगी जो उसमें है और ख़ाली हो

जाएगी और अपने रब का हुक्म सुनेगी। वह इसी योग्य है।"

बच्चों के कानों में अज़ान व तकबीर के फ़ायदे

इलाज— जब बच्चा पैदा हो तो उसके दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में तकबीर कहनी चाहिए। इसकी बरकत यह है कि बच्चा उम्मुस्सुबियान से महफ़ूज़ रहेगा।

खजूर चबाकर बच्चे के मुंह में डालना

इलाज— बच्चे के पैदा होने के बाद थोड़ी-सी खजूर चबाकर उसके मुंह में डालनी चाहिए और बच्चे के लिए दुआ भी करनी चाहिए। कुछ उलमा का विचार है कि इस इलाज से बच्चा खुश अख़्लाक और सूझ-बूझ वाला होता है।

बच्चों का नाम सातवें दिन रखना

इलाज— हदीस शरीफ में आया है कि जब बच्चा पैदा हो तो सातवें दिन उसका नाम रखा जाना चाहिए। नाम अच्छा और पसन्दीदा होना चाहिए क्योंकि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया है कि अपने बच्चों के अच्छे नाम रखो। बुरा नाम बच्चे के लिए बदशगुनी है। अच्छा नाम ऐसा होना चाहिए जैसे अब्दुल्लाह व अब्दुर्रहमान और चाहिए कि बच्चे के बाल मुंडवाकर उनके बराबर चांदी तौल कर सदक़ा कर देना चाहिए या फिर एक-दो बकरे

ज़बह करके सदका करें। इस अमल की बरकत से बच्चा हर प्रकार की बला व आफ्त से महफूज़ रहेगा।

बुरी नज़र से हिफ़ाज़त का तावीज़

इलाज— यदि किसी बच्चे को बुरी नज़र लग जाए तो यह तावीज़ लिखकर उसके गले में डाल देना चाहिए तावीज़ यह है : ***अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्म-ति व मिन कुल्लि ऐनिल लाम्म:***

"पनाह चाहता हूं अल्लाह के नाम के ज़रिए शैतान मर्दूद और हर बुरी नज़र से।"

फायदा— लड़कों को बुरी नज़र लगने के लिए यह तावीज़ बड़ा ही मुजर्रब है। हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया है कि अपने बच्चे को बेवकूफ व बदकार औरतों से दूध न पिलाया करो क्योंकि दूध का असर बच्चे के शरीर और उसके अखलाक पर पड़ता है।

खाने के समय शैतान से हिफ़ाज़त

इलाज— जो आदमी यह चाहे कि खाने के समय शैतान से व उसकी शरारतों से बचा रहे तो उसे चाहिए कि बिस्मिल्लाह से खाना शुरू करे और खाना दाएं हाथ से ही पकड़े और दाएं हाथ से ही खाए। इसलिए कि शैतान बाएं हाथ से खाता-पीता है जिस खाने पर अल्लाह का नाम नहीं लिया जाता वह खाना शैतान के

लिए हलाल हो जाता है। यह रिवायत हज़रत अबु हुरैरः रज़ि0 की ब्यान की हुई है।

नमक खाने के फ़ायदे

इलाज— साहिब जामेअ् कबीर ने हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत नक़ल की है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि ऐ अली! खाना नमक के साथ शुरू करना चाहिए इसलिए कि सत्तर रोगों और बीमारियों से नमक में शिफा रखी गई है और उनमें से कुछ यह है जुनून, कोढ़, पेट का दर्द, दांत दर्द आदि।

रोगी के साथ खाना

इलाज— इत्तिफाक़ से यदि कभी किसी रोगी के साथ किसी आदमी को खाना खाने का अव्सर आ जाए तो उसे खाने से पहले यह दुआ पढ़ लेनी चाहिए।

बिस्मिल्लाह सिक़्क-तन बिल्लाहि व-त-वक्कलन अलैह0

''अल्लाह के नाम से और उसी पर भरोसा करके खाता हूं।''

इस दुआ की बरकत से वह उस रोग से बचा रहेगा।

खाने के समय की कुछ दुआएं

खाना खाने के बाद यह दुआ पढ़ी जाए :

अल्ला हुम्मम बारिक लना फीहि व अतअ़मना खैरम्मिन्ह0

"ऐ अल्लाह! हमारे लिए इसमें बरकत दे और इससे बेहतर प्रदान फरमा।"

इसी तरह जब अच्छी तरह पेट भर कर खाए और दूध पीये तो यह दुआ पढ़ी जाए :

अल्लाहुम्मा बारिक फीहि व ज़िदना फीह0

"ऐ अल्लाह! इसमें बरकत दे और यह हमें अधिक प्रदान कर।"

खाने में बरकत हासिल करना

इलाज—फकीह अबुल्लैस ने हज़रत हसन रज़ि0 से रिवायत नक़ल की है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि खाने के बीच में से न खाया करो क्योंकि बीच में बरकत नाज़िल होती है। इस हदीस को हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि0 ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से और उन्होंने नबी करीम सल्ल0 से रिवायत किया है।

बदहज़मी का मुजर्रब इलाज

इलाज— क़ादरी में लिखा है कि तकिया लगाकर खाना खाने से बदहज़मी हो जाती है। और बुस्तान में लिखा है कि खाना खाने से पहले और बाद में हाथ धोने से बरकत होती है। नबी करीम सल्ल0 का इर्शाद है कि मैं तकिया लगा कर खाना नहीं खाता क्योंकि तकिया लगाकर और खड़े होकर और सवारी पर

बैठ कर खाना खाने से बदहज़मी हो जाती है। इसके ख़िलाफ़ अमल करने से खाना जल्द हज़म हो जाता है और घमंड भी जाता रहता है।

फ़ाक़ा व तंगी से हिफ़ाज़त

इलाज— साहिब "मतालिबुल मोमिनीन" ने हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत दर्ज की है कि जब किसी आदमी को गुस्ल करने की ज़रूरत आ पड़े तो उसे चाहिए कि बिना कुल्ली किए खाना न खाए। क्योंकि ऐसा करने से फ़ाक़ा व तंगी और मोहताजी के आने का ख़तरा है।

फ़रिश्तों की दुआ लेना

इलाज— बुस्तान और दूसरी किताबों में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी खाना खाने के बाद बर्तन को चाट कर साफ़ कर देता है तो वह बर्तन उसके लिए दुआ करता है कि अल्लाह इस आदमी को आग से नजात दे। जिस प्रकार इसने मुझे शैतान के हाथ से नजात दिलाई। नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि अल्लाह के फ़रिश्ते उस आदमी के लिए दुआ करते हैं जो खाने के बाद अपनी उंगलियां चाट लेता है। इस अमल से इन्सान के घमंड का भी बेहतरीन इलाज हो जाता है।

रिज़्क़ की कुशादगी की तदबीर

उमदतुल अहकाम में रिवायत है कि नबी सल्ल0 का इर्शाद है कि जो आदमी दस्तरख़्वान पर से गिरी हुई चीज़ उठा कर हमेशा खा लिया करे उसके रिज़्क़ में कुशादगी होती रहेगी। हज़रत जाबिर रज़ि0 ने नबी करीम सल्ल0 से रिवायत की है कि खाने के समय जब कोई लुक़्मा गिर जाए तो उसको उठा कर और साफ करके खा लेना चाहिए और उसे शैतान के लिए न छोड़ना चाहिए।

फायदा— इस हदीस से मालूम हुआ कि यह अमल घमंड का भी बड़ा अच्छा इलाज है। कुछ दूसरी हदीसों में है कि जो आदमी भी दस्तरख़्वान से गिरी हुई चीज़ उठाकर खाता है तो वह जन्नत की हूरों के लिए मह्र हो जाएगा और अल्लाह तआला उसे और उसकी औलाद को कोढ़, सफेद दाग़ और जुनून की बीमारी से महफ़ूज़ रखेगा।

बरकत हासिल करने का अ़मल

इलाज— उमदतुल अहकाम में रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया कि ऐ लोगो ! जमा होकर खाना खाया करो। इस तरह अल्लाह बरकत प्रदान करेगा। हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया कि सबसे बेहतर और उम्दा खाना वह है जिसमें ज़्यादा हाथ डाले जाएं और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सबके साथ खाने में शिफा है और इर्शाद है कि बहुत बुरे वे

लोग हैं जो अकेले खाएं और अपनी लौंडी को मारें और अपनी बख़्शिश को बन्द करें और निकाह करें हाथ से अर्थात् जलक (मुश्तज़नी) करें।

बुसतान में है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया कि खाना ठंडा करके खाना चाहिए क्योंकि गर्म खाने में बरकत नहीं होती।

फ़ायदा— कुछ किताबों में लिखा है कि गर्म खाने से मेअ्दा कमज़ोर हो जाता है।

खाना हज़्म होने का इलाज

इलाज— अबू दाऊद में उम्मे मअ्बद रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि सिरका बेहतरीन सालन है ऐ ख़ुदा! सिरके में बरकत प्रदान कर।

फ़ायदा— जामेअ़ कबीर में लिखा है कि सिरके में यह विशेषता है कि यह खाने को हज़्म करता है। इब्ने हिब्बान ने अ़ता से और उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 के निकट तमाम सालनों में सबसे प्यारा सालन सिरका है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 से रिवायत है कि सिरका बेहतरीन सालन है और नबी करीम सल्ल0 को हरी तरकारियां भी बहुत अधिक पसन्द थीं। कन्ज़ुल इबाद में है कि इसमें यह हिकमत है कि जिस दस्तरख़्वान पर हरी तरकारी होती है वहां फरिश्ते आते हैं।

दिल की ताक़त का इलाज

इलाज— मसरूक़ कहते हैं कि मैं एक बार हज़रत आईशा रज़ि० के पास हाज़िर हुआ। मैंने देखा कि उनके पास एक अंधा आदमी बैठा हुआ था और हज़रत आईशा रज़ि० तुरंज (बड़ा नींबू या चकोतरा) का टुकड़ा शहद में लगाकर उसको खिला रही थी (वह हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मक्तूम थे)। मैंने मालूम किया "उम्मुल मोमनीन" यह कौन हैं? फ़रमाया कि यह वह शख़्स है जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने अपने नबी पर ग़ुस्सा किया था। अबू नईम ने यह हदीस किताबुत्तिब में नक़ल की है। इस हदीस के बारे में शारेह (व्याख्या करने वालों ने) लिखा है कि तुरन्ज शहद के साथ नहार मुंह खाना दिल व दिमाग़ के लिए बड़ा ही मुफ़ीद है।

मक्खी के ज़हर से शिफ़ा

इलाज— नसाई ने अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत की है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया है कि खाने में यदि मक्खी गिर जाए तो उस खाने में मक्खी को डुबो दे क्योंकि उसके एक पर में ज़हर है और दूसरे में शिफ़ा है और मक्खी की यह आदत है कि पहले वह ज़हर वाला पर ही डुबोती है। इस हदीस को अबू दाऊद ने हज़रत अबू हुरैर: रज़ि० से नक़ल किया है।

इस हदीस से पता चला कि मक्खी क्योंकि ज़हर वाला पर पहले डुबोती है। इसलिए डुबकी देकर दूसरा पर भी खाने में डुबो

दिया जाए ताकि ज़हर का तोड़ हो जाए और खाने को ज़हर के अस्रात से बचा लिया जाए।

खाने-पीने में ज़हर से हिफ़ाज़त

इलाज — कन्ज़ुल इबाद में लिखा है कि जब कोई आदमी कुछ खाए-पीये तो यह दुआ पढ़ लिया करे। इस दुआ की बरकत से खाने के अस्रात (नुकसान पहुंचाने वाले) से बचा रहेगा। दुआ यह है :

बिस्मिल्लाहि खैरिल असमाई बिस्मल्लाहि रब्बिल अर्ज़ि व रब्बिस्समाई बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रू मअइस्मिहि शैउन फ़िल अर्ज़ि वला फ़िस्सामई व हुमस्मीउल अलीम०

"खाना शुरू करता हूं मैं ऐसे अल्लाह के नाम से जो सब नामों से उच्च है और ऐसे नाम के साथ जो ज़मीन व आसमान का मालिक। ऐसे अल्लाह के नाम से जिसकी बरकत से ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वही सुनने वाला और जानने वाला है।"

इस दुआ के बारे में दिलचस्प हिकायत

रिवायत है कि अबू मुस्लिम ख़ौलानी की एक लौंडी थी। उसने अपने मालिक को कई बार ज़हर दिया लेकिन उस पर कोई असर न हुआ काफी मुद्दत गुज़र जाने के बाद लौंडी ने मालिक से कहा कि मैंने तुमको कई बार ज़हर दिया लेकिन तुम पर कुछ असर न

हुआ इस का कारण क्या है? मालिक ने पूछा कि तूने मुझे ज़हर क्यों दिया था? उसने कहा कि तुम बूढ़े हो गए हो और मुझे हड्डियां पसन्द नहीं हैं। मालिक ने कहा कि मैं हमेशा ये कलिमात अपने हर खाने-पीने की चीज़ पर पढ़कर खाता हूं उसी की बरकत से मैं ज़हर से बचा रहा। इसी के साथ उन्होंने उस लौंडी को आज़ाद कर दिया।

हाज़मे का इलाज

इलाज— तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया कि गोश्त को छुरी या चाकू से काट कर न खाया करो क्योंकि यह ग़ैर अरबों का तरीका है। बल्कि गोश्त को दांतों से काट कर खाना चाहिए इसलिए कि बचाव खूब करता है (बदहज़मी से) और दांतों से खाने से यह जल्द हज़्म होता है।

दांत की तकलीफ़ का इलाज

इलाज— अबू नईम ने किताबुत्तिब में लिखा है कि ख़िलाल न करने से दांत कमज़ोर हो जाते हैं और कुछ रिवायतों में यह भी है कि ख़िलाल न करने से फरिश्ते बेज़ार हो जाते हैं और उनको तकलीफ़ होती है।

किताबुत्तिब में कबीसियह बिन ज़वैब से रिवायत है कि नबी सल्ल0 का इर्शाद है कि आस की और खुश्बू वाली लकड़ी से

ख़िलाल न किया करो क्योंकि मैं यह पसन्द नहीं करता कि किसी को कोढ़ की बीमारी हो जाए। कुछ किताबों में लिखा है कि हुब्बुल आस की लकड़ी को आस कहा जाता है। और उलमा ने लिखा है कि निम्न लकड़ियों से ख़िलाल करना ठीक नहीं है और यह ख़तरा है कि कहीं कीड़ा न लग जाए नुकसान पहुंचाने वाली लकड़ियां यह हैं—अनार, बांस, कलम बनाने का नेज़ा और मेवे वाली लकड़ियां जैसे अमरूद, नाशपाती, इंजीर, सेब, मुनक्का, किशमिश आदि। इसी तरह सोना चांदी, तांबा, पीतल आदि से भी ख़िलाल नहीं करना चाहिए क्योंकि इस चीज़ों से मुंह में बदबू पैदा होती है। ख़िलाल के लिए सबसे बेहतर वे लकड़ियां हैं जो तल्ख़ होती हैं।

खाना-पीने में बेबरकती

इलाज— हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया है कि खाने में फूंक मारने से बरकत जाती रहती है। यह रिवायत कन्ज़ुलइबाद से नकल की गयी है।

कम खाने के फ़ायदे

इलाज— किताबुत्तिब में अबू नईम ने लिखा है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि पेट से बड़ा बर्तन अल्लाह ने कोई पैदा नहीं किया। इन्सान को चाहिए कि जब खाए तो उसके तीन हिस्से करे। इस प्रकार कि एक हिस्सा खाने और एक हिस्सा पानी के लिए और एक हिस्सा सांस के आने-जाने के लिए छोड़ दे।

इस हदीस से पता चला कि यदि किसी की ख़ुराक तीन पाव के बराबर है तो उसको एक पाव खाना चाहिए ताकि सेहत बनी रहे और हकीकत यही है कि कम खाने के बहुत-से फायदे हैं जिनमें कुछ यह हैं—आम तौर से सेहत ठीक रहती है। हाफ़िज़ा और अक्ल तेज़ रहती है ज़रूरत से ज़्यादा नींद नहीं आती। सांस आसानी से आता है। नमाज़ में काहिली और नींद नहीं आती।

अधिक खाने के नुक़सान

इलाज— ज़्यादा खाने से बहुत-से रोग पैदा हो जाते हैं जैसे बदहज़मी और हैज़ा की शिकायत हो जाती है। इसीलिए नबी सल्ल0 को डकार से बड़ी सख़्त नफरत थी। आप फरमाते थे कि इतना अधिक क्यों खा जाते हो। दूसरा नुकसान अधिक खाने का यह है कि इबादत में मज़ा नहीं आता और अधिक खाने से औलाद कम अक्ल पैदा होती है। ऐसा आदमी अल्लाह की ओर से हिकमत की बात से महरूम रहता है। उसका पढ़ने-लिखने में दिल नहीं लगता। ऐसे आदमी में मुहब्बत व दया नहीं होती और वह सब को अपने ही जैसे पेट भरा समझता है। नेक लोग मस्जिद की ओर जाते हैं तो उसका रुख़ पाख़ाने की ओर होता है।

मिट्टी खाने के नुक़सान

इलाज— अबू नईम ने किताबुत्तिब्ब में हज़रत अबु हुरैरः

रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 का इर्शाद है कि जो आदमी मिट्टी खाता है तो मानो वह आत्महत्या करता है और ज़ामेअ् कबीर में हज़रत आइशा रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि ऐ आईशा! तुम मिट्टी कभी न खाना क्योंकि इसमें तीन नुकसान हैं– एक हमेशा की बीमारी, दूसरे पेट बिल्कुल ख़राब हो जाता है और तीसरे इन्सान की रंगत पीली पड़ जाती है।

गोश्त खाने के फ़ायदे

इलाज– किताबुत्तिब्ब में अबू नईम ने हज़रत अबु हुरैरः रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 का इर्शाद है कि गोश्त तमाम सालनों का सरदार है, दुनिया व आख़िरत में। और किताबुत्तिब्ब में हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत अली रज़ि0 ने फरमाया – ऐ लोगो! गोश्त को अपनाओ और गोश्त अधिक खाया करो क्योंकि गोश्त खाने से हलक अच्छा रहता है। रंग को साफ करता है और पेट को घटाता है अर्थात् गोश्त खाने वाले की तोंद नहीं निकलती। और हज़रत अली रज़ि0 ने फरमाया कि जो आदमी चालीस दिन तक गोश्त न खाए उसका हलक बड़ा हो जाता है और किताबुत्तिब्ब में ही हज़रत अबु हुरैरः रजि0 की रिवायत है कि नबी सल्ल0 का इर्शाद है कि गोश्त खाने के समय दिल को ख़ुशी होती है।

बदन की कमज़ोरी का इलाज

इलाज— जामेअ् कबीर में है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि इंजीर खाने से आदमी कौलिंज की बीमारी से महफ़ूज़ रहता है। उलमा ने लिखा है कि इंजीर के बहुत से फ़ायदे हैं जैसे जल्द हज़म होने वाला है। तबीयत में नर्मी पैदा करता है और सौदा को पसीने के ज़रिए बाहर निकालता है। सुद्दे खोलकर निकालता है और कुछ हदीसों में है कि इंजीर खाया करो क्योंकि यह बवासीर के लिए लाभकारी है और दर्द नक़रस में लाभ देता है। इमाम अली मूसा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि इंजीर खाने से मुंह में बदबू जाती रहती है और सर के बाल लम्बे करता है। क़ूलंज के लिए भी लाभकारी है।

ज़ैतून और उसके तेल के फ़ायदे

इलाज— अबू नईम ने किताबुत्तिब्ब में लिखा है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया—ऐ अली! ज़ैतून खाया करो और उसके तेल की मालिश किया करो। इसलिए कि जो आदमी रोज़ाना ज़ैतून की मालिश करता है उसके पास चालीस दिन तक शैतान नहीं आता। उलमा लिखते हैं कि ज़ैतून में अल्लाह तआला ने तरह-तरह के ख़्वास और फ़ायदे रखे हैं। यदि इसका अचार सिरका में डाल कर खाए तो मेअ्दा ताक़तवर हो जाता है और भूख ज़्यादा लगती है और इसके खाने से आदमी सेहतमन्द रहता है और मर्दाना ताक़त को बढ़ाता है। यदि ज़ैतून का मग़ज़ आटे

और चर्बी में मिलाकर सफ़ेद दाग़ की जगह लगाएं तो इन्शा अल्लाह सफ़ेद दाग़ जाता रहेगा और यदि कोई औरत इसका शीरा अपने बदन के अन्दर रख ले तो सफ़ेद पानी अर्थात् लिकोरिया को बन्द कर देता है। क़ूलंज के लिए भी मुफ़ीद है। यदि कोई आदमी ज़ैतून से कुल्ली करे तो दांत मज़बूत हो जाते हैं बिच्छू के काटे पर लगाने से उसी समय ठंढक पड़ जाती है। इसका तेल बालों को काला करता है और सुद्दे खोल देता है। क़ब्ज़ दूर करता है और ज़ैतून के लेप से सर का दर्द जाता रहता है।

देर तक जवान रहने का इलाज

इलाज— "अबू नईम ने हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत नकल की है कि फ़रमाया नबी सल्ल0 ने ऐ लोगो! रात को खाना ज़रूर खाया करो क्योंकि रात का खाना छोड़ने से जल्द बुढ़ापा आ जाता है।" मतलब यह कि रात का खाना हमेशा छोड़ना नुकसानदेह है। वैसे रात को इतना ही खाना चाहिए जितना कि आसानी से हज़्म हो सके।

खजूर के फ़ायदे

इलाज— अबू नईम ने हज़रत अबु बक्र सिद्दीक रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि खजूरों में सबसे बेहतर बर्नी खजूर है क्योंकि यह पेट से बीमारी को निकालती है और इसमें कोई बीमारी नहीं है।

बर्नी खजूर बहुत-सी किस्मों में से एक है। वह छोटी होती है गुठली उसकी नर्म होती है। यह एक तरफ से मोटी और दूसरी तरफ से कुछ टेढ़ी होती है।

जादू और ज़हर का इलाज

इलाज— इब्ने हिबान और अबू नईम ने इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 के निकट अ़ज्वा खजूर बहुत ही प्यारी थी। आप का इर्शाद है कि अजवा खजूर जन्नत से है और इसमें ज़हर से शिफा है और फरमाया कि जो आदमी रोज़ाना सुबह को सात अ़ज्वा खजूरें खाएगा वह उस रोज़ ज़हर और जादू से महफूज़ रहेगा और कुछ रिवायतों में है कि अ़ज्वा जन्नत से है। इसमें बीमारियों से शिफा है।

दिमाग़ की ताक़त के लिए इलाज

इलाज— अबू नईम ने वासिला बिन अल अस्कअ् से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया ऐ लोगो! कद्दू अर्थात् लौकी अधिक खाया करो क्योंकि यह दिमाग़ की ताकत को बढ़ाता है। हज़रत आइशा रज़ि0 ने फरमाया है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया— ऐ आइशा! जब तुम हांडी पकाओ तो उसमें कद्दू डाल लिया करो क्योंकि यह दुखी दिल के लिए ताकत की ज़मानत है।" इस का राज़ यह है कि इसकी ठंढक गोश्त की गर्मी को दूर कर देती है।

दिल और दिमाग़ की कमज़ोरी का इलाज

इलाज— "अबू नईम ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 के निकट सबसे प्यारा खाना सरीद था।" रोटी को शोरबा में भिगोकर खाने को सरीद कहा जाता है। उलमा ने कहा कि यह खाना दिल व दिमाग़ को ताक़त देता है और जल्द हज़म होने वाली ग़िज़ा है। एक सेर खजूरें भिगो कर ऊपर से थोड़ा-सा मक्खन मिला दिया जाए तो उसको सरीद कहते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने रिवायत की है कि हज़रत सल्ल0 को सरीद बहुत ही अधिक प्रिय था।

गैस का इलाज

इलाज— अबू नईम ने अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि0 से रिवायत की है कि अब्दुल्लाह ने कहा— मैंने हुज़ूर सल्ल0 को ककड़ी या खीरा खजूर के साथ खाते हुए देखा है।"

उलमा ने लिखा है कि इस खाने से मेअ्दे का मैल दूर हो जाता है और खाना जल्द हज़म हो जाता है। ककड़ी की ठंढक और खजूर की गर्मी मिलकर सन्तुलित हो जाती है और खजूर मर्दाना ताक़त को बढ़ाती है और बदन में खून पैदा करती है गुर्दे को ताक़त बख़्शती है। बलग़म और सर्दी के असर से पैदा होने वाली बीमारियों में खजूर का खाना बड़ा ही मुफीद है और यदि थोड़े मीठे के साथ इसको खाए तो मसाना की पथरी के लिए मुफ़ीद है और खीरा पेशाब न आने वाले के लिए बड़ा लाभकारी

है। इसके खाने से पेशाब आता है और तबीयत खुल जाती है। सुफ़रावी मिज़ाज ववालों के लिए इस का खाना बड़ा मुफीद है। ककड़ी ख़ून और सुफ़रावी हरारत को मारती है और खट्टी डकार के लिए मुफ़ीद है। प्यास को बुझाती है और पेशाब व मसाने की पथरी को फ़ायदा पहुंचाती है। घबराहट व बदन की ख़ारिश के लिए भी मुफीद है।

दिमाग़ की ख़ुश्की और ख़ारिश का इलाज

इलाज— अबु हातिम ने हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 ख़रबूज़े को खजूर के साथ खाया करते थे और इर्शाद फरमाते थे कि खजूर की गर्मी खरबूज़े की ठंडक को दूर करके सन्तुलित बना देती है।

इस हदीस से पता चला कि खरबूज़ा ठंढा व तर है इसलिए सुफ्रावी व सौदावी मिज़ाज वालों के लिए बड़ा ही मुफीद है। यह दिमाग़ में रतूबत पैदा करता है और सुद्दों को निकालता है पेशाब इससे खूब होता है और मसाने की पत्थरी को यह निकाल डालता है।

मर्दाना ताक़त में बढ़ावा

इलाज— "अबू नईम ने किताबुत्तिब्ब में लिखा है कि नबी सल्ल0 खजूर को मसका के साथ बड़े शौक़ से खाते थे।" उलमा ने लिखा कि इस खाने से मर्दाना ताकत अधिक हो जाती है और

बदन बढ़ता है और आवाज़ साफ होती है। मसका और शहद मिलाकर खाया जाए तो ज़ातुलजुनुब के लिए मुफीद है। और बदन को मोटा करता है।

ख़ून साफ़ करने का इलाज

इलाज— "साहिबे शरअतुल इस्लाम ने एक हदीस नक़ल की है कि हर अनार में एक क़तरा (बूंद) जन्नत के पानी का ज़रूर होता है।"

अनार के असंख्य फायदे हैं। जैसे: ख़ून साफ करता है और बिगड़े हुए खून को साफ करता है। मर्दाना ताकत को बढ़ाता है। मेअ्दे को ताज़गी बख़्शता है और सुद्दे खोलता है। तबीयत को नर्म करता है। दस्त बन्द करता है खाने के बाद इसके इस्तेमाल से खाना जल्द हज़म होता है। जिगर में ताकत पैदा करता है। आवाज़ को साफ करता है। बदन को मोटा करता है। रंग निखारता है। लेकिन ज़्यादा इस्तेमाल से मेअ्दा कमज़ोर होता है। अनार (खट्टा) मेअ्दे की हरारत को कम करता है और खून के जोश को बढ़ाता है और दिमाग़ की तरफ बुख़ारात (गैस) को चढ़ने से रोकता है। गर्मी से परेशानी हो तो इसका खाना बड़ा ही मुफीद है।

पेट की रतूबत और असंख्य रोगों का इलाज

इलाज— अबु नईम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्ल० खीरे को नमक के साथ खाया

करते थे।

हकीमों ने लिखा है कि खीरे में रतूबत होती है और नमक रतूबत को मारता है। इसके अलावा नमक के और भी असंख्य फायदे हैं। नमक बलग़म और सौदा का मिश्रण है यह खाना हज़म करता है। रंग निखारता है। कोढ़ के लिए भी बड़ा मुफीद है। सिकिन्जिबीन के साथ अफीम और ज़हर के असरात को ख़त्म करता है। सिकिन्जिबीन में नमक मिलाकर पीने से कय के ज़रिए मेअ्दे को साफ करता है। इसकी कुल्ली करने से मसूढ़ों का ख़ून बन्द हो जाता है। साबुन में मिलाकर लेप करने से बलग़मी वर्म दूर हो जाता है। चोट लगने से यदि ख़ून जम जाए तो शहद के साथ नमक मिलाकर लगाने से ख़ून फट जाएगा। बिच्छू आदि के काटे के लिए भी यह मुफीद है। इस सारी तफसील को बताने का यह मकसद है कि नबी करीम सल्ल0 का कोई काम यहां तक कि खाना भी जो आप खाते थे, हिकमत व फायदे से ख़ाली नहीं था।

ख़ून साफ़ करने का इलाज

इलाज—मुआविया बिन ज़ैद रज़ि0 से अबू नईम ने रिवायत ब्यान की है कि नबी सल्ल0 फलों में अंगूर को बहुत पसन्द फ़रमाते थे। उलमा ने लिखा है कि इसमें हिक्मत यह है कि अंगूर ख़ून को साफ करता है। बदन को मोटा करता है। गुर्दे पर चर्बी बढ़ाता है। सौदावी माद्दे को बाहर निकालता है और जले हुए के लिए मुफीद है।

मर्दाना ताक़त का इलाज

इलाज— अबु नईम ने अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि कमर का गोश्त तमाम गोश्तों में बेहतर होता है। उलमा ने लिखा है कि इसमें हिक्मत यह है कि इस गोश्त में मर्दाना ताक़त अधिक होती है और जल्द हज़म हो जाता है। सीने में ताक़त पैदा करता है और कमर के दर्द के लिए लाभदायक है।

खुम्बी से आँखों की बीमारी का इलाज

इलाज— जामेअ् कबीर में हज़रत अ़ली रज़ि0 ने रिवायत की है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: खुम्बी में आंखों की बीमारी के लिए शिफ़ा है और अबु नईम ने हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 का इर्शाद है जब हँस पड़ी जन्नत तो उसमें से खुम्बी निकली और हँसी ज़मीन तो उसमें से ख़ज़ाना निकला।

उलमा ने लिखा है कि खुम्बी की तीन किस्म हैं— एक मवेज़ी जो काली होती है उसमें ज़हर होता है। उसको कभी इस्तेमाल न करना चाहिए। दूसरी सफ़ेदी और सुर्ख़ी मिली होती है। इसका इस्तेमाल भी अच्छा नहीं है। तीसरी किस्म सफ़ेद होती है इसका पानी आँखों के लिए बड़ा मुफ़ीद है। और यदि आंखों में सफ़ेदी होती है तो इसके पानी को कई दिन लगाना चाहिए। इन्शाअल्लाह बहुत जल्द शिफ़ा होगी। इसके इस्तेमाल से नज़र तेज़ होती है।

कुछ उलमा ने लिखा है कि यदि गर्मी से आँख दुखने आ जाए तो केवल इसका पानी काफी नहीं होगा। दूसरी दवाओं के साथ मिलाकर अलबत्ता फायदा होगा। कुछ हकीमों की राय है कि सर्दी से आंख दुखने आए तो इसके पानी में सुरमा भिगो दिया जाए और चालीस दिन बाद इसे पीस कर इस्तेमाल करना चाहिए। वैलमी कहते हैं कि मैंने इसका तर्जुबा किया है इस तरह कि एक लौंडी की आंख दुखने आई थी। सारे हकीमों ने कह दिया कि हम इसका इलाज नहीं कर सकते। तब मैंने नबी करीम सल्ल0 के इर्शाद के अनुसार कई दिनों तक खुम्बी के पानी को उसकी आंख में लगाया। अल्लाह के फ़ज़्ल से उसकी आंख अच्छी हो गई। अबू नईम ने कहा है कि सारे हकीम इस बात पर सहमत हैं कि खुम्बी में शिफा है आंख के लिए। मगर इसका ख़्याल ज़रूरी है कि आंख गर्मी से दुखती है या सर्दी से।

खुम्बी की ख़ासियतें

इसे सुखाकर पीस कर खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं। सिरका में मिला कर लेप करने से टली हुई नाफ अपनी जगह पर आ जाती है अगर हमेशा खाई जाए तो औलाद होना बन्द हो जाए। यह ग़लीज़ माद्दा पैदा करती है और इसकी अधिकता सुद्दे पैदा करती है। मेअ़्दे का दर्द और क़ूलंज-जैसी बीमारी पैदा करती है।

आंखों दुखने और दर्द का इलाज

इलाज— इब्ने सुन्नी ने अपनी किताब और हाकिम ने मुस्तदरक में और साहिबे हिसने हिस्सैन ने लिखा है कि जिस आदमी की आंख दुखती है उसे यह दुआ पढ़नी चाहिए। इन्शा अल्लाह शिफा होगी।

"अल्लाहुम्म मत्तिअ्नी बि-ब-स-री वजअलहुल वारिसा मिन्नी व अ-रिनी फिल अदुव्विं सार-नी वन्सुरनी अला मन ज़-ल-म-नी"

"ऐ अल्लाह! मेरी बीनाई कायम रख और मुझको फायदा पहुंचा और इसको मेरा वारिस बना दे और दुश्मन के मुकाबिल मेरा बदला दिखा और ज़ालिम के ख़िलाफ़ मेरी मदद फरमा।"

आँखों का मैल दूर करने व रौशनी तेज़ करने का इलाज

इलाज— उलमा ने लिखा है कि जिस आदमी की आंखों में मैल होता है उसे चाहिए कि हर नमाज़ के बाद इसा आयत को तीन बार पढ़कर आंखों पर दम कर लिया करे। आयत यह है :

फ-क-शफ़्ना अन क ग़िता अ-क-फ़- ब-स-रुकल यौ म हदीदुन0

ताक़त की कमी और मर्दाना ताक़त में तेज़ी

तिर्मिज़ी आदि में उम्मे मुन्ज़िर रज़ि0 से रिवायत है कि एक बार नबी करीम सल्ल0 मेरे पास हज़रत अली रज़ि0 के साथ तश्रीफ़ लाए उस समय खजूर के गुच्छे लटके हुए थे। नबी सल्ल0 ने इन खजूरों में से खायी तो हज़रत अली भी खाने लगे। इस पर आपने फ़रमाया कि ऐ अली! तुम कमज़ोर हो इसलिए तुम यह न खाओ। उम्मे मुन्ज़िर कहती हैं। इसके बाद मैंने चुकन्दर खाए तो नबी सल्ल0 ने हज़रत अली से फ़रमाया कि इसमें से खाओ क्योंकि यह तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है।

उलमा ने लिखा है कि हज़रत अली रज़ि0 की उन दिनों आंखें दुख रही थीं। दुखती आंखों में खजूर खाना हानिकारक है इसलिए आप (सल्ल0) ने हज़रत अली को मना फ़रमाया और जब आपके सामने चुक़न्दर पेश किए गए तो आपने हज़रत अली से कहा कि तुम यह खाओ। ये तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है और यह तुम्हारी कमज़ोरी को दूर कर देंगे।

इस हदीस से पता चला कि परहेज़ करना सुन्नत है और यह भी मालूम हुआ कि चुकन्दर खाने से कमज़ोरी दूर हो जाती है इसी लिए उलमा ने लिखा है कि चुकन्दर मेअ्दे को जिला करता है। खाना हज़म करता है और गर्मी को मारता है। सुद्दों को खोलता है। बलग़म उखाड़ता है। कपकपाहट के लिए मुफ़ीद है। कमज़ोरी को दूर करके मर्दाना ताक़त में हरकत व तेज़ी पैदा करता है।

आंख दुखने का इलाज

इलाज— जामेअ् कबीर में हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से रिवायत है कि जब किसी बीबी की आंख दुखने को आती थी तो नबी सल्ल0 उससे क़ुरबत न फरमाते थे जब तक वह स्वस्थ न हो जाती थी। इस हदीस से पता चला कि आंख दुखने में क़ुरबत करना तकलीफ़ को बढ़ाता है।

निगाह तेज़ होने का इलाज

इलाज— जामेअ् कबीर में हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 के निकट तमाम रंगों में सब्ज रंग प्यारा था। एक और हदीस में है कि आपने फरमाया ''जारी पानी और सब्ज़ रंग देखने से नज़र तेज़ होती है।''

कुछ किताबों में लिखा है कि गर्मी में यदि कोई आदमी सब्ज़ रंग का चश्मा इस्तेमाल करे तो उसकी नज़र तेज़ होती है और सर्दियों में नुकसान पहुंचाती है।

आम जिस्मानी कमज़ोरी और मर्दाना ताक़त का इलाज

इलाज— कुछ रिवायतों में हज़रत आइशा रज़ि0 से मन्क़ूल है कि नबी सल्ल0 को हैस बहुत पसन्द था।

हैस तीन चीज़ों से मिल कर बनता है। १. खजूर २. मसका और जमा हुआ दही। इस ग़िज़ा से बदन ताक़तवर हो जाता है और मर्दाना ताक़त में वृद्धि हो जाती है।

सब्ज़ियों से रोगों का इलाज

इलाज— जामेअ् कबीर में अबू उमामा से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया है कि अपने दस्तरख़्वान को सब्ज़ चीज़ों से ज़ीनत दिया करो। इसलिए कि सब्ज़ चीज़ें अल्लाह के नाम की बरकत से शैतान को दूर रखती हैं।

उलमा ने लिखा है कि सब्ज़ चीज़ से लहसुन, प्याज़, मूली, बदबूदार चीज़ें मुराद नहीं हैं क्योंकि नबी सल्ल0 इन चीज़ों को नापसन्द फ़रमाते थे। बल्कि सब्ज़ चीज़ से मुराद पोदीना और साग आदि चीज़ें हैं। पोदीना से खाना हज़म होता है। डकार लाता है रियाह (गैस) को मेअ्दे से बाहर निकालता है। मेअ्दे को ताक़त बख़्शता है और ग़लीज़ (गन्दे) ख़ून को पतला करता है। पेट के कीड़ों को मारता है। मर्दाना ताक़त को बढ़ाता है और इससे पेशाब भी खुल कर आता है। यदि इन चीज़ों को औरत खाए तो अधिक दूध पैदा करता है। मसाना की पथरी के लिए मुफ़ीद है और मनी पैदा करता है। और बाह में इज़ाफ़ा व तेज़ी पैदा करता है। नहार मुंह खाना बग़ल गन्द के लिए लाभदायक है। इसका बीज अंडे की ज़र्दी के साथ खाना मर्दाना ताक़त को बढ़ाने जैसा है और इसका लेप छीप के लिए फ़ायदेमन्द है।

दूध से जिस्मानी ताकत हासिल करना

इलाज—अबू नईम ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत की है कि पीने की चीज़ों में नबी सल्ल0 के निकट दूध बहुत प्रिय था।

उलमा ने लिखा है कि इसमें यह हिकमत है कि दूध मर्दाना ताकत को बढ़ाता है। बदन की ख़ुश्की दूर करता है और जल्द हज़म होकर गिज़ा की जगह ले लेता है। मनी पैदा करता है। चेहरे का रंग सुर्ख करता है और गन्दे माद्दों को बाहर निकालता है। दिमाग़ को ताकत प्रदान करता है, तबीयत में नर्मी और दिमाग़ में तेज़ी पैदा करता है। दूध को अगर चारों मग़ज़ के साथ इस्तेमाल किया जाए तो जिस्म को मोटा-ताज़ा व ताकतवर बना देता है। मगर इस प्रकार ज़्यादा इस्तेमाल करने से आंखों में ग़ुबार और हमेशा दूध पीने से मेअ्दे में कमज़ोरी पैदा होती है और जोड़ों में दर्द की शिकायत हो जाती है।

शहद की ख़ासियतें व हर रोग से शिफ़ा

इलाज—अबू नईम ने हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 के निकट शहद बहुत प्यारा और पसन्दीदा था।

नबी सल्ल0 को शहद इसलिए अधिक प्यारा था कि अल्लाह तआला ने फरमाया है इसमें शिफा है और हुक्मा ने शहद के बेशुमार फायदे लिखे हैं। जैसे नहार मुंह इसे चाटने से बलग़म दूर

होता है। मेअ्दा साफ हो जाता है और गन्दगी को दूर करता है। सुद्दे खोलता है मेअ्दे को सन्तुलित करता है। दिमाग को ताक़त बख़्शता है और हरारत ग़रीज़ी को ताक़त देता है। ख़राब रतूबत दूर करता है। सिरके के साथ इस्तेमाल करने से सुफ़रावी मिज़ाज वालों के लिए फायदेमन्द है। मर्दाना ताक़त पैदा करता है। मसाना के लिए फ़ायदेमन्द है और मसाने की पथरी को दूर करता है और पेशाब बन्द होने को खोलता है। फालिज लक़्वा के लिए मुफ़ीद है। गैस बाहर निकालता है और भूख अधिक लगाता है और कुछ उलमा ने लिखा है कि शहद और दूध हज़ारों बूटियों का अर्क़ है। यदि सारी दुनिया के हुक्मा जमा होकर ऐसे अर्क़ तैयार करना चाहें तो कभी नहीं बना सकते। यह केवल अल्लाह तआला की ही शान है कि अपने बन्दों के लिए इतनी अच्छी-अच्छी चीज़ें पैदा की हैं।

पेट के दर्द और हाज़मे का इलाज

इलाज— अबू नईम ने किताबुत्तिब्ब में हज़रत अबु हुरैरः रज़ि० से रिवायत की है कि मैं पेट के दर्द की वजह से मस्जिद में लेटा हुआ था कि नबी सल्ल० तशरीफ़ लाए और पूछा कि क्या तुम बीमार हो? मैंने कहा—हां ऐ अल्लाह के रसूल! आपने फ़रमाया—उठकर खड़ा हो और नमाज़ पढ़। क्योंकि नमाज़ में शिफ़ा है। कुछ रिवायतों में हज़रत आइशा रज़ि० से मन्क़ूल है कि अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से खाना हज़म किया करो और खाना खाते ही न सो जाया करो। इससे तुम्हारे दिल ज़ंग आलूद

हो जाएंगे। (इस हदीस से पता चला कि ख़ुदा का ज़िक्र और नमाज़ दीन व दुनिया के लिए मुफ़ीद है।)

तिल की ख़ासियतें और रोगों का इलाज

इलाज— अबू नईम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत की है कि हज़रत साअ्द बिन मुआज़ रज़ि0 ने नबी सल्ल0 के सामने तिल और खजूर पेश की। आप सल्ल0 ने खा ली और उनके लिए दुआ फ़रमाई।

उलमा ने लिखा है कि इसमें यह हिक्मत है कि खजूर से सौदावी माद्दे पैदा होते हैं और तिल सौदा को ख़त्म करता है। खजूर सुद्दे पैदा करती है और तिल से खुल जाते हैं। इसलिए नबी सल्ल0 ने दोनों को मिलाकर खाया कि ग़िज़ा ठीक हो जाए।

तिलों की बाक़ी ख़ासियतें इस प्रकार हैं। हलक़ की ख़राश को दूर करता है। आवाज़ को साफ़ करता है। रगों को मुलायम करता है। तिलों का शीरा मिसरी के साथ खाने से मेअ्दा की जलन दूर हो जाती है।

पानी से बुख़ार का इलाज

इलाज— साहिबे सफ़रुस्सआदा लिखते हैं कि बुख़ार जहन्नम की लपट है इसलिए इसे पानी से ठंडा करो। एक और हदीस में है कि जब किसी को बुख़ार आए तो उस पर तीन दिन तक सुबह के समय पानी डाला जाए। इमाम अहमद बिन हम्बल ने अपनी

मुस्तदरक में ब्यान किया है कि जब नबी सल्ल0 को बुख़ार आता था तो आप पानी की मश्क मंगवाकर अपने पाक बदन पर छिड़कवाया करते थे।

इमाम तिर्मिज़ी ने हदीस नक़ल की है कि बुख़ार आग का एक टुकड़ा है इसलिए इसे ठंढे पानी से बुझाना चाहिए। और बेहतर तरीक़ा यह है कि नहर के पानी में बहाव के रुख़ पर सूरज निकलने से पहले बैठे और यह दुआ पढ़े :

बिस्मिल्लाहि अल्लाह हुम्ममशिफ़ा अब्द-क व सद्दिक़ रसूल-क

"शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से—ऐ ख़ुदा अपने बन्दे को शिफ़ा प्रदान कर और अपने रसूल को सच्चा कर।"

और तीन दिन तक डुबकियां उस पानी में लगाए। यदि अच्छा हो जाए तो बेहतर है वर्ना पांच या सात या नौ दिन तक यह अमल करे। नौ दिन पूरे न होंगे कि अल्लाह के हुक्म से इन्शाअल्लाह तआला शिफ़ा होगी।

कुछ उलमा ने कहा है कि यह इलाज उन लोगों के लिए ख़ास है जिन को सूरज की हरारत या किसी गर्म चीज़ के खाने से या थकान से बुख़ार आए और जो बुख़ार मेअ्दे और बलग़म की वजह से हो तो उसके लिए यह इलाज नहीं है। बिल्कुल इसी तरह जैसे शक करने वालों को क़ुरआन से फ़ायदा नहीं होता। इसी प्रकार इस इलाज से बलग़मी बुख़ार को फ़ायदा न होगा और जो आदमी इस विश्वास के साथ इलाज करे कि अल्लाह तआला शिफ़ा प्रदान करेंगे तो यक़ीनन उसे इस तरीक़-ए इलाज से फ़ायदा होगा।

दस्त बन्द करने का इलाज

इलाज— बुख़ारी व मुस्लिम ने हदीस नक़ल की है कि एक आदमी नबी सल्ल0 के पास आया और कहा कि मेरे भाई के पेट में गड़बड़ी की वजह से दस्त आ रहे हैं। आपने फ़रमाया कि जाकर उसे शहद पिलाओ। वह आदमी दोबारा आया और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल! इस इलाज से दस्त ज़्यादा आने लगे। आपने फिर इर्शाद फ़रमाया कि जाओ और शहद पिलाओ मतलब यह कि वह आदमी दो-तीन बार आया-गया। आख़िरकार आपने इर्शाद फ़रमाया कि—ख़ुदा सच्चा और तेरे भाई का पेट झूठा है। कुछ रिवायत में है कि उसने जाकर फिर शहद पिलाया तो उसका भाई ठीक हो गया।

फ़ायदा— नबी सल्ल0 ने जो यह फ़रमाया कि ख़ुदा सच्चा है और तेरे भाई का पेट झूठा है तो इसका मतलब यह है कि नबी सल्ल0 को वह्य द्वारा मालूम हो गया था कि उस व्यक्ति के भाई के पेट में कोई ख़राब माद्दा जमा हो गया था और दस्तों द्वारा उसको बाहर निकालना ज़रूरी था और शहद चूंकि दस्त आवर (दस्त लाने वाला) है इसलिए आप को विश्वास था कि इस तरीक़े से वह व्यक्ति अच्छा हो जाएगा।

यहां यह बात मालूम होनी चाहिए कि तिब्ब नब्वी व तिब्ब जालीनूस में जहां तक हो सका कोशिश भर उलमा ने समानता पैदा करने की कोशिश की है लेकिन हक़ीक़त में दोनों तरीक़ों में बहुत फ़र्क़ है। क्योंकि तिब्बे नब्वी तो अल्लाह की वह्य है और

दूसरे तिब्ब केवल इन्सान की अक़्ल व सोच व अनुभव पर आधारित हैं। इसलिए दोनों तरीक़ों में ज़मीन आसमान का अन्तर है। तिब्ब नब्वी से वही लोग लाभ उठा सकते हैं जिनका अल्लाह व उनके रसूल पर पक्का यक़ीन व ईमान होगा।

कुछ नास्तिक लोग यह आपत्ति उठाते हैं कि शहद तो दस्त लाता है वह भला दस्तों को किस प्रकार रोक सकता है। उन लोगों से यह कहना कि दस्त कभी तो बदहज़मी के कारण आते हैं और कभी मेअ्दे में फासिद मादा जमा होने से भी दस्त आने लगते हैं तो ऐसी सूरत में दस्त बन्द करना नुकसानदेह हो सकता है। ऐसे में तो फासिद माद्दा निकालने के लिए दस्त लाने ही की कोशिश करनी चाहिए। इसीलिए नबी सल्ल0 ने उस व्यक्ति को बार-बार अपने भाई को शहद देते रहने का हुक्म दिया।

अख़रोट व पनीर की ख़ासियतें

इलाज— तन्जियशा शरीआ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि पनीर भी बीमारी है और अख़रोट भी लेकिन जब ये दोनों पेट में उतर जाते हैं तो शिफ़ा हो जाती है।

इस हदीस में यद्यपि कुछ उलमा को आपत्ति है मगर यह इर्शाद तिब्ब के ही मुताबिक है इसलिए कि पनीर दूसरे दर्जे में सर्द तर है। अख़रोट दूसरे दर्जे में गर्म व ख़ुश्क है। दोनों को

मिला कर खाने से दोनों का सन्तुलित स्वभाव बन जाता है और दोनों चीज़ें एक-दूसरे को सुधारने का कारण बन जाती हैं।

सोंठ की ख़ासियतें और रोगों का इलाज

इलाज— अबू नईम ने अबू सईद से रिवायत की है कि रोम के बादशाह ने नबी करीम की सेवा में सोंठ का मुरब्बा एक बर्तन में तोहफा भेजा। आपने थोड़ा-थोड़ा उसमें से खिलाया।

इस हदीस से पता चला कि बदन की सेहत व ताकत के लिए माजूनों का इस्तेमाल करना शरीअ़त में मना नहीं है। सोंठ का मुरब्बा भूख लगाता है खाना हज़्म करता है। क़य को रोकता है गैस को निकालता है। हाफ़िज़े की ताकत को बढ़ाता है और बदन में जो गन्दा माद्दा जमा हो जाता है उसको निकाल बाहर करता है।

अधिक समय तक स्वस्थ रहना

इलाज— अबुल्लैस ने अपनी बुस्तान में लिखा है कि हज़रत अली रज़ि0 ने फरमाया कि जो आदमी इस बात का इच्छुक हो कि उसका स्वास्थ्य व सेहत अधिक समय तक ठीक-ठाक बना रहे तो उसे चाहिए कि सुबह व रात को खाना खाया करे। कर्ज़ हो तो उसे अदा कर दे और नंगे पांव न चला करे और औरत से सम्बन्ध कम रखे।

इस्तिस्क़ा का इलाज

इलाज— सही बुख़ारी में है कि इस बीमारी में नबी करीम सल्ल0 ने कुछ लोगों को ऊंट का पेशाब व ऊंट का दूध मिलाकर पिलवाया था जिससे उनकी बीमारी ठीक हो गई थी। यह घटना किताब के बढ़ जाने के कारण यहां नहीं लिखी जा रही है जिसका दिल करे वह बुख़ारी शरीफ़ में देख सकता है।

शैख़ुर्रईस ने क़ानून में लिखा है कि ऊंट के दूध को उसके पेशाब के साथ मिलाकर पिलाना इस रोग में बहुत अधिक फ़ायदा करता है। यह बात भी जान लेनी चाहिए कि इस्तिस्क़ा के रोग की तीन क़िस्में हैं।

एक बर्क़ी, दूसरी लह्मी और तीसरी तबली।

बर्क़ी उसको कहते हैं कि पेट पानी की मश्क़ की तरह बोला करे और लह्मी वह है कि सारे बदन पर वर्म आ जाए। और तबली वह कहलाती है कि जिस रोगी का पेट तबले की तरह बोला करे।

ऊंट के दूध व पेशाब से लह्मी इस्तिस्क़ा का इलाज होता है। इस नाचीज़ ने किताबों में देखा है कि जिन लोगों को नबी करीम सल्ल0 ने यह इस्तेमाल कराया था उनको इस्तिस्क़ा लह्मी था।

घावों का ख़ून बन्द करना

इलाज— सफ़रुस्सआदत में लिखा है कि जंगे उहुद में नबी

करीम सल्ल0 घोड़े से गिर गए थे और कवच सर मुबारक पर था उसकी कड़ियाँ आपके मुबारक गालों में गड़ गई थीं जिनको एक सहाबी ने अपने दांतों से पकड़ कर निकाला था जिससे उनके भी कई दाँत शहीद हो गए थे। इस घटना की वजह से नबी करीम सल्ल0 का ख़ून बन्द न होता था। हज़रत फातिमा रज़ि0 धोती जाती थीं और हज़रत अली रज़ि0 पानी डाल रहे थे। आख़िरकार हज़रत फातिमा रज़ि0 ने नबी करीम सल्ल0 के आदेश के अनुसार एक बोरिए का टुकड़ा जलाकर उस घाव में भर दिया जिससे उसी समय ख़ून बन्द हो गया।

सर दर्द व ख़ून की ख़राबी का इलाज

इलाज— बुख़ारी व मुस्लिम में इस विषय की एक हदीस है कि नबी करीम सल्ल0 ने पछने लगवाए अपने दोनों मोंढो पर और गुद्दी में। कुछ रिवायतों के अनुसार आपने सर में पछने लगवाए क्योंकि आपके सर में दर्द था और कुछ रिवायतों में आधा सीसी के दर्द का भी ज़िक्र आया है। एक रिवायत में यह भी है कि पछने लगवाना दवाओं से बेहतर है।

नबी करीम सल्ल0 ने यह भी फरमाया कि मैं मेअ्राज की रात में एक फरिश्ते पर गुज़रा तो उसने कहा कि ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत को पछने लगवाने का हुक्म दो।''

शैख़ अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी ने लिखा है कि मक़सद उस जगह से ख़ून निकलवाना है चाहे फस्द के ज़रिए या पछने लगवाकर।

समस्त हकीम इस बात को मानते हैं कि फस्द से पछने लगवाना गर्म शहरों में अधिक बेहतर है।

इससे यह पता लगा कि दम्वी रोगी में ख़ून निकलवाना बेहतर है। यह आधा सीसी के दर्द व अन्य बीमारियों के लिए बेहतर है। हकीम जालीनूस का कथन है कि चालीस साल की उम्र तक जिस आदमी को ख़ून निकालवाने की आदत न हो तो उसके बाद ख़ून निकलवाने की आदत न डाली जाए।

"शरअतुल इस्लाम" में है कि ख़ून निकलवाना सुन्नत है और हर बीमारी के लिए मुफीद है। नहार मुंह ख़ून निकलवाने में शिफ़ा है और पेट भरे पर हानिकारक है। बुस्तान में है कि अधिक गर्मी व अधिक सर्दी में भी ख़ून नहीं निकलवाना चाहिए। ख़ून निकलवाने के लिए सबसे अच्छा रबीअ़ का मौसम है लेकिन यदि ज़रूरत पड़ जाती है तो किसी भी मौसम में निकलवाया जा सकता है।

तारीख़ के हिसाब से १७, १९ और इक्कीस और दिनों के हिसाब से पीर, मंगल व जुमरात बेहतर है। यदि कोई आदमी बुद्ध व सनीचर के दिन ख़ून ले और उसे कोई रोग हो जाए तो अधिक चिन्ता न करे। किताबों में लिखा है कि इन दिनों ख़ून जोश में होता है इसीलिए नबी करीम सल्ल0 ने इन दिनों अपनी उम्मत को ख़ून निकलवाने से मना किया है। यदि तारीख़ व दिन हदीस के हिसाब से बराबर हो जाएं तो साल भर की बीमारियों के लिए मुफीद है।

शरअतुल इस्लाम में है कि पछने सर में लगवाना इस सात बीमारियों में शिफा है १. जुनून, २. कोढ़, ३. सफेद दाग़, ४.

ऊंध, ५. दांतों का दर्द, ६. आंखों का गुबार और ७. सर का दर्द।

उलमा ने लिखा है कि सर का दर्द कभी गर्मी और कभी सर्दी से और कभी बुख़ार से, कभी मुबाशरत से, कभी बहुत अधिक बोलने से होता है। इस सब कारणों में ख़ून निकलवाना मुफ़ीद है। अबू दाऊद की रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० ने चोट के कारण सुरीन मुबारक पर पछने लगवाए।

इस हदीस से मालूम हुआ कि ज़रूरत पड़ने पर सतर खोलना जायज़ है, क्योंकि सुरीन सतर में दाख़िल है। हकीमों का विचार है कि कनपटी ही पर पछने लगवाना नीचे दी गई बीमारियों में मुफ़ीद है। सर की बीमारी, कानों की बीमारी, नाक और मुंह की बीमारियां, दांतों की बीमारी और आंखों की बीमारी।

ख़ून निकलवाने के बाद तीन दिन तक मुबाशरत करने, ग़ुस्ल करने, पढ़ने-लिखने, सवारी पर चढ़ने व अधिक भाग-दौड़ का काम करने से बचना चाहिए। हदीस शरीफ़ में है कि जो आदमी सनीचर व बुद्ध को पछने लगवाए और उसको सफ़ेद दाग़ हो जाए तो अधिक चिन्ता न करे क्योंकि वह उसके अपने बेढंगेपन के कारण हुआ।

जो रगें फ़स्द के योग्य हैं अर्थात् जिन रगों में फस्द लगाया जा सकता है। वे छः हैं :

१. कीफाल— यूनानी भाषा में किनारे को कहते हैं और यह रग चूंकि हाथ के किनारे पर होती है इसलिए इसे कीफाल कहा जाता है।

२. अकहल– बाज़ू के बीच ऊंची जगह पर होती है। अकहल यूनानी भाषा में मिली हुई चीज़ को कहते हैं क्योंकि यह रग कीफाल और बा सलीका से मिली हुई होती है इसलिए यह इसका नाम है।

३. बासलीक्– यह रग जिगर से मिली हुई होती है इसकी फ़स्द आज़ाए रईसा के लिए मुफीद है। बासलीका यूनानी भाषा में बादशाह को कहते हैं।

४. अबती– यह रग बग़ल के नीचे से आती है।

५. जल अज़राअ– यह कीफाल के ऊपर होती है।

६. असीलम– यह खन्सर और बन्सर के बीच में होती है।

पांव की रगें तीन हैं :

१. माबज़– यह ज़ानू के नीचे होती है

२. अर्कुन्निसा

३. साफन

जो लोग इन रगों की जांच करना चाहते हैं वे तिब्ब व हिक्मत की किताबों में देख सकते हैं यहां पर चूंकि तिब्बे नब्वी का ब्यान हो रहा है इसलिए यह सब बातें विस्तार से नहीं बतायी जा रही हैं।

अर्कुन्निसा के दर्द का इलाज

इलाज– साहिब सफरुस्सआदत ने हज़रत अनस बिन

मालिक रज़ि0 से नक़ल की है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि अर्क़ुन्निसा का इलाज अरबी बकरी से करना चाहिए। इसका तरीक़ा यह है कि अरबी बकरी को पकाया जाए और उसके कई हिस्से किए जाएं फिर एक हिस्सा हर दिन नहार मुंह खाया जाए।

बकरी के सुरीन का गोश्त लेकर उसकी यख़्नी बनाई जाए और तीन दिन नहार मुंह उसे पिया जाए। इन्शाअल्लाह तआला दर्द को फ़ायदा होगा। अर्क़ुन्निसा एक रग का नाम है जो सुरीन से कअ्ब तक लम्बी होती है। इसका दर्द इतना सख़्त होता है कि आदमी तकलीफ़ के कारण सब कुछ भूल जाता है इसलिए इस को अर्क़ुन्निसा कहा जाता है।

क़ब्ज़ का इलाज और सना के फ़ायदे

इलाज— सफ़रुस्सआदत में लिखा है कि नबी सल्ल0 ने अस्मा बिन्त उमैस रज़ि0 से पूछा कि तुम को जब दस्तों की ज़रूरत होती है तो क्या चीज़ इस्तेमाल करती हो? उन्होंने जवाब दिया कि शबरम इस्तेमाल करती हूँ। आपने फ़रमाया वह तो बहुत गर्म है। अस्मा ने कहा कि सना भी इस्तेमाल करती हूँ। इस पर नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि यदि मौत की कोई दवा होती तो वह सना ही होती है।

सरज़मीन हिजाज़ में एक घास होती है। शबरम उसी का नाम है। यह घास चौथे दर्जे में गर्म होती है। ऐसी दवाओं का इस्तेमाल दस्तों के लिए मुफ़ीद है। हदीस शरीफ़ में है ऐ लोगो! सना और

सोंठ को अपनाओ क्योंकि ये दोनों दवाएं हर बीमारी से शिफा है सिवाए मौत के। सोंठ के बारे में आठ कथन हैं लेकिन यह सही है कि शहद को कहते हैं क्योंकि सना और शहद दस्तों के लिए बड़ी ही लाभकारी हैं।

शहद की ख़ासियतें हम इससे पहले बता चुके हैं। सना के फवाइद इस प्रकार हैं– सना सबसे अच्छी किस्म की मक्का मुअज़्ज़मा में पैदा होती है। यह दस्त लाने वाली है। बलग़म और सौदावी बीमारियों के लिए बड़ी मुफीद है और जले हुए अंग के लिए भी मुफीद है। दिमाग़ और जिल्द (खाल) की सफाई करती है। सौदावी रोगों के लिए भी लाभकारी है। दिमाग़ व त्वचा को ठीक-ठाक रखती है। जुनून, मिर्गी, आधे सर का दर्द और पूरे सर के दर्द को दूर करती है और दिल को ताक़त प्रदान करती है।

आम रोगों का कलौंजी से इलाज

इलाज—सही मुस्लिम में हज़रत अबु हुरैर: रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया—कलौंजी सिवाए मौत के हर रोग की दवा है।

जालीनूस का कथन है कि कलौंजी गैस को बाहर करने व पेट को हल्का रखने में लाभकारी है। इसके खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। जोश देकर इसे तीसरे पहर लगाने से ज़ुकाम ठीक हो जाता है। यदि खुश्की के कारण बदन पर पपड़ियां-सी उतरती हैं

तो इसे खाने से यह शिकायत दूर हो जाती है। यदि बदन पर तिल हो जाएं तो इसके लगाने से त्वचा साफ हो जाती है। मासिक धर्म बन्द हो तो कलौंजी के इस्तेमाल से वह खुल जाता है। लेप करने से सर का दर्द दूर हो जाता है।

कलौंजी फोड़े-फुन्सी को फोड़ कर फ़ायदा करती है। सिरके में मिला कर खाने से बलग़मी वर्म दूर हो जाता है। रैग़न (तेल) एरसा में मिला कर सूंघने से आंखों का दर्द जाता रहता है। इसका खाना सांस फूलने के लिए बड़ा मुफ़ीद है। इसकी कुल्लियां करने से दांतों का दर्द जाता रहता है। इसके खाने से पेशाब जारी हो जाता है। घर में धुनी देने से मच्छर, खटमल ग़ायब हो जाते हैं।

कलौंजी की ख़ासियतें

कुछ उलमा ने लिखा है कि कलौंजी सौदावी और बलग़मी बुख़ार को दूर करती है। कद्दू दाने ख़त्म करती है और यदि इसकी पोटली बना कर ज़ुकाम वाले के गले में डाल दें तो ज़ुकाम जाता रहता है और चौथिया बुख़ार के लिए शिफ़ा बख़्श है। यदि किसी औरत का दूध ख़ुश्क हो तो इसके खाने से दूध जारी हो जाता है। मेअ्दे की रतूबत को ख़ुश्क करती है और माद्दों को पका देती है और हमल को गिरा देती है।

रियाही दर्द के लिए मुफ़ीद है। इस्तिस्क़ा व तिहाल के लिए भी फ़ायदा बख़्श है। ज़ैतून के तेल के साथ इसको हमेशा इस्तेमाल करने से रंग को सुर्ख़ कर देती है और सिरके के साथ खाने से

पेट के कीड़े मर जाते हैं। सिकिन्जिबीन के साथ खाने से गुर्दे की पथरी निकल जाती है। यदि इसे जलाकर खाया जाए तो बवासीर के लिए मुफीद है और यदि सख़्त क़िस्म का वरम हो जाए तो दूध पीते बच्चे के पेशाब में मिलाकर कलौंजी का लेप करने से वरम कम हो जाता है।

सिरके में मिलाकर यदि सफ़ेद दाग़ पर लगाए तो दाग़ अच्छा हो जाता है यदि फ़ोतों (अंड कोश) में सूजन आ जाए तो सिरके में मिलाकर लेप करने से वरम व सूजन को फायदा हो जाता है। इन्दिरायन के पानी में मिलाकर नाफ़ पर लेप करने से कद्दू दानों को फायदा हो जाता है। वे मर जाते हैं सर के सफ़ेद बाल यदि झड़ने लगें तो मेहंदी के पानी में मिलाकर लगाया जाए तो सौदावी घाव के लिए लाभकारी है। यदि ज़ैतून के तेल में मिलाकर कज़ीब पर लगाया जाए तो मर्दाना ताक़त को बढ़ाता है।

हज़रत क़तादा रज़ि0 फरमाते हैं कि यदि कलौंजी के इक्कीस दाने लेकर और कपड़े में बांधकर पानी में जोश देकर पहले दिन दाएं नथने में दो बूंद टपकाए और बाएं में एक बूंद, इसी तरह तीन दिन तक जो आदमी अमल करेगा तो दिमाग़ के रोगों से बचा रहेगा। इसीलिए नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया है कि सिवाए मौत के कलौंजी हर रोग का इलाज है।

छोटे रोगों से बड़े रोगों का इलाज

इलाज— साहिबे जामेअ् कबीर ने एक हदीस नकल की है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया—चार चीज़ों के लिए चार चीज़ों को

बुरा नहीं समझना चाहिए।

१. आंख का दुखना, अंधे होने से बचाए रखता है।

२. ज़ुकाम का होना सफ़ेद दाग़ के रोग से नजात दिलाता है।

३. खांसी का होना फालिज से हिफाजत करता है।

४. फोड़े-फुन्सी हो जाने से सफेद दाग़ से हिफाज़त होती है।

मतलब इस हदीस का यह है कि यदि कभी-कभी ये चार बीमारियां हो जाया करें तो इनको बुरा नहीं समझना चाहिए। क्योंकि इनके होने से ख़तरनाक और बड़ी बीमारियों से नजात रहती है।

शारीरिक रोग और लहसुन के ख़्वास

इलाज— इमाम जलालुद्दीन स्युती ने जमामिउल जवामेअ् में वैलमी से एक रिवायत नक्ल की है। वैलमी ने हज़रत अली रज़ि० से हदीस नकल की है कि नबी सल्ल० ने फरमाया, ऐ लोगो! लहसुन खाया करो और इससे इलाज किया करो क्योंकि इसमें बीमारियों से शिफा है।

इस हदीस की सेहत में यद्यपि उलमा सहमत नहीं है लेकिन हकीमों के निकट लहसुन के बहुत से फायदे हैं। पेशाब जारी करता है। सुद्दों को खोल देता है। मेअ्दे की गंध को दूर कर देता है मेअ्दे को जिला करता है मेअदे की रतूबत को खुश्क करता है। खून को पतला करता है। मेअ्दे से गैस को निकालता है। आवाज़

साफ करता है। ग़लीज़ व बन्द आज़ा को ठीक करता है। दर्दे क़ूलंज रियाही के लिए मुफीद है। तिहाल के लिए मुफीद है। भूलने की बीमारी को ख़त्म करता है। कमर के रियाही दर्द को दूर करता है। मर्तूब (ठंढे) स्वभाव वालों को मर्दाना ताकत बढ़ाता है। मनी को ज़्यादा करता है। गर्म स्वभाव वाले की मनी (वीर्य) को ख़ुश्क करता है, मेअ्दे के दर्द व पेट दर्द को फ़ायदा पहुंचाता है। पेट के कीड़ों को मार डालता है।

बलग़म के कारण प्यास हो तो उसको बुझा देता है। चेहरे पर सुन्दरता पैदा करके निखार लाता है। सांस की बीमारी व फालिज और कपकपाहट को फायदा पहुंचाता है। गुर्दे की पथरी को दूर कर देता है। इसे यदि जोश देकर कुल्ली की जाए तो दांत मजबूत होते हैं। इसका अधिक इस्तेमाल ख़ून को साफ करता है। बवासीर के लिए यह ख़तरनाक है। हामला औरत के लिए नुक़सानदेह है। सुफरा पैदा करता है। निगाह को कमज़ोर करता है। दूध में मिलाकर इसको लेप करने से फोड़ा फूट जाता है। नौशादर के साथ मिलाकर सफेद दाग़ पर लगाने से सफेद दाग़ जाता रहता है। खुसियों (अंडकोषों) पर यदि वरम हो तो इसका लेप मुफीद है। इस सब फायदों के बावजूद इस का अधिक इस्तेमाल अच्छा नहीं है। क्योंकि फरिश्तों को इसके गंध से नफरत है और नबी करीम सल्ल0 का इर्शाद है कि इसको कच्चा चबाकर या खाकर मस्जिद में न जाया करो।

धूप का गर्म पानी सफ़ेद दाग़ पैदा करता है

इलाज— इमाम जलालुद्दीन स्युती रह0 ने लिखा है कि हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया है कि धूप के गर्म पानी से गुस्ल नहीं करना चाहिए क्योंकि यह सफेद दाग़ पैदा करता है।

ख़ारिश का इलाज

इलाज— बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत की है कि अनस रज़ि0 फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम के जिस्म में ख़ारिश पैदा हो गयी जिसके कारण दोनों लोग सख़्त परेशान थे। इस हालत में नबी करीम सल्ल0 ने इन दोनों को रेशमी कपड़ा पहनने की इजाज़त दे दी। मुस्लिम की कुछ रिवायतों में है कि किसी जंग के अवसर पर नबी करीम सल्ल0 की सेवा में जुएं पड़ जाने की शिकायत की गयी। आपने उनको मजबूरी की हालत में रेशमी कुर्ता पहनने की इजाज़त दे दी।

इस हदीस से दो बातों का पता चला— एक तो यह कि रेशमी कपड़ा मर्दों के लिए हराम है क्योंकि यदि हराम न होता तो ख़ास इजाज़त के लिए क्या ज़रूरत थी। दूसरी बात यह मालूम हुई कि रेशम ख़ारिश के लिए मुफीद है क्योंकि रेशम से दिल को ताकत और राहत हासिल होती है और सौदावी रोगों को दूर करता है

और साहिबे मोजिज़ में लिखा है कि अबरेशम की तासीर गर्म है और मुफर्रः होता है और रेशमी कपड़ा जूं को दूर करता है।

ज़ातुलजुनुब का इलाज

इलाज— तिर्मिज़ी ने हज़रत ज़ैद बिन अरक़ से रिवायत की है कि नबी सल्ल० का इर्शाद है ऐ लोगो! जातुलजुनुब (पहलू व पस्ली का दर्द) का इलाज क़स्ते बहरी और ज़ीत से किया करो।

मालूम होना चाहिए कि क़स्ते बहरी की दो क़िस्में हैं। एक क़िस्म शीरीं है और यह सफेद होता है। दूसरा तल्ख़ (कड़वा) और इसका रंग काला है और ज़ातुल जुनुब की भी दो क़िस्में हैं एक तो यह कि सीने में वरम होता है। यह वरम पहले बाहर के अंगों में होता है फिर अन्दर से बाहर आ जाता है। यह किस्म ख़तरनाक होती है और इसकी अलामत यह है कि इससे बुख़ार, खांसी और ज़ीक़ुन्नफ़्स पैदा हो जाता है और दर्दे नाख़स बहुत होता है। ज़ेहन पूरी तरह नाकारा हो जाता है और प्यास की तेज़ी बढ़ जाती है।

ज़ातुलजुनुब की दूसरी क़िस्म यह है कि गैस (रीह) के बन्द हो जाने के कारण से पहलू में एक प्रकार का दर्द होता है। क़स्ते बहरी इसी दर्द का इलाज है। इसके इस्तेमाल का तरीक़ा यह है कि क़स्ते बहरी को पीस कर ज़ैतून के तेल में मिला लें और दर्द की जगह पर मलें और इसमें से कई बार थोड़ा-थोड़ा चाट लें तो इन्शाअल्लाह इस दर्द में कमी हो जाएगी।

यदिज़ातुल जुनुब की पहली किस्म हो जिसकी अलामत ऊपर बताई गई है और जो बलग़म के कारण पैदा होती है तो उसके लिए यह इलाज मुफ़ीद है लेकिन यदि वरम सुफरावी या दमवी हो तो उसके लिए यह इलाज मुफ़ीद न होगा।

एक हदीस में जिसका खुलासा यह है कि नबी करीम सल्ल0 एक बार बीमार हो गए। घर के लोगों ने समझा कि आपको ज़ातुल जुनुब की बीमारी है इसलिए कस्ते बहरी व ज़ैतून का तेल आपके मुंह में डालने लगे। नबी सल्ल0 ने इशारों से मना किया लेकिन किसी ने आप की बात न समझी, फिर आपको जब आराम हो गया तो आपने मालूम किया 'यह क्या था?' लोगों ने जवाब दिया कि कस्ते बहरी व ज़ैतनू था। नबी सल्ल0 ने फरमाया कि आप लोग मेरे रोग को ज़ातुलजुनुब समझे। यद्यपि अल्लाह तआला मुझे इस रोग से महफूज़ रखेगा। और फरमाया कि जिस ने मेरे मुंह में यह दवा डाली है उसके मुंह में भी यही दवा डाली जाएगी।

इस हदीस से पता चला कि जिस आदमी को तिब्ब व हिकमत से पूरी जानकारी न हो तो वह कभी भी इलाज न करे क्योंकि यदि किसी को नुकसान हो गया तो उस पर ज़मानत लाज़िम आएगी और साहिबे सफरुस्सआदत ने अम्र बिन आस से मरफ़ूअन रिवायत की है कि जो आदमी नादानी से इलाज करे और इलाज के बारे में कुछ न जाने तो वह ज़ामिन है।

उलमा लिखते हैं कि यदि कोई ग़ैर तबीब (जो हकीम न हो) नादानी से इलाज करे और रोगी मर जाए तो उस पर ज़मानत लाज़िम है और यदि किसी के इलाज के लिए दो हकीम जमा हो

जाते थे तो आप का इर्शाद होता था कि दोनों में से जो माहिर और हाज़िक हो वह इलाज करे और यदि नादानी से इलाज के कारण कोई हलाक होगा तो उस पर ज़मानत लाज़िम आएगी। यह सारी बातें जो लिखी गई हैं। यह उस हदीस के आधार पर है जो हज़रत इमाम मालिक रज़ि० ने अपनी किताब मोअत्ता में भी बयान की है जो आदमी चाहे मोअत्ता में देख सकता है।

सर के दर्द का इलाज व मेंहदी के ख़्वास

इलाज — इब्ने माजा में है कि नबी करीम सल्ल० के सर में जब दर्द होता था तो आप सर पर मेंहदी का लेप किया करते थे और फरमाते थे कि बेशक अल्लाह तआ़ला के हुक्म से फ़ायदा करेगी।

यह इलाज उस दर्द का है जो मादी न हो और यदि मादी हो तो ख़ून की वजह से इसका इलाज पछने लगवाना है।

अबु दाऊद में है कि जिस आदमी ने भी नबी सल्ल० से सर दर्द की शिकायत की तो उसे आपने पछने लगवाने का हुक्म दिया और जिसने पेट दर्द की शिकायत की उसे आपने मेहंदी का लेप करने के लिए कहा।

जामेअ् तिर्मिज़ी में उम्मे राफ़ेअ् से रिवायत है कि नबी सल्ल० के जब कभी फुन्सी या फोड़ा हो जाता था या कांटा लग जाता तो आप उस पर मेहंदी लगाया करते थे।

हकीमों ने लिखा है कि मेहंदी सुद्दों को और बन्द रगों को खोल देती है इसीलिए नबी सल्ल0 ने पेट के दर्द में इसका लेप किया है। मेंहदी की ख़ासियत यह है कि गन्दी रतूबत को ख़ुश्क करती है और यदि सात मिस्काल शक्कर के साथ इसे खाया जाए तो कोढ़ के शुरूआती हमले में बड़ी मुफ़ीद है।

कुछ हकीमों ने तो यहां तक लिखा है कि यदि एक महीने तक इसी प्रकार मेहंदी सात मिस्काल शक्कर के साथ खाए और कोढ़ का हमला होने पर बीमारी न जाए तो इसका मतलब यह है कि रोग लाइलाज हो गया है। यदि किसी आदमी के नाख़ून गिर गए हों तो मेंहंदी का पानी निथार कर दस मिस्काल दस दिन तक पिया जाए। इन्शाअल्लाह असली नाख़ून पैदा हो जाएंगे। इसका लेप पेशाब के बन्द को खोलता है और यदि आधा मिस्काल पीस कर पिया जाए तो क़ूलंज को ठीक करता है। संगे मसाना व गुर्दा के लिए भी मुफीद है और यदि आबलों (छालों) पर लगाया जाए तो छाले फट जाते हैं और यदि मुंह में घाव हो जाए तो इसकी कुल्लियां करना बड़ा मुफ़ीद है। और ज़ानू के दर्द के लिए इसका लेप भी मुजर्रब है।

बच्चों के हलक़ की बीमारी

इलाज— गदरह दूध पीते बच्चों की ख़ास बीमारी है जो अक्सर हलक में होती है और इस बीमरी का असल कारण यह है कि दाया जब बच्चे के हलक में उंगली डालकर ज़ोर से दबाती है तो इस कारण यह बीमारी हो जाती है।

इसकी अलामत यह है कि बच्चे के मुंह व नाक से ख़ून बहुत ज़्यादा आने लगता है। इसीलिए नबी सल्ल0 ने औरतों को मना फ़रमाया है कि बच्चे के हलक़ को बहुत ज़्यादा ज़ोर से न दबाया करें और आपने इस बीमारी का इलाज इस प्रकार बताया है।

अतएव हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल ने अपनी किताब मुस्तदरक में लिखा है कि एक बार नबी सल्ल0 हज़रत आइशा रज़ि0 के घर में दाख़िल हुए। उस समय हज़रत आइशा के पास एक लड़का था जिस के नथनों से ख़ून निकल रहा था लोगों ने बताया कि इसे ग़दरा हो गया है और उसके सर में दर्द है आपने फ़रमाया अफ़सोस है औरतों पर तुम लोग अपनी औलाद को इस प्रकार हलाक न किया करो अर्थात् बच्चे के हलक़ को इतने ज़ोर से न दबाया करो कि बच्चे इस हालत को पहुंच जाएं। और इर्शाद फ़रमाया कि जिस बच्चे को यह रोग हो जाए उसके मां-बाप को चाहिए कि क़स्ते बहरी थोड़ा-सा लेकर उसे पानी में घोल ले और बच्चे की नाक में डाले। हज़रत आइशा रज़ि0 ने यह इलाज उस लड़के की मां को बताया तो उसका इलाज किया गया और वह ठीक हो गया।

क़स्ते बहरी के ख़्वास

हकीमों का कहना है कि क़स्ते बहरी पेशाब और हैज़ (मासिक धर्म) के बन्द को खोलता है और जिस्म के ख़राब माद्दों को बाहर निकाल देता है। जिगर के सुद्दों को खोलता है। सीना व गर्भ के वर्म के लिए लाभकारी है। मेअ्दे को ताक़त देता है। गन्दी रतूबत

को निकालता है मेअ्दे के कीड़ों को मारता है। दिमाग़ और पेट दर्द को दूर करता है। रियाह (गैस) को निकालता है।

यदि किसी को चौथिया बुख़ार की शिकायत हो तो सिकिन्जिबीन के साथ चाटने से वह जाता रहता है। यदि शहद के साथ मिलाकर चाटे तो सांस फूलने और पुरानी खांसी की बीमारी को दूर कर देता है। बढ़ी हुई तिल्ली के लिए मुफीद है और कपकपाने की शिकायत को भी दूर कर देता है। इसकी धूनी महामारी व ज़ुकाम के लिए भी मुफीद है। छीप के धब्बों के लिए इसका लेप बड़े काम का है। ज़ैतून के तेल में मिलाकर इसे कान दर्द के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यदि इसको पीसकर सूंघा जाए तो सर दर्द जाता रहता है।

यदि कोई आदमी यह शिकायत करे कि ग़दरा व कुस्ते बहरी दोनों गर्म हैं फिर यह ग़दरा की बीमारी में किस प्रकार मुफीद है तो इसका जवाब यह है कि ग़दरा खून व बलग़म से मिलकर पैदा होता है बल्कि इसमें बलग़म ज़्यादा और ख़ून कम होता है और कुस्ते बहरी की गर्मी बलग़म की रतूबत को सोख लेती है इसलिए यह दवा ग़दरा में मुफीद है। कुछ उलमा ने यह जवाब भी दिया है कि यह भी नबी करीम सल्ल0 का एक चमत्कार है और इसमें बहस तकरार करना नादानी व अक़ीदे के ख़िलाफ है।

दिल का दर्द और उसका इलाज

इलाज — हज़रत सअ्द रज़ि0 से अबू दाऊद ने रिवायत

की है कि एक बार मैं बीमार हुआ तो नबी सल्ल0 मेरा हाल पूछने के लिए आए और अपना मुबारक हाथ मेरे सीने पर रखा जिसकी ठंढक मैंने अपने दिल में महसूस की। आपने फरमाया कि तुम्हारे दिल में दर्द है। तुमको चाहिए कि हारिस बिन कलद: के पास जाओ क्योंकि वह लोगों का इलाज करता है। और हारिस को चाहिए कि मदीने की सात खजूरें ले और उनको गुठलियां सहित कूट कर तुझे खिलाए।

उलमा ने लिखा है कि मदीना शरीफ की खजूरों में अल्लाह तआ़ला ने यह ख़ासियत रखी है कि वे दिल के दर्द के लिए मुफीद होती है। और सात का अदद जो आपने फरमाया उसकी ख़ासियत के बारे में अल्लाह के सिवा व उसके रसूल के सिवा किसी को कुछ पता नहीं है। इस सवाल के जवाब में सभी हकीम व उलमा मजबूर हैं क्योंकि इस का ताल्लुक वह्य से है। कुछ हदीसों में है कि जो आदमी मदीने की सात खजूरें सुबह को खाया करे उसे ज़हर व जादू कभी असर नहीं करे।

यह मसला भी ऐसा है कि सारे हुक्मा व बुद्धिजीवी यह मालूम नहीं कर सकते कि जादू और ज़हर के असर को दूर करने में खजूर की क्या भूमिका है लेकिन इस जगह पक्का यकीन करने की ज़रूरत है। अल्लाह व उसके रसूल पर जितना अधिक विश्वास व अकीदा होगा उसे वैसा ही लाभ होगा। इसीलिए हम ऊपर बता आए हैं कि जिस आदमी को तिब्बे नब्वी का इलाज कराना मन्ज़ूर हो उसे चाहिए कि सबसे पहले वह अपने ईमान व विश्वास को पक्का कर ले। ईमान व विश्वास को पक्का करने का मतलब यह

है कि नबी सल्ल0 के बताए इलाज करने में उसे न तो किसी प्राकर की शंका हो, न डर व ख़ौफ। यहां तक कि यदि उसको हकीम भी मना करें तब भी यह जाने कि दुनियावी इलाज तो केवल अन्दाजे पर ही आधारित है और नबी करीम सल्ल0 का तरीक़ा-ए-इलाज पूरी तरह यक़ीनी है। भला अन्दाज़ा व यक़ीन भी कभी बराबर हो सकते हैं। जिस आदमी को इस दर्जे में तिब्बे नब्वी में इत्मीनान व यक़ीन न हो तो उसे चाहिए कि वह इस इलाज ही को न करे बल्कि हकीमों व डॉक्टरों से ही अपना इलाज कराए कि इस तरह उसके ईमान के चले जाने का तो कोई ख़तरा नहीं है।

इलाज करना व परहेज़ करना सुन्नत है

एक यह बात भी जान लेनी ज़रूरी है कि जहां इलाज करना सुन्नत है वही परहेज़ करना भी मसनून है। कोई यह न समझे कि परहेज़ करना शरअ् के ख़िलाफ है। क्योंकि परहेज़ करना क़ुरआन पाक से साहिब है जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि यदि तुम बीमार हो तो तयम्मुम कर ले। नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत सुहैब रूमी से फरमाया था कि तुम खजूरें न खाया करो क्योंकि तुम्हारी आंखें दुख रही हैं। इसी किताब में हम पहले बता चुके हैं कि नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 को कमज़ोरी की हालत में खजूरें खाने से मना फ़रमाया था जिसको हम विस्तार से बता चके हैं। इन सब बातों से पता चला कि परहेज़ करना भी बड़ा ज़रूरी है।

दीनदार और अच्छा हकीम जो भी परहेज़ बताए उसका अवश्य ही परहेज़ करना चाहिए। लेकिन यदि कोई हकीम अकारण किसी को हराम चीज़ खिलाना चाहे तो उसकी बात कभी नहीं माननी चाहिए क्योंकि दीनदार हकीम ऐसा नहीं कर सकता। सेहत के लिए हर हाल में अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

ख़दर और बेहिसी का इलाज

इलाज— ख़दर उस बीमारी को कहते हैं कि आदमी के बदन में किसी कारण हरकत व किसी तरह सर्दी व गर्मी का एहसास ही बाक़ी न रहे। सफरुस्सआदत में लिखा है कि कुछ लोग अनजाने में एक पेड़ के निकट गए और कुछ पत्ते उस पेड़ को तोड़ कर खा गए जिसके कारण उसी समय वे सब लोग शिल्ल हो गए। उनके हाथ-पांव ढीले पड़ गए। नबी सल्ल0 ने फरमाया कि एक मशक में पानी ठंढा करके फज्र की अज़ान और तकबीर के बीच उन लोगों पर छिड़क दो।

यह इलाज तिब्ब यूनानी के भी अनुसार लगता है। इसलिए कि जब किसी आदमी को बेहोशी आदि होती है तो ठंढा पानी उसके मुंह पर छिड़कते हैं और वह पानी पड़ते ही होश में आ जाता है।

बुसरा और फ़ोड़े का इलाज

इलाज— बुसरा हिन्दी भाषा में फोड़े को कहा जाता है और इसका इलाज सफरुस्सआदत में यह लिखा है कि उम्मुहातुल

मोमिनीन (नबी सल्ल० की पाक पत्नियां) में से किसी से कहा कि एक बार मेरी उंगली पर फोड़ा निकला हुआ था। नबी करीम सल्ल० मेरे मकान पर तश्रीफ लाए और मालूम किया कि तुम्हारे पास थोड़ी-सी काला ज़ीरा है? मैंने कहा हां है। फ़रमाया कि फोड़े पर उसको लगा दो।

कसबुज्ज़ीरा के मैदे (चूर्ण) को ज़ीरा कहा जाता है। कसबुज्ज़ीरा जब पुराना हो जाता है तो उसके अन्दर से धुन की एक चीज़ निकलती है उसी को ज़ीरा कहते हैं। जालीनूस ने लिखा है कि ज़ीरा को पानी में पीसकर यदि फोड़े पर लगाया जाए तो वह अच्छा हो जाता है।

रोगी का हाल मालूम करना

इलाज— रोगी के सामने अच्छी बातें करना चाहिए ताकि रोगी का दिल खुश हो क्योंकि इससे रोग में कमी हो जाती है। सफरुस्सआदत में अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि जब तुम किसी रोगी का हाल पूछने के लिए जाओ तो रोगी के सामने उसकी लम्बी आयु के बारे में बातें करो यद्यपि ऐसा कहना भाग्य के लिखे को मिटा नहीं देता लेकिन रोगी का दिल खुश हो जाएगा।

कहने का मतलब यह है कि किसी रोगी का हाल-चाल पूछने के लिए जाओ तो उसके दिल को खुश करने वाली बातें की जाएं। जैसे उससे कहा जाए कि तुम चिन्ता न करो ईश्वर ने चाहा तो

बहुत जल्द ठीक हो जाओगे। तुम्हारी तो अभी बहुत उम्र है। ऐसा कहने से भाग्य तो नहीं बदलेगा लेकिन इसका फायदा यह होगा कि रोगी का दिल अवश्य ख़ुश हो जाएगा। लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि झूठे क़िस्से व कहानियां न ब्यान करे। इससे स्वयं भी गुनाहगार होगा और रोगी को भी गुनाहगार करेगा। यह समय तो ऐसा होता है कि हर समय तौबा व इस्तिग़फार करता रहे और अल्लाह ही से उम्मीद लगाए रहे। अलबत्ता यदि कोई व्यक्ति मज़ाक़ व उपहास के तौर पर कोई ऐसी बात कह दे जिसमें अश्लीलता न हो और रोगी का दिल भी बहल जाए तो इसमें कोई हरज नहीं। बेकार में अश्लील बातें करके किसी का दिल बहलाना अच्छा नहीं है बल्कि ऐसा करना गुनाह है। बहुत से लोग रईसों व मालदारों को इस प्रकार की बातें सुनाकर उनसे इनाम की उम्मीद रखते हैं। यह अच्छा काम नहीं, गुनाह का काम है।

ग़ुस्सा दूर करने का इलाज

इलाज— मालूम होना चाहिए ग़ुस्सा भी रोगों की निशानियों में से एक निशानी है। इससे स्वयं अपने आपको भी नुक़सान हो जाता है और दूसरे को भी ग़ुस्सा पैदा होता है। सुफरा के जोश से कभी-कभी उसकी ज़्यादती से रूह और हरारत ग़रीजी बाहर आ जाती है और इसकी वजह से बुख़ार, सर दर्द, ख़फ्क़ान, ग़शी और इनके अलावा तरह-तरह के रोग पैदा हो जाते हैं और कभी-कभी यहां तक भी नौबत पहुंच जाती है कि कुफ्रिया बातें ज़बान से निकलने लगती हैं। ऐसे आदमी की इज़्ज़त और मान-सम्मान

लोगों की नज़रों में कम हो जाता है और ऐसे आदमी के बहुत से दुश्मन हो जाते हैं और दोस्त कम। गुस्सा, जलन, नफ़रत, हसद जैसे रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसे आदमी को यदि ताक़त हासिल हो तो वह दूसरों को नुकसान पहुंचा देता है। गालियां देने लगता है अपने कपड़े फाड़ डालता है। और कभी यह भी होता है कि वह आत्महत्या करने की कोशिश करता है।

इसलिए नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ लोगो! गुस्सा वह चिंगारी है जो आदमियों के दिलों में सुलगाई जाती है और गुस्से की आग होने की दलील यह है कि गुस्से की हालत में आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं। गर्दन की रगें फूल जाती हैं। रंग बदलने लगता है और पूरा जिस्म जोश में आ जाता है।

इस हदीस से मालूम हुआ कि गुस्सा एक आग है जो दिल में पैदा होती है लेकिन फिर बदन पर ज़ाहिर होती है इसलिए इन्सान को चाहिए कि जहां तक हो सके इस आग से अपने आपको बचाए और यदि गुस्सा आ ही जाए तो हदीस में इसके तीन इलाज बयान हुए हैं।

एक इलाज तो यह है कि ठंढा पानी पी ले और ठंडे पानी से वुज़ू कर ले। यह इलाज तिब्बे यूनानी के भी मुताबिक है। अतएव हकीम अली शीराज़ी कानून की व्याख्या में लिखते हैं कि गुस्से की हालत में रूह और हरारते ग़रीजी इन्सान की हरकत में पैदा होती है। ऐसे समय में ठंढा पानी पीने से या बदन पर डालने से पूरी तरह फायदा होता है।

दूसरा इलाज यह है कि गुस्सा के समय आदमी यदि खड़ा है तो बैठ जाए और बैठा है तो लेट जाए

कुछ उलमा ने लिखा है कि लेट जाने से नबी करीम सल्ल0 की मुराद यह है कि आदमी विनम्रता करने लगे और अपने नफ़्स को समझाए कि तू मिट्टी से पैदा हुआ है फिर आग से क्यों खेलता है। ज़मीन को देख उस पर पेशाब पाख़ाना करते हैं और गन्दगी डालते हैं और ज़मीन हर चीज़ को सहन करती है। तुझे भी चाहिए कि तू जिस चीज़ से बना है (अर्थात मिट्टी से) उसी की हिर्स कर तुझे आग से क्या काम। क्योंकि यह आग ही थी जिसने शैतान को काफ़िर और दर बदर की ठोकरें खाने वाला बना दिया।

नबी करीम सल्ल0 ने तीसरा इलाज यह बताया है कि ग़ुस्सा के समय अल्लाह को याद करे और अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ो। क्योंकि ग़ुस्सा करना शैतान की सुन्नत है और हज़रत *आदम* अलैहि0 पर सबसे पहले उसी ने ग़ुस्सा किया था जिसके कारण वह अपने इस हाल को पहुंचा। इस घटना से इबरत हासिल करके ग़ुस्सा को दूर करे। और यह जो फ़रमाया गया है कि ख़ुदा को याद करे। इसका मतलब यह है कि अपने नफ़्स को समझाए कि तू दिन भर ख़ुदा की नाफ़रमानी और गुनाह करता रहता है और ख़ुदा तआला हर प्रकार की क़ुदरत के बावजूद माफ़ करते रहते हैं और तू जो बिल्कुल ही मजबूर व मोहताज मख़लूक है। तुझे भी चाहिए कि हर समय माफ़ी मांगता रहा करे ताकि कियामत के दिन तेरे गुनाह माफ़ हों।

रंज व दुख का इलाज

इलाज— सफ़रुस्साआदत में लिखा है कि जब कोई मर जाता था तो आप तबनियह पकवाया करते थे और उसे सरीद के साथ डाल कर फ़रमाया करते थे कि लोगो! इसे खाओ क्योंकि इसमें शिफ़ा है और हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने नबी करीम सल्ल० से सुना है कि आप फ़रमाते थे कि तबनियह दिल की बीमारी के लिए राहत है और दुख व परेशानी को ख़त्म कर देता है।

कुछ हदीसों में है कि जब नबी करीम सल्ल० से कोई आदमी यह कहता है कि फलां आदमी बीमारी के कारण खाना नहीं खाता तो आप उससे फ़रमाते कि उस रोगी को तबनियह पिलाओ। क़सम है उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है तबनियह पेट को ऐसे धो देता है जैसे कोई अपने मुंह के मैल-कुचैल को धो डालता है।

मालूम होना चाहिए कि तबनियह एक तरल पदार्थ है जिसे पिया जाता है और इसके बनाने की तरकीब यह है कि जौ का बिना छना आटा लेकर उसे दूध में पकाते हैं फिर उसमें शहद मिला देते हैं। इसके बाद ठंढा करके पिया जाता है और कभी-कभी सरीद में मिलाकर भी खाया जाता है।

सरीद का मशहूर तरीक़ा यह है कि शोरबे में रोटी डाल कर पकायी जाती है। यह दिमाग़ व दिल की ताक़त के लिए मुफ़ीद है। यह मेदे व पेट की ख़राब रतूबत ख़त्म करके पेट को साफ़ करती

है और रंज व ग़म के लिए भी मुफ़ीद है। एक बात याद रखनी चाहिए। कि तबनियह तिब्बे नब्वी में वही हैसियत रखती है जो तिब्बे यूनानी में आशे जौ। जालीनूस का कथन है कि जौ के बराबर कोई भी ग़िज़ा नहीं पैदा हुई क्योंकि यह ग़िज़ा बीमार, सेहतमन्द दोनों के काम आती है। इसलिए रोगियों को आशे जौ पिलाया जाता है। आशे गन्दुम नहीं देते क्योंकि आशे जौ प्यास को मारता है। खून के जोश को कम करता है। और सुफरा को दूर करता है मेअ्दे की जिला करता है और इसके सत्तू को शक्कर के साथ मिलाकर खाएं तो वह एक बेहतरीन ग़िज़ा का काम देती है। कुछ उलमा ने लिखा है कि जौ के बेहतर होने की यही एक दलील काफी है कि यह समस्त नबियों की ग़िज़ा है। जालीनूस व बुकरात चाहे कुछ भी कहें।

ज़हर के नुक़सानात

इलाज— सफरुस्सआदत में है कि एक यहूदी औरत ने गोश्त में ज़हर मिलाकर नबी करीम सल्ल० को पेश किया। आपने उसमें से थोड़ा-सा खाया ही था कि अल्लाह ने गोश्त को बोलने की ताकत प्रदान फरमा दी। उसने कहा कि आप मुझे न खाएं क्योंकि मुझ में ज़हर मिला हुआ है। नबी करीम सलल० ने उस औरत से मालूम किया कि "तूने इस गोश्त में ज़हर क्यों मिलाया था? तो उसने कहा कि मैंने आपको आज़माने के लिए ज़हर दिया था क्योंकि तुम नबी हो इसलिए तुमको ज़हर से कुछ नुक़सान न होगा। मेजिज़ा के तौर पर उस समय तो आपको वास्तव में कोई

तकलीफ नहीं हुई लेकिन अन्दरूनी तौर पर वह ज़हर असर कर गया था। अतएव इस घटना के बाद तीन साल तक आप ज़िन्दा रहे। इस दौरान में उस ज़हर का असर कभी-कभी मालूम हो जाता था तो आप गर्दन व मोंढों पर पछने लगवाया करते थे।

विसाल (देहान्त) के समय आपने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने जो ज़हर खाया था उसने मेरे सीने की रगों को तोड़ डाला। मतलब यह कि उस हालत में आपका विसाल हुआ। इसीलिए उलमा कहते हैं कि नबी करीम सल्ल0 को शहादत नसीब हुई और अल्लाह तआला ने इस महान पद व सम्मान से आपको महरूम नहीं रखा।

नबी करीम सल्ल0 पर जिस समय यहूदियों ने जादू किया था उस समय भी आपने अपने सरे अक्दस पर पछने लगवाए थे। जादू आदि का ब्यान बेमौका है इसलिए इसका ब्यान तिब्बे इलाही में किया जाएगा। इसी हदीस से मालूम हुआ कि ख़ून निकलवाना जादू के लिए भी मुफीद है। इस अवसर पर नास्तिक कि जिन को दीन से दूर का भी वास्ता नहीं है यह आपत्ति करते हैं कि जादू में और खून निकलवाने में कोई मुनासिबत नहीं है और यह कि अपना और दूसरों का इलाज आप (सल्ल0) केवल अन्दाज़े से किया करते और तिब्ब में आपको कुछ भी जानकारी न थी।

इस आपत्ति का जवाब यह है कि अरस्तू और जालीनूस यदि यही इलाज बताते तो ये लोग कभी भी इस प्रकार पर आपत्ति न करते बल्कि यह दलील देते कि वे तो अक़्ल के पुतले थे। उनको निश्चय ही किसी मुसतनद ज़रिए से मालूम हुआ होगा। इसलिए हमें अक़्ल के घोड़े दौड़ाने की क्या ज़रूरत है? हमारा भी यह

जवाब है कि नबी करीम सल्ल0 के इलाज के तरीक़ों का ताल्लुक 'वह्य' से है और अल्लाह की 'वह्य' से अधिक मुसतनद ज़रिया और क्या हो सकता है। इसलिए हम इस मामले में अक़्ल के दख़ल को उचित नहीं समझते। दूसरा जवाब यह है कि जादू का असर शरीर व आत्मा पर होता है और इन्सान की आत्मा ख़ून से पैदा होती है। इसलिए तबीबे रूहानी नबी करीम सल्ल0 ने उस ख़ून को जो रूहे हैवानी का माद्दा था निकलवाने का आदेश दिया क्योंकि ख़ून के निकलवाने से रूहे इन्सानी कमज़ोर होती है अतएव नबी करीम सल्ल0 ने यह इलाज बताया। दूसरा इलाज कि जिससे जादू का इलाज बिल्कुल ख़त्म हो गया। इसका ज़िक्र इन्शाअल्लाह दवाओं के साथ किया जाएगा।

क़य (उल्टी) द्वारा रोगों का इलाज

इलाज— मिश्कात शरीफ और अबू दाऊद में रिवायत है कि एक बार नबी करीम सल्ल0 ने क़य (उल्टी) फ़रमायी और उसके बाद वुज़ू किया।

इस हदीस से पता चला कि आप कभी-कभी क़य के ज़रिए भी इलाज किया करते थे। इसीलिए हकीमों ने लिखा है कि क़य करने से दिमाग़ पाक होता है मेअ़्दे की सफ़ाई हो जाती है और मेअ़्दे की रतूबत खुश्क हो जाती है।

बुकरात का कहना है कि इन्सान को चाहिए महीने में दो बार क़य किया करे ताकि एक बार क़य करने में यदि कुछ रह जाए तो

दूसरी बार निकल जाए। लेकिन ज़्यादा कय करने से सीना और मेअ्दे में दर्द पैदा हो जाता है। जालीनूस ने लिखा है कि कय ख़ासियत के एतबार से मेअदा को कमज़ोर करने वाली है लेकिन जो कय आप से आप आ जाए उसे भी रोकना नहीं चाहिए। कय को रोकने से कभी-कभी सख़्त रोग हो जाते हैं। खुसिया (फोता) बड़ा हो जाता है। शैख़ुर्रईस हकीम बू अली सीना कहते हैं कि मेअ्दे के अन्दर से यदि जोश पैदा हो और सारा खाना निकल जाए तो उसी को कय कहते हैं यदि दिल (तबीयत) मालिश करे और कुछ न निकले तो इसे ग़ीसान कहते है। इससे पता चला कि इमाम अबू हनीफा के निकट मुंह भर के कय करने से वुज़ू जाता रहता है। क्योंकि कय असल में वही है जो मुंह भर कर हो और अन्दर जो कुछ हो वह जोश के साथ बाहर निकल आए।

मूली की बू (गंध) का इलाज

इलाज— साहिबे सफरुस्सआदत ने तन्ज़ियतुश्शरीअत से इब्ने मसऊद रज़ि० की रिवायत नक़ल की है कि नबी करीम सल्ल० ने फरमाया कि जो आदमी मूली खाए और यह चाहे कि उसके मुंह से गंध न आए तो उसे चाहिए कि मुझको याद करे। कुछ रिवायतों में है कि मुझ पर दुरूद भेजे।

कुछ उलमा ने लिखा है कि यह हदीस मुन्कतअ् है और यह इब्ने मसऊद रज़ि० का कथन है और इस में कुछ रिवायत करने वाले मजहूल हैं। कुछ उलमा ने कहा है कि इसका तजुर्बा हमने किया है कि इस अमल से मूली की गंध जाती रहती है।

बहरहाल मूली के फ़ायदे इस प्रकार हैं— आवाज़ साफ़ करती है। भूख लगाती है। खाने के बाद चाटने से गैस को फ़ायदा देती है। चेहरे के रंग को साफ़ करती है और इसके हमेशा खाते रहने से गिरे हुए बाल निकल आते हैं। मूली का अर्क़ सुद्दों को खोलता है।

हड़ें और उसके फ़ायदे

इलाज— जामेअ कबीर में लिखा है कि हड़ें में हर बीमारी से शिफ़ा है और हैड़ के फ़ायदे इस प्रकार हैं :

मेअ्दे को जिला करती है और रियाह को निकालती है पेशाब बन्द हो जाए तो उसे खोलती है। सुद्दों को खोल देती है। बलग़म का इख़राज करती है और बवासीर के लिए फ़ायदेमन्द है। मर्दाना ताक़त को बढ़ाती है।

क्रिफ़्स और नरगिस के फ़ायदे

जामेअ् कबीर में लिखा है कि क्रिफ्स खाया करो यह अक़्ल को बढ़ाता है और नरगिस को अल्लाह तआला के नाम के साथ सूंघा करो चाहे दिन में एक बार या महीने में एक बार या साल में ही एक बार क्यों न हो। क्रिफ्स के फ़ायदे इस प्रकार हैं :

पेट में क़ब्ज़ करता है भूख बढ़ाता है। दिल को ताक़त बख़्शाता है। बलग़म की ख़राबी को दूर करता है। मनी को ज़्यादा करता

है। पेट के कीड़ों को मारता है। इसके खाने से दिल मतला रहा हो तो वह ठीक हो जाता है लेकिन पेट में जलन पैदा कर देता है और ज़ेहन को तेज़ करता है।

नरगिस के फ़ायदे इस प्रकार हैं

यह मेदे को सुखाती है। पेट के कीड़ों को मारती है और रियाह को निकाल बाहर करती है। यदि इसकी जड़ को पानी में पकाकर पिया जाए तो कय लाती है। गर्भ (रहम) को पाक करती है। हमल को गिराती है मेअ्दे को फासिद मवाद से पाक करती है और घावों को भर देती है। यदि पीस कर और इसमें शहद मिलकर पेट के दर्द वाले को लेप करे तो ठीक हो जाता है। यही दवा जोड़ों के दर्द में भी मालिश करने से फायदा करती है। घाव के ख़ून को बन्द करती है। सर्दियों के मौसम में इसका सूंघना नज़ला के लिए मुफीद है।

दही के ख़्वास और फ़ायदे

इलाज— दही के बहुत से फायदे हैं जैसे दिल की अंधियारी को दूर करती है। पेशाब की ज़्यादती हो तो उसके लिए भी मुफीद है। मेअ्दे और दिल व दिमाग़ के लिए ताकत बख़्शती है। रूहे हैवानी के लिए बड़ी फायदेमन्द है। इसका खाना काहिली व सुस्ती को दूर करता है। दस्तों को बन्द करता है। इसका सूंघना रूह को ताकत बख़्शता है। हमल को गिरने से रोकता है। जिगर की

कमज़ोरी के लिए बड़ी ही मुफीद है। नज़ला को बन्द करती है।

लौबिया के ख़्वास व फ़ायदे

इलाज— मर्दाना ताकत को हरकत में लाता है और मनी पैदा करता है। औरत के दूध में इज़ाफा करता है। बन्द पेशाब को और हैज़ को जारी करता है। इसके खाने से गन्दा व फासिद माद्दा पैदा होता है। इसको साफ करने के लिए ज़न्जबील का इस्तेमाल करना चाहिए। हमल के ज़माने मे प्रायः लौबिया खाने से औलाद अक़लमंद पैदा होती है।

ख़रबूज़े के ख़्वास और फ़ायदे

इलाज— ख़रबूजे के अन्य फायदों के अलावा एक फायदा यह है कि हमल के ज़माने में यदि औरत इसका अधिक इस्तेमाल करे तो लड़का सुन्दर और स्वस्थ होगा।

भूल पैदा करने वाली चीज़ें

इलाज— निम्न नौ चीज़ों से भूल जाने की बीमारी पैदा होती है :

१. पनीर खाने से २. चूहे का झूठा खाने से ३. खट्टा सेब खाने से ४. हरा धनिया अधिक खाने से ५. गर्दन पर अधिकांश पछने लगवाने से ६. दो औरतों के बीच चलने से ७. अपने मतलूब की

और देखने से ८ खटमल और जूं को ज़िन्दा छोड़ देने से ८ कुरआन शरीफ़ की तिलावत हमेशा कब्रिस्तान में करने से।

लाभ— पेट के कीड़ों को मारने के लिए नहार मुंह खजूर खाना मुफ़ीद है। जिस आदमी का कुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने का इरादा हो तो उसे चाहिए कि शहद को अधिकता के साथ इस्तेमाल करे। ये तमाम रिवायतें जामेअ् कबीर से ली गई हैं।

मुश्क के ख़्वास व फ़ायदे

हदीस— साहिबे जामेअ् सग़ीर ने सलमाबिन अकूअ से रिवायत की है कि नबी करीम सल्ल० सर और बाल मुबारक पर मुश्क लगाया करते थे।

लाभ— उलमा ने लिखा है कि इसमें यह हिक्मत है कि मुश्क रंग को गोरा करता है। दिल व दिमाग़ और मर्दाना ताक़त के लिए फ़ायदेमन्द है। वहशत, ग़म व घबराहट को दूर करता है। सुद्दों को खोलता है और गैस को बाहर निकालता है। इसके सूंघने से नज़ला सदाअ बारद नहीं होने पाता। इसका लेप मर्दाना ताक़त को हरकत में लाता है। यदि किसी की आंख में गुबार या सफ़ेदी हो तो इसका लगाना बड़ा ही मुफ़ीद है। इसका सूंघना बेहोशी के लिए लाभकारी है। फालिज लक़वा और बदन सुन्न हो जाए तो इसका लगाना मुफ़ीद है। बेहोशी व भूलने की बीमारी में फ़ायदेमन्द है और अबू दाऊद की रिवायत है कि नबी सल्ल० के पास एक सिंघ था आप उसमें से खुश्बू लिया करते थे।

लाभ– मालूम होना चाहिए कि सिंघ इस प्रकार तैयार होती है कि खुश्बूदार कुछ चीज़ें लेकर उनको अच्छी तरह पानी में घोल लिया जाए। फिर थोड़ा-सा खुश्बू वाला तेल और उसमें दो दिरम से कुछ ज़्यादा मुश्क मिला कर चार घंटे तक खरल करें। फिर जब वह खुश्क हो जाए तो उसकी टिकियां बना ली जाएं। ये टिकियां जब खुश्क हो जाएं तो इनमें सुराख करके एक हार बना लें और जब खुश्बू को जी चाहे तो इसको सूंघा करें।

कुछ उलमा ने लिखा है कि कुरबत के समय (मुबाशरत के समय) यदि इस हार को गले में पहन लिया जए तो मर्दाना ताक़त का ग़लबा बढ़ जाता है।

यहां पर यह बात समझ ली जाए कि नबी सल्ल0 को खुश्बू की ज़रूरत न थी। क्योंकि आपकी व्यक्तिगत खुश्बू इतनी अधिक थी कि दूसरी खुश्बू उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती थी। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 ने कहा है कि नबी सल्ल0 के पसीने में वह खुश्बू थी जो मैंने किसी मुश्क व अम्बर में नहीं देखी और यह कि आप जब किसी गली या रास्ते से गुजरते थे तो सारे रास्ते में खुश्बू फैल जाती थी और इस खुश्बू से लोग समझ जाया करते थे कि आप इस रास्ते से गुज़रे हैं।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 आप का पसीना लेकर इत्र में मिलाया करती थी जिससे उनका इतर सारे इतरों से बेहतर हो जाता था। उतबा बिन वाहिद के बदन पर कोई बीमारी हो गई थी आपने उसके शरीर पर अपना पाक हाथ फेरा तो उसका बदन सुगंधित हो गया। उस आदमी की चार पत्नियां थी और वे हर

दिन इत्र लगाया करती थी। लेकिन उतबा के बदन की ख़ुश्बू सबसे उत्तम रहती थी। यह पूरी घटना तबरानी ने मोजिम सग़ीर में लिखी है।

सुरमा लगाने का सही तरीक़ा

इलाज— अबू दाऊद में रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने रात को सोते समय ख़ुश्बूदार सुरमा लगाने का हुक्म दिया है।

कुछ उलमा ने लिखा है कि ख़ुश्बूदार से यहां मुश्क मिला हुआ सुरमा मुराद है। और इब्ने माजा में रिवायत है कि असमद सुरमा सब सुरमों से बेहतर सुरमा है क्योंकि यह निगाह को रौशन करता है और पलकों को घना करता है। तिर्मिज़ी में है कि सुरमा इस्फ़िहानी को असमद कहते हैं। कुछ हदीसों में है कि सुरमा जब लगाया जाए तो ताक़ अदद लगाया जाए।

उलमा ने सुरमा लगाने के तीन तरीक़े लिखे हैं। एक यह कि दो सलाइयां दायीं आंख में और दो सलाइयां बायीं आंख में लगाए। दूसरे यह कि तीन सलाइयां दायीं आंख में और दो सलाइयां बायीं आंख में लगाए और तीसरा तरीक़ा यह है कि तीन-तीन सलाइयां दोनों आंखों में लगाए।

ख़ुश्बू के फ़ायदे और ख़्वास

इलाज— सफ़रुस्सआदत में है कि नबी करीम सल्ल0 की सेवा में जब कोई आदमी ख़ुश्बू पेश करता तो आप उसको रद न

फ़रमाते थे और आपका इर्शाद है कि यह कोई आदमी आप को खुश्बू दे तो रद्द न करो।

उलमा ने लिखा है कि खुश्बू के इस्तेमाल और मकानों को साफ़-सुथरा रखने से सेहत अच्छी रहती है और खुशी हासिल होती है। दिल की ताकत के लिए भी यह मुफीद है।

मुसनद बज़ाज़ में रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया है कि अल्लाह पाक है और पाकी व सफाई रखने वाले को दोस्त रखता है। इसलिए हर आदमी को चाहिए कि अपने रहने की जगह और मकान को साफ-सुथरा रखें। यहूदियों की तरह न हो जाएं जो अपने सेहनों में कूड़ा व गन्दगी जमा रखते थे।

बुक़रात ने लिखा है कि बदबू से इन्सान बीमार हो जाता है इसलिए इन्सान को चाहिए कि गन्दगी व बदबू से अपने आपको पूरी तरह महफ़ूज़ रखे और अपने आपको सीमा से आगे बढ़ने न दें क्योंकि बेढंगेपन से हर काम बिगड़ जाता है। इन्सान को न तो बिगड़े हुए लोगों की तरह हर समय बनाव-सिंगार में ही लगा रहना चाहिए और न जाहिल व काहिल फकीरों की तरह बिना नहाए हफ्तों गुज़ारने वाला ही बनना चाहिए।

यही कारण है कि दवा का असर भी उसी समय होता जब तक दवा ग़िज़ा (भोजन) न बन जाए। इन्सान को चाहिए कि अपने घर में शेर की खाल का फ़र्श न बिछाएं क्योंकि इससे स्वभाव में वहशत व दरिंदगी पैदा होती है।

रात को कपड़े से झाड़ू देने का नुक़सान

सलात मसऊदी में लिखा है कि रात के समय झाड़ू देने से मोहताजी आती है। बुसतान में अबुल्लैस ने लिखा है कि यदि कोई आदमी कपड़े से झाड़ू देगा तो वह मोहताज हो जाएगा।

बहुत से खानों को जमा करने का नुक़सान

इलाज— सफ़रुस्सआदत में है कि नबी सल्ल० दो अलग-अलग खानों को कभी एक जगह जमा न फ़रमाते थे। खट्टी चीज़ें व दूध एक जगह जमा न फ़रमाते थे। दो गर्म और ठंडी चीज़ों को भी एक साथ इस्तेमाल न फ़रमाते थे। इसी प्रकार दो कब्ज़ करने वाली व दस्त लाने वाली चीज़ों को भी एक जगह जमा न फ़रमाते थे। अर्थात् कभी ऐसा इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ कि आपने मछली खायी हो और बिना हज़्म हुए उसके ऊपर दूध पी लिया हो। दूध और अंडा और दूध और गोश्त भी कभी एक साथ न खाते थे। कहने का मतलब यह है कि जब तक एक चीज़ हज़्म न हो जाए उसके ऊपर दूसरी ग़िज़ा नहीं खाते थे। इसी प्रकार कब्ज़ करने वाली व दस्त लाने वाली, जल्द हज़्म न होने वाली और पका व भुना गोश्त, ताज़ा व बासी गोश्त भी एक साथ इस्तेमाल न फ़रमाते थे क्योंकि दो अलग-अलग चीज़ें हज़्म करने से मेअ्दे पर बहुत बुरा असर व बोझ पड़ता है।

खाने के बाद वरज़िश करना

इलाज — मालूम होना चाहिए कि जिस्मानी सेहत के लिए वरज़िश करना मुफ़ीद है। अतएव नबी करीम सल्ल0 का इर्शाद है कि खाने को ज़िक्र (अल्लाह का) और नमाज़ के द्वारा हज़म करो और खाने के फौरन बाद सोना नहीं चाहिए क्योंकि इससे दिल सख़्त हो जाता है।

मवाहिब में लिखा है कि जो आदमी सेहतमन्द और चुस्त व फुर्तीला बनना चाहे उसे चाहिए कि रात को खाना खाने के बाद एक सौ पचास क़दम चला करे। शैख़ुर्रईस और दूसरे हकीमों ने लिखा है कि ज़्यादा हरकत से हरारते ग़रीजी कम होती है और कमज़ोरी पैदा हो जाती है। कुछ हकीमों का ख़्याल है कि ज़्यादा हरकत से हवास (होश) गड़बड़ा जाते हैं लेकिन इसका यह मतलब भी नहीं है कि बिल्कुल हरकत ही न करे। इससे काहिली व सुस्ती पैदा होती है। क़ानूने शैख़ की शरह (व्याख्या) में लिखा है कि हरकत और सुकून दोनों स्वभाव के ऐतबार से है। सर्द मिज़ाज में हरकत रतूबत और हरारत को तहलील करती है और सुकून रतूबत व गन्दा मादे को पैदा करता है। इसलिए बीच की राह पर ही क़ायम रहना चाहिए। इससे हरारत ग़रीज़ी बढ़ती है खाना हज़म होता है, हवास तेज़ हाते हैं, वासना पैदा करता है और अंगों को ताक़त बख़्शता है इसीलिए जिस्मानी सेहत के लिए सफ़र करना भी एक इलाज है। अतएव किताबुत्तिब्ब में अबू नईम ने हज़रत अबु हुरैरः रज़ि0 से रिवायत नक़ल की है कि नबी सल्ल0

ने फ़रमाया कि सफ़र करो। इसके ज़रिए सेहत व तन्दुरुस्ती और रोज़ी हासिल होगी।

इस हदीस के उलमा ने अलग-अलग माने लिखे हैं। लेकिन यहां पर संक्षेप में इस तरह समझ लेना चाहिए कि सफ़र का हुक्म इसलिए दिया गया है कि सफ़र से जलवायु बदल जाती है और यह मनोरंजन का एक अच्छा ज़रिया है। बहुत बार ऐसा होता है कि केवल जलवायु की तब्दीली ही से रोगी ठीक हो जाते हैं और इस हदीस में रिज़्क़ देने का जो ज़िक्र है उसका भी तजुर्बा है कि तिजारत व नौकरी के लिए कभी-कभी सफ़र करना पड़ता है और इसमें सफलता भी मिलती है।

मिस्वाक के ख़्वास व फ़ायदे

इलाज— मोजिम औसत में तबरानी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से मरफ़ूअन रिवायत नक़ल की है कि मिस्वाक से मुंह पाक और साफ़ हो जाता है। अल्लाह तआला ख़ुश रहता है चेहरा और निगाह रौशन होते हैं और जामेअ् कबीर में है कि मिस्वाक से फ़साहत बढ़ती है। दांत साफ़ रहते हैं। बलग़म से हलक़ साफ़ हो जाता है। रतूबत को दूर करती है। अन्तिम समय जान निकलने में आसानी पैदा करती है और मौत के समय कलिमा शहादत पढ़ना नसीब होता है। दांतों के मैल और दर्द को दूर रखती है मेअ्दे को मज़बूत, अक़्ल को तेज़ करती है। दिल को पाक करती है और चेहरे को नूरानी बनाती है। क़ल्ब व दिमाग़ को ताक़त देती है और आम बीमारियों से नजात देती है।

नींद के फ़ायदे और नुक़सान

इलाज— मालूम होना चाहिए कि शारीरिक इलाजों में एक प्रभावी इलाज नींद (सोना) भी है। अतएव अल्लाह ने कुरआन पाक में फरमाया है कि अल्लाह ऐसा है कि तुम्हारे लिए रात को मुकर्रर किया ताकि तुम आराम करो और तमाम दिन की थकान जाती रहे और सेहत बनी रहे और अल्लाह तआला की तुम इबादत में लगे रहो।

जालीनूस ने कहा है कि जिस किसी को खाना हज़म करना हो और पेट का माद्दा तहलील करना हो तो उसे चाहिए कि वह नींद हासिल करे लेकिन सोने में भी सन्तुलन रखना ज़रूरी है। क्योंकि अधिक सोने से आदमी कमज़ोर और सुस्त हो जाता है और कियामत के दिन ऐसा आदमी ग़रीबों के साथ उठाया जाएगा। अतएव हज़रत सुलैमान अलै० की मां ने हज़रत सुलैमान को नसीहत की कि ऐ लड़के! ज़्यादा न सोया कर। क्योंकि ज़्यादा सोना कियामत में ग़रीब होकर उठने का सबब होगा।

उलमा ने लिखा है कि चार समय नहीं सोना चाहिए।

१. सुबह को २. चाश्त के समय ३. ज़ुह्र के बाद ४. मग़रिब की नमाज़ के बाद।

शैख़ुर्रईस ने लिखा है कि सुबह का सोना शरीर को कमज़ोर और दिल व दिमाग़ को बोझल करता है। मगर ठीक दोपहर के समय खाना खाने के बाद सोना जिसे कीलूला कहते हैं, मसनून है। इसके बहुत-से फायदे हैं: जैसे दिमाग़ मज़बूत होता है अक़्ल

तेज़ होती है।

आम तौर पर सोने के चार तरीके हैं।

एक चित्त लेट कर, दूसरे दायीं करवट पर, तीसरे बायीं करवट पर और चौथे ओंधे लेट कर। मालूम होना चाहिए कि चित्त लेट कर सोना और दायीं करवट लेटना अम्बिया किराम अलै0 का और औलिया का तरीका है। बायीं करवट लेटना अह्ले ग़िना और दुनियादारों का काम है क्योंकि बायीं करवट पर खाना अच्छी तरह हज़म होता है और ओंधा लेटकर सोना शैतान का काम है जो आदमी पेट भर खाना खाए उसे चाहिए कि पहले थोड़ी देर दायीं करवट पर लेटे, इसके बाद बायीं करवट बदल ले। इस प्रकार सोने से खाना बेहतर तौर पर हज़म होता है।

शैख़ुर्रईस का कथन है कि दिन के समय बहुत देर तक नहीं सोना चाहिए क्योंकि दिन का ज़्यादा सोना सोए हुए रोगों को जगाता है और तिल्ली को सख़्त करता है और रंग ख़राब हो जाता है। लेकिन कीलूला करने में कोई हर्ज नहीं है बल्कि यह बहुत मुफ़ीद है। इससे दिमाग़ और अक़्ल में ताक़त पैदा होती है। तमाम रात का जागना बहुत ज़्यादा ख़तरनाक है। इससे बदहज़मी की शिकायत पैदा हो जाती है। अक़्ल व दिमाग़ भी कमज़ोर हो जाते हैं। बदन में ख़ुश्की पैदा हो जाती है और कभी नौबत यहाँ तक पहुंच जाती है कि आदमी दीवाना हो जाता है।

इसीलिए नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि0 को तमाम रात जागने से मना फ़रमाया। फ़रमाया कि तेरे नफ़्स का भी तुझ पर हक़ है। तमाम रात का सोना भी अच्छा नहीं

है बल्कि सुबह होने से पहले ही उठ बैठना चाहिए क्योंकि सारी रात सोने से शैतान कान में पेशाब कर जाता है।

नींद के बारे में बाक़ी बातें इन्शाअल्लाह अदवियाते इलाही के बाब में ज़िक्र की जाएंगी।

आबे ज़मज़म (ज़मज़म का पानी) के ख़्वास व फ़ायदे

इलाज— इमाम जज़्री रह0 अपनी किताब हिस्ने हिस्सैन में रिवायत नक़ल करते हैं कि ज़मज़म के पानी में हर चीज़ से शिफ़ा है। जिस रोग में शिफ़ा की नीयत से पिया जाए तो शिफ़ा हासिल होगी और प्यास की नीयत से पिए तो प्यास दूर हो जाएगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 जब ज़मज़म का पानी पिया करते तो यह दुआ पढ़ते थे :

अल्लाहुम्मम इन्नी अस्अ लु-क इल्मन नाफ़िऔं व रिज़क़ौं वासिऔं व शिफ़ा अ कुल्लि दाइन0

"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से मुफ़ीद व ज़्यादती-ए-रिज़्क और तमाम बीमारियों से शिफ़ा का सवाल करता है।"

पानी पीने का सही तरीक़ा

इलाज— जामेअ् कबीर में हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम पानी

पियो तो एक सांस में न पिया करो क्योंकि इस तरह पीने से सीने में दर्द हो जाता है।

अबू हातिम ने अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 तीन सांस में पानी पिया करते थे। और फरमाते थे कि यह तरीका प्यास को अच्छी तरह बुझाता है। और खाने को अच्छी तरह हज़म करता है। इस तरह सेहत बनी रहती है। कुछ हदीसों में खड़े होकर पानी पीने को भी मना फरमाया गया है। अतएव तिर्मिज़ी आदि में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने खड़े होकर पानी पीने से मना फरमाया है। कुछ हकीमों ने लिखा है कि खड़े होकर पानी पीने से पेट में दर्द हो जाता है और कुछ उलमा ने कहा है कि तीन प्रकार का पानी खड़े होकर पीना जायज़ है।

एक	ज़मज़म का पानी
दूसरा	सबील का पानी
तीसरा	वुज़ू का पानी

लेकिन कुछ हदीसों में मश्क से भी खड़े होकर पीना सही मालूम होता है। कुछ हकीम कहते हैं कि खड़े होकर या लेट कर पानी पीने से मेअ़्दा कमज़ोर हो जाता है और कुछ हदीसों में है कि ठंडा और पानी मीठा पानी नबी सल्ल0 को बहुत अधिक पसन्द था अतएव अबू दाऊद ने हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत की है कि नबी सल्ल0 के लिए मीठा और ठंडा पानी सकिया' के कुंए से मंगवाया जाता था।

शैख़ुर्रईस बू अली सीना ने कहा है कि मीठा पानी सब पानियों से बेहतर है। पानी पीने का बेहतरीन समय वह है जब खाना हज़्म होने का समय हो। यदि खाना हज़्म होने के बाद पानी पिया जाए तो और भी अच्छा है। कुछ दूसरे हकीमों का कहना है कि खाने से पहले पानी पीना मेअ्दे की हरारत को बुझा देता है और हज़्म के बाद पीना मेअ्दा में गर्मी पैदा करता है और बदन को फुलाता है।

बुक़रात ने कहा कि खाने के तुरन्त बाद पानी पीना अच्छा नहीं है। नहार मुंह पानी पीने से हाज़मा ख़राब हो जाता है और खाने के बाद पीने से खाना हज़्म हो जाता है।

एह्याउल उलूम में इमाम ग़ज़ाली ने लिखा है कि सोने के बाद न पिया करो क्योंकि इससे हरारते ग़रीज़ी बुझ जाती है। ग़ुस्ल व क़ुर्बत के बाद पानी पीना राअ्शा पैदा करता है। मेवे खाने के बाद भी पानी पीना अच्छी बात नहीं है। ऐसा करने से ज़बान में घाव पैदा हो जाते हैं।

सबसे अच्छा पानी कौन-सा है ?

मालूम होना चाहिए कि बारिश का पानी सबसे बेहतर है इसके बाद बहता पानी अच्छा है जो मश्रिक़ से मग़रिब या मग़रिब से मश्रिक़ या शिमाल से जुनूब की ओर बहता है। इनके अलावा

---

१ सकिया एक बस्ती का नाम है जो मदीना मुनव्वरा से दो दिन के रास्ते पर है।

दूसरे पानी भी मुफीद हैं। लेकिन कुंओं का पानी व नहर का पानी मिलाकर पीना अच्छा नहीं है इससे ख़तरनाक बीमारियां पैदा होने का ख़तरा है।

सफ़रुस्सआदत में लिखा है कि नबी करीम सल्ल0 का इर्शाद है कि रात के समय बर्तनों और मश्कों के मुंह ढांक दिया करो क्योंकि साल भर में एक ऐसी रात आती है जिसमें वबाएं उतरती हैं और जो बर्तन खुला होता है उसमें ये वबाएं गिर जाती हैं।

मालूम होता है कि नबी सल्ल0 कभी-कभी दूध में पानी मिला कर पिया करते थे और इसकी वजह यह है कि ताज़ा दूध में एक प्रकार की गर्मी होती है जो पानी मिलाने से कम हो जाती है और इसी तरह कभी-कभी शहद में ठंडा पानी मिलाकर पिया करते थे ताकि वह भी मोतदिल हो जाए और कभी खजूर को एक या दो रात पानी में भिगोकर और उसका अर्क़ निथार कर पिया करते थे।

उलमा ने लिखा है कि यह इलाज मर्दाना ताक़त व दिल व दिमाग़ के लिए बड़ा लाभकारी है लेकिन जो आदमी ऐश -व-इशरत व वासना पूरी करने के लिए इसका इस्तेमाल करे उसके लिए इसका पानी हराम है और यदि इबादत की ताक़त हासिल करने के लिए कभी-कभी पीये तो ठीक है।

दवाओं की दो क़िस्में

मालूम होना चाहिए कि दवाइयों की दो क़िस्में हैं। एक तबई

(भौतिक दवाइयां) और दूसरी इलाही दवाइयां। इलाही दवाइयों को रूहानी दवाईयाँ या रूहानी इलाज भी कहते हैं। अब तक इस किताब में भौतिक दवाइयों का उल्लेख हुआ है जिसमें हकीम भी शरीक रहे हैं। अब यहां इलाही दवाइयों अर्थात रूहानी इलाज का ज़िक्र हो रहा है। इस इलाज के बारे मे ठीक तरीक़े से अम्बिया किराम के अलावा और कोई नहीं जानता।

इलाही दवाइयों से इलाज के बहुत से तरीक़े हैं। कभी तो क़ुरआन की आयतों, अल्लाह के पाक नामों और दुआ से किया जाता है और कभी अफ़्सूं। जिसे हिन्दी में मंत्र कहा जाता है, इससे भी किया जाता है। लेकिन मंत्र वही ठीक होते हैं जो क़ुरआनी आयतों या अल्लाह के पाक नामों के साथ हों और उसका अर्थ भी मालूम हो। इसलिए कि नादानी से कहीं कुफ़्र व शिर्क का शिकार न हो जाएं। शायद इसीलिए नबी करीम सल्ल० का आम तरीक़ा था कि जब कोई आदमी मंत्र करने को आपसे पूछता तो आप अपने सामने पढ़वाकर देखते थे। यदि वह मंत्र शिर्क आदि से पाक होता तो उसकी इजाज़त प्रदान कर देते थे कि यह अमल करो और अपने भाइयों को लाभ पहुंचाओ।

अबू दाऊद में इब्ने मस्ऊद से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि मंत्र तमाइम और तीरह शिर्क हैं।

इस हदीस से पता चला कि कुछ मंत्र भी शिर्क हैं। लेकिन शिर्क उन्हीं मंत्रों में हैं जो मंत्र क़ुरआन पाक और अल्लाह के पाक नामों के साथ न हों और उसका अर्थ भी मालूम न हो और जो मंत्र क़ुरआन और अल्लाह के नामों के साथ हों उनमें कोई हर्ज नहीं।

'तमाइम' तमीमा की जमा है और शेर आदि के नाख़ुन भी इसमें शामिल होते हैं। अरब के लोग अपने लड़कों के गले में बुरी नज़र से बचने के लिए इस प्रकार की चीज़ें डाला करते थे। इसी को नबी करीम सल्ल० ने शिर्क फरमाया।

आम तावीज़-गंडों का हुक्म

मालूम होना चाहिए कि जिन तावीज़-गंडों आदि में क़ुरआनी आयतें व अल्लाह के पाक नामों का ज़िक्र न हो या यदि हो लेकिन साथ में ग़ैरुल्लाह के नाम भी शामिल हों तो इस तरह के गंडे तावीज़ रखना सही नहीं है क्योंकि ये भी तमाइल में दाखिल हैं। और इसकी दलील यह है कि यद्यपि शेर के नाख़ुन में शिर्क-जैसी कोई चीज़ नज़र नहीं आती लेकिन गले में डालने का अकीदा यह है कि इन चीज़ों की वजह से बच्चा बुरी नज़र से बचा रहेगा। बस ऐसा मानना ही शिर्क है। इसी तरह लोगों की नीयत तौक़ और बेड़ी आदि में भी यही होती है। इसलिए यह भी शिर्क में दाख़िल है।

टोने-टोटके का हुक्म

कुछ औरतें पति की मुहब्बत हासिल करने के लिए टोने-टोटके किया करती हैं। नबी करीम सल्ल० ने इन सब बातों को शिर्क बताया है लेकिन जो मंत्र ऐसा हो कि उसका अर्थ मालूम न हो और नबी करीम सल्ल० ने सुनकर इससे मना न फरमाया हो तो

उसके करने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि यदि इनमें शिर्क होता तो आप इस से अवश्य मना करते। अतः नबी करीम सल्ल0 की ख़ामोशी इस काम के सही होने की दलील है।

रूहानी दवाओं से इलाज

जो आदमी इलाही दवाओं से इलाज करना चाहे तो उसे चाहिए कि सबसे पहले अपने अकीदे को पक्का व ख़ालिस कर ले वर्ना उसे कोई भी फायदा न होगा और जब फायदा ही न होगा तो किसी को मलामत न करे अपनी जान के अलावा। क्योंकि दवा भी उसी समय फायदा देती है जब इन्सान का पेट ठीक हो। पेट के ठीक न होने पर दवा बेफायदा है। आप यह भी जानते हैं कि कपड़े पर सही रंग उसी समय चढ़ता है जबकि कपड़ा साफ और मज़बूत हो। यदि कपड़ा कमज़ोर व बदरंग होगा तो भला उस पर किस तरह रंग चढ़ सकता हैं। यहां कपड़े ही की ग़लती होगी रंगने वाले कारीगर की नहीं। यही हाल अकीदे का है कि यदि रूहानी दवाओं से इलाज करने के समय अकीदे में कमी होगी अकीदा कमज़ोर होगा तो उस इलाज से किसी प्रकार का फायदा नहीं होगा।

कभी-कभी किसी आदमी का अकीदा तो यही होता है। लेकिन वह इलाज नहीं करता। इसका कारण यह होता है कि वह आदमी ग़फलत व लापरवाही और बेदिली के साथ उस दुआ को पढ़ता है या हराम खाने आदि से अपने को नहीं बचाता है। और कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक आदमी किसी रोग के लिए दुआ कर रहा

है लेकिन कोई दूसरा रोग जिसका उसे पता नहीं है इस दुआ की बरकत से टल जाता है और यह आदमी समझता है कि उसकी दुआ क़ुबूल नहीं हुई।

अतः हदीस शरीफ का मज़मून यह है कि दुआ और बला की आपस में कुश्ती हुआ करती है। बला चाहती है कि मैं ग़ल्बा हासिल करूं और दुआ को पराजित कर दूं। और दुआ चाहती है कि मैं बला को पराजित कर दूं। यहां तक कि दोनों क़ियामत तक इसी प्रकार लड़ा करेंगी। रूहानी इलाज कराना हरेक से अच्छा नहीं है बल्कि ऐसा इलाज मुत्तक़ी, दीनदार और नेक व्यक्ति से ही कराना चाहिए। क्योंकि नेक लोगों की ज़बान में अल्लाह तआला ने एक असर रखा है और उन लोगों की दुआ भी क़ुबूल होती है।

अल्लाह के नामों से इलाज

दुआ से बुख़ार का इलाज

मिश्कात शरीफ में है कि यदि किसी को बुख़ार हो जाए तो उस पर यह दुआ पढ़कर दम करें। हर आदमी स्वयं भी अपने ऊपर दम कर सकता है।

बिस्मिल्लाहिल कबीरि अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीम मिन शर्रि कुल्लि इकिर्न्नअ आरिवं व मिन शर्रि हर्रिन्नार0

"शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से महान रब की पनाह मांगता हूं आग की गर्मी और हर भड़कने वाली आग से।"

आँख की तकलीफ़ की दुआ

इलाज— इमाम जज़्री रह0 ने हिस्ने हिस्सैन में लिखा है कि जिस आदमी की आंखें दुखती हों वह यह दुआ पढ़े और दम करे :

अल्लाहुम्मम मत्तेअ्नी बि ब-स-री वज्अल्हु व अरिं नी फिल उदुव्विं व सारी वन्सुर्नी अला मन ज़-ल-म-नी।

"ऐ अल्लाह! मेरी बीनाई (निगाह) बाकी रख और दुश्मन के मुकाबले में मेरा बदला मुझको दिखा और जो आदमी मुझ पर ज़ुल्म करे उसके मुकाबले मेरी मदद फरमा।"

आम बीमारियों के लिए दुआ

इलाज — साहिबे सफरुस्सआदत ने अबू दाऊद से नक़ल की है कि मैंने नबी करीम सल्ल० से सुना है कि जो आदमी बीमार हो वह यह दुआ पढ़े :

रब्बुनल्लाहुल्लज़ी त-क़द्द-स इस्मु-क अमरु-क फ़िस्समाई वल अर्ज़ि कमा रहमतु-क फ़िस्समाई फजअल रहम-त-क फ़िल अर्ज़ि वग़फ़िरलना ज़ुनूबना व अन त रब्बुत्तिय्यिबीना अन्ज़िल रहमतम मिर्रहमति-क व शिफ़ाअ-क अला हाज़ल वज्अि०

"ऐ हमारे रब! कि तेरा मुक़द्दस नाम है और तेरा हुक्म ज़मीन व आसमानों में जारी है जैसे आसमान में तेरी रहमत है ऐसे ही ज़मीन पर भी अपनी रहमत भेज और हमारे गुनाह बख़्श दे और तू पाक लोगों का रब है। इस तकलीफ़ के लिए अपनी रहमत और शिफ़ा नाज़िल फ़रमा।"

इसी रिवायत में इसके बाद लिखा है कि जो आदमी यह दुआ पढ़े अल्लाह के हुक्म से शिफ़ा पाएगा और यदि किसी के गुर्दे में पथरी हो और पेशाब बन्द हो गया हो तो उसके लिए भी यही दुआ बड़ी मुफ़ीद है।

सांप के काटे का अमल

इलाज — सही मुस्लिम में अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है जिसका सारांश यह है कि सहाबा की एक जमाअत इत्तिफ़ाक़ से

एक मकान पर गई। उस मकान के मालिक को सांप ने डस लिया था। घर के लोगों ने कहा कि तुम लोग इसका इलाज कर दो। सहाबा ने कहा कि तुम्हारा सरदार ठीक हो गया तो तुम हमें क्या दोगे? घर के लोगों ने कहा कि ''गल्ला बकरियों का देंगे।'' (कुछ रिवायतों में है कि बकरियों की संख्या तीस थी) सहाबा रज़ि0 में से एक सहाबी ने उस आदमी पर सूरः फ़ातिहा अर्थात् अलहम्दु शरीफ पढ़कर दम कर दी। वह आदमी जिसे सांप ने काटा था उसी समय ठीक हो गया।

सहाबा (रज़ि0) ने वापस आकर नबी करीम सल्ल0 को यह पूरी घटना बतायी। आप (सल्ल0) ने सुनकर फरमाया तुम लोगों ने बहुत अच्छा किया लेकिन तुमको यह कैसे मालूम हुआ कि यह सूरः सांप के काटे का मंत्र है? इसके बाद आपने फरमाया कि उन बकरियों को तुम आपस में बांट लो और उसमें से एक हिस्सा हमारा भी मुकर्रर कर दो। यह हदीस का सारांश है।

इस हदीस से पता चला कि रोगों का जो इलाज क़ुरआन व हदीस में दर्ज है यदि इन रोगों के इलाज पर पैसा ले लिया जाए तो कोई हर्ज नहीं है और ऐसी उजरत हलाल और पाक है। इस उजरत पर इसलिए भी शक नहीं किया जा सकता नबी करीम सल्ल0 ने स्वयं इसमें से अपना हिस्सा मुकर्रर करने का हुक्म फरमाया था। यदि इसमें थोड़ा-सा भी शक होता तो नबी सल्ल0 अपना हिस्सा कभी भी मुकर्रर न कराते।

दूसरी बात इस हदीस से यह पता चली कि यदि कोई हकीम उजरत लेकर इलाज करे तो उसके लिए उजरत लेना हराम नहीं

है। लेकिन शर्त यह है कि एक तो हराम चीज़ों से इलाज न करे दूसरे धोखा व फरेब न करे। और यदि कोई हकीम या वैद्य यह आमिल अपने फन से परिचित न हो उसके बारे में पूरी जानकारी न रखता हो तो उसके लिए उजरत लेना हराम है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का ग़ुलाम इसी प्रकार इलाज के सिलसिले में धोखा करके कोई चीज़ लाया था। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को खाने के बाद उस धोखे का पता चला तो उसी समय हलक़ में उंगली डालकर क़य कर दी जिससे वह चीज़ बाहर निकल आयी। इस घटना से पता लगा कि यदि कोई धोखा देकर किसी का इलाज करे और उससे माल हासिल कर ले तो वह माल उसके लिए हराम है। अल्लाह तआला फ़ाल और गंडे वालों को हिदायत प्रदान करें कि वे अपना भोजन व रोज़ी-रोटी व कपड़ा आदि को हराम न किया करें। हदीस शरीफ़ में है कि हराम खाने वाले की दुआ क़ुबूल नहीं होती।

क़ुरआन पाक से जिस्मानी व रूहानी इलाज

मालूम होना चाहिए कि क़ुरआन मजीद जिस्मानी व रूहानी दोनों रोगों को लाभ पहुंचाता है। इब्ने माजा में हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि सबसे बेहतर क़ुरआन पाक है और इमाम बैहक़ी ने वासिला बिन असक़अ् से रिवायत की है कि एक आदमी ने नबी करीम सल्ल0 से हलक़ के दर्द की शिकायत की। आपने फरमाया

कि क़ुरआन पाक की तिलावत को अपना शेवा बना लो। इब्ने माजा व इब्ने मर्दूया ने अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत की है कि एक आदमी ने अपने सीने के दर्द की नबी करीम सल्ल0 से शिकायत की आपने फ़रमाया। कि क़ुरआन मजीद पढ़ा करो क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि क़ुरआन उस बीमारी (की दवा है) के लिए शिफ़ा है जो सीने में है।

सूरः फ़ातिहा के ख़्वास

इलाज — मालूम होना चाहिए कि सूरः फ़ातिहा हर रोग के लिए लाभकारी है। इसी लिए कुछ हदीसों में सूरः फ़ातिहा में सिवाए मौत के हर बीमारी से शिफ़ा है और बैहक़ी ने अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत नक़ल की है कि सूरः फ़ातिहा ज़हर की दवा है। और बज़ाज़ ने अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत नक़ल की है कि नबी सल्ल0 ने मुझको इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम सोने का इरादा करो तो सूरः फ़ातिहा को और सूरः इख़लास (क़ुल हुवल्लाहु) को पढ़ लिया करो कि तुम सिवाए मौत के हर बला से बचे रहोगे। इमाम जज़्री रहिम0 ने अपनी किताब हिसने हिस्सैन में लिखा है कि जिस आदमी को जुनून हो जाए उस पर तीन दिन तक सुबह-शाम सूरः फ़ातिहा पढ़कर दम किया जाए।

जुनून दूर करने की दुआ

इलाज — साहिबे इत्तक़ान ने अबी कअ़ब रज़ि0 से रिवायत

नकल की है जिसका मतलब यह है कि कअ़्ब फरमाते हैं कि एक दिन मैं नबी सल्ल० की सेवा में मौजूद था कि एक देहाती आया। उसने आप की सेवा में कहा 'मेरे भाई को जुनून हो गया है।' आपने उसे हाज़िर करने का हुक्म दिया। उसके आने पर उसे नबी सल्ल० ने सामने बैठा कर सूरः फातिहा और चार शुरू की आयतें सूरः बकरा की मुफ्लिहून तक और *इलाहुकूम इलाहुंव वाहिद* और एक आयतल कुर्सी और तीन आयतें आख़िर सूरः बकरा की। एक आयत सूरह आले इमरान की *शहिदल्लाहु* से *हकीम* तक और एक आयत सूरह आराफ की *इन्नन रब्बकुमुल्लाहु* से *रब्बुल आलमीन* तक और एक आयत सूरः मोमिनीन से *फ-त-अल्लाहुल मलि कुल हक्कु* और एक आयत सूरः *जिन्न की-इन्नहु तआला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहिबतवं वला व-ल-दन* और तीन आयतें सूरः साफ्फात की अज़ाबुन तक और तीन आयतें सूरह हश्र की और सूरः इख़्लास और सूरः फलक व सूरः नास ये सारी आयतें उस आदमी पर पढ़वायी गयी। वह उसी समय ऐसा स्वस्थ होकर खड़ा हो गया जैसे कभी बीमार ही न हुआ था।

हर प्रकार के दर्द के लिए

इलाज— अल्लामा जज़्री ने अपनी किताब में लिखा है कि जिस आदमी के किसी जगह दर्द हो जाए तो उसे चाहिए कि अपना दायां हाथ दर्द की जगह पर रखे और नीचे लिखी दुआ को सात बार पढ़े और हर बार पढ़कर हाथ उठा ले। दुआ यह है :

बिस्मिल्लाहि अऊज़ु बिइज़्ज़तिल्लाहि व क़ुदरतिहि मिन शर्रि मा अजिदु मिवं वजइ हाज़ा।

"अल्लाह के इज़्ज़त व क़ुदरत की पनाह चाहता हूं अपने इस दर्द की तकलीफ़ से जिसका मैं शिकार हूं।"

बहुत-सी बीमारियों के लिए दुआ

इलाज— हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम सल्ल० जब बीमार होते तो जिबरील अलै० यह दुआ पढ़ा करते थे :

बिस्मिल्लाहि उरकी-क मिन कुल्लि शैइन यूज़ीक मिन शर्रि कुल्लि अय्निन हासिदिन अल्लाहु यश्फ़ीक बिस्मिल्लाहि उरकी-क

"अल्लाह के मुबारक नाम से मैं तेरी हिफ़ाज़त करता हूं। अल्लाह तुझको हर चीज़ से हर तकलीफ़ वाली चीज़ से और हर आंख और हसद करने वाले की बुराई से शिफ़ा दे। अल्लाह के मुबारक नाम से हिफ़ाज़त करता हूं।"

बिच्छू के काटे के लिए दुआ

इलाज— मुस्तदरक इब्न शीबा में अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद की रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० की उंगली में नमाज़ पढ़ते हुए बिच्छू ने डंक मारा। आपने जब नमाज़ से फ़राग़त पायी तो फ़रमाया कि लानत करे बिच्छू पर अल्लाह तआला कि यह न

उम्मत में से किसी को छोड़े और न नबी को। इसके बाद आपने पानी में नमक घोला और अपनी उंगली मुबारक उसमें डाल दी और सूरः इख़्लास, सूरह फलक व सूरः नास पढ़ना शुरू की यहां तक कि दर्द ख़त्म हो गया।

कुछ रिवायतों में इसका इलाज सात बार सूरः फ़ातिहा पढ़ना भी आया है और कुछ रिवायतों में है कि किसी सहाबी ने नबी सल्ल0 की सेवा में अर्ज़ किया कि मुझे बिच्छू की झाड़ आती है। नबी सल्ल0 ने सुनकर फरमाया– "इस अमल को किया करो और लोगों को फ़ायदा पहुंचाया करो।" वह झाड़ यह है :

बिस्मिल्लाहि शुज्जतुन करीबतुन मुलहक़तुन यजरा कफ़तन।

यह झाड़ अनेक बार पढ़कर फूंक देना चाहिए। इस झाड़ के शब्दों का अर्थ यद्यपि हमें मालूम नहीं मगर जब नबी सल्ल0 ने सुनकर इसकी इज़ाज़त दी तो इससे इलाज करने में कोई हर्ज नहीं है। यदि इसमें शिर्क होने की शंका होती तो नबी सल्ल0 इस झाड़ को पढ़ने की कभी भी इजाज़त न देते।

घाव और फोड़े फुन्सी के लिए दुआ

इलाज— यदि किसी आदमी के कोई घाव या फोड़ा फुन्सी हो जाए तो उसे चाहिए कि पहले शहादत की उंगली ज़मीन पर रखे और फिर उठाकर उस घाव पर रखे और यह दुआ पढ़े :

बिस्मिल्लाहि तुरबतु अर्जिना बिरीकति बाआज़िना यशफी सकीम-न बिइज़्नि रब्बिना

"शुरू अल्लाह के नाम से, ज़मीन की मिट्टी हम में से किसी के थूक के साथ मिल कर हमारे रब के हुक्म से शिफ़ा बख़्शती है।"

हर दिन यही अमल करे। इन्शा अल्लाह स्वस्थ हो जाएगी। मुस्लिम और दूसरी किताबों में हज़रत आइशा रज़ि० से यह रिवायत दर्ज है और कुछ दूसरी अहादीस में है कि एक आदमी नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैं जब से मुसलमान हुआ हूँ। उस समय से मेरे बदन में दर्द रहता है। आपने फरमाया कि दर्द की जगह पर हाथ रखकर तीन बार बिस्मिल्लाह और सात बार.....

अऊज़ु बिल्लाहि व क़ुदरतिहि मिन शर्रि मा अजिदु व अहज़रू पढ़ो।

इस हदीस से पता चला कि जब इन्सान अच्छी राह अपना लेता है तो कभी-कभी शैतान बीमारी की शक्ल में इन्सानी जिस्म में दाख़िल हो जाता है ताकि वह आदमी किसी प्रकार गुमराह हो जाए लेकिन अल्लाह तआला ने उस आदमी को बचा लिया। इस प्रकार के वहम से हज़ारों मुसलमान गुमराह हो जाते हैं और वे यह समझने लगते हैं कि इस्लाम की वजह से हम पर तंगी आई है यद्यपि वो शैतानी असर होता है।

प्लेग और महामारी का इलाज

इलाज— कुछ हदीसों में है कि नबी करीम सल्ल० ने फरमाया है कि प्लेग एक प्रकार का अज़ाब है जो बनी इसराईल और पिछली उम्मतों पर भेजा गया है। इसलिए जब आदमी को मालूम हो कि फ़लां जगह प्लेग या महामारी का प्रकोप है तो उस जगह नहीं जाना चाहिए और यदि महामारी उस जगह मौजूद हो जहां वह रहता है तो उसे वहां से भागना नहीं चाहिए।

प्लेग से इस जगह महामारी मुराद है जैसा कि सिराते मुस्तकीम में दर्ज है। इस हदीस का मफहूम (मतलब) यह है कि महामारी भी एक तरह का अज़ाब है जो गुनाहों की वजह से अल्लाह तआला भेजता है। जब मालूम हो कि फ़लां शहर में महामारी है तो वहां नहीं जाना चाहिए क्योंकि जान-बूझकर अपने आपको विनाश के लिए नहीं झोंक देना चाहिए और उस जगह बीमारी आ जाए जहां वह रहता है तो वहां से भागना नहीं चाहिए क्योंकि अल्लाह की तकदीर से भागना ठीक नहीं है। कुछ हदीसों में यह भी आया है कि प्लेग व महामारी शैतान और जिन्नात का नश्तर है अर्थात् जिन्नात इन्सान के शरीर में नश्तर लगाते हैं जिसके कारण इन्सान के शरीर में ज़हर फैल जाता है और इन्सान मरने लगते हैं।

हकीमों के अनुसार वबा (महामारी) की हक़ीक़त यह है कि हवा ज़हरीली व दूषित हो जाती है जिसके कारण इन्सानी शरीर में ज़हर दाखिल हो जाता है और लोग मरने लगते हैं। इस हदीस

व हकीमों की राय में लोगों ने इस तरह समानता पैदा की है कि महामारी कभी तो हवा के ज़हर के कारण आती होगी और कभी जिन्नात के कोंचा देने से।

लेकिन नबी करीम सल्ल0 ने महामारी का एक सबब बताया है जिसका ताल्लुक वह्य से है (और जो अक्ल से ऊंची चीज़ है) अर्थात महामारी जिन्नात के असर से आती है। दूसरा कारण जो हकीमों ने बताया है नबी सल्ल0 ने इसका ज़िक्र नहीं फरमाया। कुछ उलमा ने इस संबंध में यह जवाब दिया है कि महामारी यदि हवा ज़हरीली होने के कारण आती तो फिर कोई भी जानदार जीवित न रहता। क्योंकि हवा का असर तो हर जानदार पर होता है लेकिन देखने में यह आया है कि महामारी से सब जानदार नहीं मरते बल्कि कुछ मरते हैं और कुछ नहीं मरते। इस बात से पता चला कि हवा के फसाद के कारण महामारी नहीं आती बल्कि हकीकत वही है जो नबी करीम सल्ल0 ने ब्यान की है कि जिन्नात के कोंचे से ही महामारी आती है।

यदि इस पर कोई यह आपत्ति करे कि अल्लाह की इसमें क्या हिक्मत है कि महामारी लाने के लिए जिन्नात ही को मुकर्रर किया किसी दूसरी चीज़ को मुकर्रर क्यों नहीं किया। तो इसका जवाब यह है कि वबा जब आती है तो प्रायः गुनाहों के कारण आती है मुख्य रूप से हरामकारी और ज़िना के कारण अधिक आती है और इन्सान की आदत है कि इन गुनाहों को खुले आम नहीं बल्कि लोगों से छुप कर करता है। इसलिए अल्लाह तआला ने उन पर दुश्मन भी छुपे हुए अर्थात् जिन्नात ही को थोपा है और यदि कोई

आदमी कहे कि हरामकारी या हराम काम तो कुछ ही लोग करते हैं। तो फिर सारी बस्ती और शहर पर क्यों नाज़िल होती है। इसका जवाब यह है कि किश्ती को एक ही आदमी डुबोता है जिसके कारण किश्ती के सारे लोग डूब जाते हैं। यदि सारे लोग डुबोने वाले को मना करें तो किश्ती बच जाती है। इसी तरह बस्ती और शहर के लोग गुनाहगार लोगों को बुराई करने से यदि रोकें तो वह गुनाह से बच सकता है और उसकी वजह से वह बस्ती व शहर अल्लाह के प्रकोप से बच जाता है।

और यह जो हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस स्थान पर महामारी हो उस जगह मत जाओ और यदि तुम्हारी जगह पर महामारी आ जाए तो वहां से मत भागो। इसके बारे में यदि कोई यह कहे कि मना करने की क्या ज़रूरत थी। तो इसका जवाब यह है कि जान-बूझकर ऐसी जगह जाना जहां महामारी हो अपने आपको विनाश के गढ़े में धकेलने से मना किया गया है जिसके बारे में अल्लाह ने भी इर्शाद फरमाया है :

वला तुलक़ू बि एदीकुम इलत्तह लुक:

"अपने को स्वयं हलाकत में न डालो।"

इसीलिए ऐसी जगह जहां महामारी हो वहां जाने से मना किया गया है। और यह जो इर्शाद है कि जिस जगह महामारी हो वहां से न भागो तो इसमें यह हिक्मत है कि महामारी का बहुत से लोग शिकार हो जाते हैं। ऐसी हालत में यदि भागना ठीक होता तो सब लोग भाग जाया करते और बीमार उनके पीछे तड़पते रह जाते और उनकी कोई सेवा व देखभाल करने वाला न रहता।

दूसरी हिकमत इसमें यह है कि सब्र व भरोसा की आदत हो जाए अर्थात् कोई तकलीफ हो जाए तो सहन की ताकत पैदा हो। तीसरी हिकमत इसमें यह है कि यदि कोई आदमी महामारी की जगह से भाग कर दूसरी जगह चला जाता है और वहां बच जाता है तो उसे यह यक़ीन हो जाता है कि यदि मैं वहां से न भागता तो मैं भी उनके साथ हलाक हो जाता। और यह अक़ीदा ऐसा है कि इससे आदमी शिर्क खफी का शिकार हो जाता है।

अल्लाह का इर्शाद है कि तुम जहां कहीं भी होगे मौत तुम्हें आ घेरेगी। इससे मालूम हुआ कि महामारी के कारण भागने में कोई फायदा नहीं है। कुछ उलमा ने कहा कि महामारी के कारण भागने को नबी सल्ल0 ने इसलिए मना फरमाया है कि महामारी की हालत में ज़्यादा हरकत करना हिक्मत की दृष्टि से सही नहीं है अतएव हकीमों ने लिखा है कि जो आदमी वबा से बचा रहना चाहता है उसे चाहिए कि वबा के दिनों में खाना कम खाए और शरीर का अधिक तरल पदार्थ किसी तरीके से खुश्क करे और मेहनत के काम व गुस्ल करने से रुका रहे क्योंकि ख़राब पदार्थ इससे जोश में आते हैं इसलिए इस दिनों सुख शांति व आराम से रहे ताकि अधिक हरकत के कारण तरल पदार्थ में जोश न आए और यह महामारी से बचा रहे।

इससे साबित हुआ कि नबी सल्ल0 का मना करना भी महामारी के इलाजों में से एक इलाज है। मानो इस हदीस में जिस्मानी व रूहानी इलाज बताए गए हैं। रूहानी इलाज तो सब्र व भरोसा है और जिस्मानी इलाज हरकत न करना और सुकून से रहना है।

मालूम होना चाहिए कि महामारी में शहादत का दर्जा इसलिए है कि यह भी काफिर जिन्नात से जिहाद करना है। क्योंकि नबी करीम सल्ल0 का इर्शाद है कि महामारी तुम्हारे दुश्मन जिन्नात का कोंचा है। इस हदीस से पता चला कि महामारी लाने पर शैतान मुक़र्रर हैं और जो जिन्नात मुसलमान हैं वे हमें नहीं सताते। जिस प्रकार मुसलमानों को काफिर इन्सानों से जिहाद में भागने का हुक्म नहीं है। उसी तरह काफिर जिन्नात से भागने को मना किया गया है और यह बात तो सभी जानते हैं कि जिहाद से मरने वाले को शहादत का दर्जा दिया जाएगा। महामारी चूंकि गुनाह होने के कारण आती है और गुनाह आदमी से शैतान कराते हैं इसलिए महामारी लाने पर भी शैतानों को ही मुकर्रर किया गया ताकि जिन के कहने से गुनाह करते हैं उन्हीं के हाथों हलाक हों।

इसीलिए गुनाहों से यथासंभव बचना चाहिए। हदीस शरीफ में है कि जिस क़ौम में ज़िना रिवाज पा जाए उस क़ौम में मौत आम हो जाती है। इस हदीस से पता चला कि वबा को दूर करने का बड़ा इलाज तौबा व इस्तिग़फार है और सिकन्जिबीन गुलाब के शरबत के बजाए दुआ का शर्बत पीना चाहिए। हदीस शरीफ में है कि जो आदमी इस्तिग़फार अपने ऊपर अनिवार्य कर लेगा अल्लाह तआला उसे हर दुख से नजात दिला देगा। कुछ हदीसों में है कि भेजी गयी बलाएं और जो अभी आयी नहीं वे सारी बलाएं दुआ से टल जाती हैं। महामारी के दिनों में सदक़ा व ख़ैरात ज़्यादा करना चाहिए।

हदीस में है कि सुब्हानल्लाह कहना अल्लाह के अज़ाब से

बचने के बराबर है। और जानना चाहिए कि हुकमा कहते हैं कि वबा के ज़माने में इत्र, अम्बर, मुश्क आदि को सूंघना बड़ा लाभकारी है। लेकिन उलमा ने लिखा कि इत्र की जगह इन दिनों में दुरूद की अधिकता करे तो उसके हक़ में अधिक फ़ायदा होगा। हदीस शरीफ़ में है कि दुरूद शरीफ़ ग़म को दूर करता है। दुरूद शरीफ़ के अलावा

- *ला हौ ल वला क़ुव्वा इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम0*

को भी ज़रूरी समझा जाए क्योंकि हदीस में है कि ''ला हौ ल'' एक सौ बीमारियों की दवा है। इन दिनों में नमाज़ें भी अधिक पढ़नी चाहिए। इसलिए कि हदीस में है कि जब नबी करीम सल्ल0 को कोई दुख पहुंचता तो आप नफ़्लि नमाज़ें अधिकता के साथ पढ़ा करते थे। और इन दिनों काफ़ूर की बजाए तक़्वा की बू सूंघनी चाहिए ताकि इसकी बरकत से अल्लाह तआला सारी बलाओं से बचाकर रखे—आमीन! ये इलाज जो अभी-अभी बताए गए हैं। ये तो रूहानी और असल इलाज थे लेकिन थोड़े से जिस्मानी इलाज भी हिक्मत की दृष्टि से ब्यान किए जाते हैं।

महामारी का आयुर्वेदिक इलाज

वबा (महामारी) के दिनों में आदमी को चाहिए कि अधिकतर सायादार मकान में रहे और धूनी जैसे काफ़ूर, मुश्क अम्बर, ऊद और इत्र को सूंघता रहे। भोजन में सिरका, नींबू, सिकिन्जिबीन आदि का इस्तेमाल करे और गुलाब पानी मकान के सब कोनों पर

छिड़कना चाहिए और प्याज़ को कूट कर घर की ताकों में रखना चाहिए और हवा में ज़्यादा न घूमें फिरें। यदि इत्तिफ़ाक़ से कहीं जाना हो तो नाक कान को कपड़े से ढक कर जाए और इत्र साथ ज़रूर रखे। इस मौसम की तरकारियों और गोश्त से परहेज़ को ज़रूरी समझे।

जादू का इलाज

इलाज — हदीस में है कि लब्बैद-बिन आसिम यहूदी ने नबी करीम सल्ल0 पर जादू किया था जिसकी वजह से आप बीमार हो गए थे। कुछ रिवायतों में है कि आप लगभग छः महीने बीमार रहे और बहुत कमज़ोर हो गए। एक दिन आपने सपने में दो फ़रिश्तों को देखा कि एक फ़रिश्ता दूसरे फ़रिश्ते से पूछ रहा था कि हुज़ूर को क्या बीमारी है? दूसरे ने जवाब दिया कि नबी सल्ल0 पर जादू किया गया है। उसने फिर सवाल किया कि किसने जादू किया है। दूसरे ने जवाब दिया कि लब्बैद बिन आसिम ने। उसने फिर सवाल किया कि जादू का असर किस चीज़ पर है? दूसरे ने जवाब दिया हुज़ूर के सर के बालों में और कंघी के दन्दानों में। कमान की डोरी-जैसी गिरह देकर खजूर के ग़िलाफ़ में रख कर वुज़रान के कुंए में पत्थर के नीचे दफ़न किया गया है। जब आप सुबह जागे तो उस कुंए पर तशरीफ़ ले गए।

आपके दो सहाबी कुएं के अन्दर गए और वह जादू किये हुए कंघे निकाल लाए। कुछ लोगों ने कहा कि ये दो सहाबी हज़रत

अली रज़ि० और हज़रत अम्मार रज़ि० थे। फतहुल बारी में लिखा है कि इस जादू के अन्दर नबी सल्ल० की मोमी सूरत बनी हुई थी और उसमें सूइयां चुभी हुई थीं। इस मोमी पुतले से जैसे-जैसे सूइयां निकाली गईं नबी करीम सल्ल० को सुकून व आराम होना शुरू हो गया और जो ११ गिरहें उसमें लगी हुई थीं वे खुल नहीं सकती थीं। इसलिए हज़रत जिबरील आमीन मुअव्विज़ा तैन अर्थात् सूर: फ़लक़ व सूर: नास होकर नाज़िल हुए और कहा कि इन दोनों सूरतों की ११ आयतें हैं। इनको पढ़कर उस पर दम करें। इनकी बरकत से ये ११ गिरहें खुल जाएंगी।

कुछ रिवायतों में है कि कअ़्ब रज़ि० फरमाते हैं कि यदि मैं सुबह व शाम इन कलिमात को न पढ़ता होता तो यहूदी अपने जादू से मुझे कुत्ता या गधा बना डालते। काअ़्ब अहबार जब मुसलमान हुए थे तो यहूदी उनके दुश्मन हो गए थे और उनको मारने को बेचैन हो गए थे लेकिन आपने यह दुआ पढ़ी जिसकी वजह से वह यहूदियों की शरारतों से महफूज़ रहे। इसके बाद आपने इस दुआ को पढ़ना अपना मामूल बना लिया। वह दुआ यह है :

अउज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति अल्लती ला युजाविज़ हुन्न बिरुैविं वला फाजिरैं व अउज़ु बिवजहिहि अज़ीमिल जलीलिल्लज़ी ला यख़्तसिरू जारुहुल्लज़ी युम्सिकुस्समा अ अन त-क़-अ अलल अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निहि मिन शर्रित्ताम्मति व मिन शर्रि मा ज़-र-अ फ़िल अर्ज़ि व मिन शर्रि मा यख़रुजु मिन्हा व मिन शर्रि मा यन्ज़िलु मिस्समाई वमा यख़रुजु फ़ीहा

व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्ता आख़िज़ुन बिना सियतिहा इन्ना रब्बी अला सिरातिम्मुस्तकीम0

"मैं अल्लाह के इन कलिमाते ताम्मा से कि जिनसे कोई अच्छाई व बुराई आगे नहीं बढ़ सकती और अल्लाह के महान उच्च नामों से कि उसके निकट रहने वाला कभी भी अपमानित नहीं हो सकता और वह खुदा जो आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोके हुए है, से पनाह मांगता हूं। मुकम्मल बुराई और हर उस चीज़ की बुराई से जो ज़मीन से निकले और आसमान से उतरे और हर उस चीज़ से जो आसमान में चढ़े और हर पैदा होने वाली चीज़ की बुराई से और ज़मीन पर चलने वाले हर जानदार की बुराई से आप उसको उसकी पेशानी से पकड़े हुए हैं बेशक मेरा रब सीधी राह पर है।"

यह दुआ यदि सुबह व शाम पढ़ी जाए तो इन्सान जादू से बचा रहेगा। इन्शा अल्लाह!

यहां पर यदि कोई आदमी यह आपत्ति करे कि नबी करीम सल्ल0 पर अल्लाह ने जादू का असर क्यों नहीं होने दिया और आपको जादू के प्रभाव से क्यों महफ़ूज़ नहीं रखा। तो इस का जवाब यह है कि कुफ्फार नबी सल्ल0 को जादूगर कहते थे और जादूगर पर जादू का असर नहीं होता तो अल्लाह की हिकमत ने यह ज़रूरी समझा कि नबी सल्ल0 पर जादू का असर हो जाए ताकि लोगों को अच्छी तरह मालूम हो जाए कि नबी सल्ल0 जादूगर नहीं हैं। यदि जादूगर होते तो जादू का आप पर असर नहीं होता।

नमला अर्थात् फोड़े का इलाज

इलाज— नमला एक प्रकार का फोड़ा होता है जो आदमी के पहलू में होता है। इससे आदमी को ऐसा मालूम होता है जैसे घाव में चींटियां घुस रही हैं। इसका इलाज जैसा कि अबू दाऊद में शिफा बिन्त अब्दुल्लाह से रिवायत है कि यह कहती हैं कि एक दिन नबी सल्ल0 मकान पर तशरीफ लाए। उस समय मैं हज़रत हफसा रज़ि0 के यहां बैठी हुई थी। आपने मुझसे फरमाया कि तू हफसा को नमला का मंत्र क्यों नहीं सिखाती जैसा कि तुमने लिखना सिखाया। नमला के लिए यह दुआ है :

बिस्मिल्लाहि सल्लत हत्ता तफ़ूरा मिन अफवाहिहा अल्लाहुम्मक शिफिल बासा रब्बन्नासा0

इसका तरीका यह है कि यह दुआ किसी लकड़ी पर पढ़ी जाए। फिर तेज़ किस्म का सिरका लेकर पत्थर पर डालकर उसकी लकड़ी को पत्थर पर घिसे और फिर फोड़ों पर लगाई जाए।

नुकसान दूर करने का इलाज

इलाज— यदि किसी का नुकसान हो जाए तो ये कलिमात पढ़े जिस की बरकत से अल्लाह तआला उसका बदला अता फरमाएगा। वह दुआ यह है :

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन0 अल्लाहुम्मा अजिरनी मिम्मुसीबति वख़्लुफ़ ली ख़ैरम मिन्हा।"

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 के पहले पति अबू सलमा का जब इन्तकाल हुआ तो नबी सल्ल0 से उम्मे सलमा रज़ि0 को यह दुआ सिखाई थी और फरमाया था कि जिसका नुकसान हो जाए और यह दुआ पढ़े तो अल्लाह तआला उसे उस चीज़ से बेहतर प्रदान करेगा। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैं अपने दिल में सोच रही थी कि अबू सलमा से बेहतर पति मुझे और कौन-सा मिलेगा। इस घटना को अभी थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि नबी सल्ल0 ने मुझ से निकाह कर लिया। उस समय मुझे पता चला कि यह उस दुआ की बरकत है जो इस शक्ल में क़ुबूल हुई।

नज़र लगने का इलाज

इलाज— मालूम होना चाहिए कि इन्सानों की आंखों में भी एक प्रकार का ज़हर होता है। जैसे बिच्छू के डंक और सांप की ज़बान में ज़हर होता है। उसी प्रकार इन्सान की आंख में भी ज़हर है। वह ज़हर नज़र लगना है। और नज़र केवल इन्सान पर ही नहीं बल्कि हर चीज़ पर जैसे औलाद, जानवर, बाग़, खेती, दौलत व सामान आदि पर भी लगती है। इसीलिए अल्लाह तआला ने अपने महबूब नबी करीम सल्ल0 की ज़बान से इसका इलाज भी उम्मत को बता दिया ताकि मख़लूक़े खुदा इससे फायदा हासिल करे।

हज़रत हसन बसरी रहिम0 ने फरमाया है कि जिस किसी आदमी को स्वयं अपने ऊपर नज़र लगने का वहम हो जाए तो वह आदमी सूरः नून की इस आयत को पढ़कर तीन बार दम करे।

व इय्यकादुल्लज़ीन क-फ़-रू लियुज़लिकून-क बि अबसारिहिम लम्मा समिउज़्ज़िक्रा-र व यक़ूलुना इन्नहु ल-मजनूनुन। वमा हु व इल्ला ज़िकरुल लिल आलमीन।

और यदि किसी को कोई चीज़ जैसे माल, सन्तान, मकान, बाग़ आदि कोई चीज़ पसन्द आए और नज़रों को अच्छी मालूम हो तो उसी समय यह पढ़े :

मा शाअल्लाहु ला हौ ल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह0

इस कलिमे की बरकत से उस चीज़ को नज़र नहीं लगेगी और यदि किसी आदमी को यह मालूम हो कि मेरी नज़र बड़ी सख़्त है और तुरंत ही किसी चीज़ को लग जाती है तो पहले तो वह किसी चीज़ को देखा ही न करे और यदि किसी चीज़ पर नज़र पड़ जाए तो तुरंत *अल्लाहुम्मम बारिक अलैह* पढ़े। इन्शा अल्लाह तआला इस कलिमे की बरकत से नज़र नहीं लगेगी।

किताब सिराते मुस्तक़ीम में लिखा है कि इमाम अबुल क़ासिम क़शीरी फरमाते हैं कि एक बार मेरा लड़का सख़्त बीमार हो गया और बीमारी की वजह से लड़का बिल्कुल निढाल था। उसका अन्तिम समय आ गया है, ऐसा लग रहा था कि अचानक सपने में नबी सल्ल0 की ज़ियारत हुई। मैंने नबी सल्ल0 की सेवा में लड़के की बीमारी की शिकायत की तो आपने फरमाया कि तुम आयते

शिफा से क्यों ग़ाफिल हो रहे हो। वे आयते शिफा यह है :

आयते शिफ़ा

आयत नं० १. व यश्फि सुदूरिल मोमिनीन।

"और शिफा देता है मोमिनीन के सीने को।"

आयत नं० २. व शिफाउल लि मा फिस्सुदूर०

"सीनों में जो तकलीफ है उनसे शिफा देता है।"

आयत नं० ३. यख़्रुजु मिम्बुतूनिहा शराबुन मुख़्तलिफुन अलावानुहु फ़ीही शिफाउल लिन्नास०

"उनके पेट से निकलती है पीने की चीज़, जिसके रंग भिन्न-भिन्न होते हैं। लोगों के लिए उनमें शिफा है।"

आयत नं० ४. व नुनज़्ज़िलु मिनल क़ुरआनि मा हुआ शिफाउं व रहमतुल लिल मोमिनीन०

"और कुरआन में हम ऐसी चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनीन के लिए शिफा और रहमत है।"

आयत नं० ५. व इज़ा मरिज़्तु फ-हु व यशफीन०

"और जब मैं बीमार होता हूं तो वह शिफा देता है।"

आयत नं० ६. क़ुल हु व लिल्लज़ीन आमनू हुदंं व शिफा०

"फरमा दीजिए आप कि यह मोमिनीन के लिए हिदायत और शिफा है।"

मैंने इन आयत को लिख कर और पानी में घोलकर उसी समय पिलाया जिसकी बरकत से वह लड़का ऐसा स्वस्थ हो गया जैसे कभी बीमार ही न था।

अब्दुल्लाह एक आलिम कहते हैं कि मैं सफ़र में था और मेरे पास एक बहुत तेज़ व चुस्त व चालाक ऊंट था। अचानक एक मंज़िल पर उतरने का मौक़ा आ गया तो एक आदमी ने मुझसे कहा कि यहां पर एक ऐसा आदमी है जो नज़र लगाने में मशहूर है। तुम्हारा ऊंट बहुत ही अच्छा है। मुझे डर है कि वह आदमी कहीं इस को नज़र न लगा दे। जिसकी वजह से तुम्हारा ऊंट नष्ट हो जाए।

मैंने जवाब दिया कि मेरे ऊंट पर उसकी नज़र नहीं लगेगी। इत्तिफाक से उस आदमी को मेरी बात का पता लग गया तो उसने उसी समय आकर ऊंट को नज़र भर कर देखा। उसके देखते ही ऊंट गिर पड़ा और तड़पने लगा। लोगों ने मुझे बताया कि वह आदमी तुम्हारे ऊंट को नज़र लगा गया है। मैंने उसे बुलवाकर अपने सामने बैठाया और यह मंत्र पढ़ा :

बिस्मिल्लाहि हब्सिन हाबिसिन व शा-ज-र याबिसिन बिशिहाबिन काबिज़िन रदत्तु ऐनल ऐनी अलैहि व अला अ-हब्बन्नासि इलैहि। फर्जिइल ब-स-र हल तरा मिन फ़ुतूर। सुम्मर्जिइल ब-स-र कर्र-तैनि यन्कलिब इलैकल ब-स-रु ख़ासिऔं व हुव हसीर०

इस मंत्र के पढ़ते ही उस आदमी की आंख निकल पड़ी और मेरा ऊंट अच्छा हो गया। इस घटना को यहां बताने से यह मक़सद

है कि मंत्र भी नज़र लगने में लाभकारी होता है। यद्यपि नज़र लगाने वाला सामने न हो। अतः अल्लाह के नाम में बड़ी बरकत है। जब जादू-जैसी चीज़ ग़ायब हो जाए तो दूर रहने वाली चीज़ पर प्रभाव डाल देती है तो फिर अल्लाह तआ़ला का नाम क्यों असर नहीं करेगा?

बुरी नज़र का इलाज

इलाज— मालिक लिखते हैं कि आमिर बिन रबीआ रज़ि0 ने एक बार सुहैल बिन हनीफ को नहाते देखा तो कहा खुदा की कसम इतना सुन्दर जिस्म मैंने तो किसी मर्द का न देखा और न किसी औरत का। यही कहना था कि सुहैल उसी समय बेहोश होकर गिर पड़े। नबी सल्ल0 को इसका पता लगा तो आप आमिर रज़ि0 पर गुस्सा हुए और फ़रमाया कि अपने मुसलमान भाई को क्यों हलाक करता है? और तूने उसके लिए बरकत की दुआ क्यों न की। जब तेरी नज़र उसकी सुन्दरता पर पड़ी थी तो क्यों यह दुआ न पढ़ी :

अल्लाहुम्मअ बारिक अलैह0

अर्थात् 'ऐ अल्लाह इस पर बरकत प्रदान कर।'

यदि तू यह दुआ पढ़ लेता तो उसे नज़र न लगती और फिर इर्शाद फरमाया कि अब तुम अपने अंगों को पानी से धो डालो। इसके बाद आमिर (रज़ि0) ने अपने सारे अंगों (मुंह, हाथ, केहनियां, पांव और इस्तिंजे की जगह भी) को एक बर्तन में धोया और वह

पानी सुहैल (रज़ि0) के ऊपर डाल दिया। इस अमल से सुहैल (रज़ि0) उसी समय होश में आकर खड़े हो गए।

मवाहिब में धोने की तरकीब यह लिखी है कि एक बर्तन में पानी लेकर जिस आदमी की नज़र लगी है उससे कह कि दाएं हाथ में पानी लेकर कुल्ली करे और उस बर्तन में डाल दे और फिर उसी बर्तन में अपना मुंह धोए। फिर बाएं हाथ से दायां पांव और दाएं हाथ से बायां पांव धोए। फिर बाएं हाथ से दायीं कोहनी और दाएं हाथ से बायीं कोहनी धो दे। फिर इस्तिन्जे की जगह धोए लेकिन पानी का बर्तन ज़मीन पर न रखे। इसके बाद वह पानी उस आदमी पर डाले जिसको नज़र लगी हो। इन्शा अल्लाह तआला वह उसी समय ठीक हो जाएगा।

ऐसे अवसर पर इन्सान को चाहिए कि ईमान का रास्ता मज़बूती से पकड़े रहे और अक़्ल को दख़ल न दे क्योंकि ऐसी जगह अक़्ल काम नहीं करती। अक़्ल कभी भी अल्लाह व उसके रसूल के भेदों से परिचित नहीं हो सकती। मुसलमानों को अल्लाह व रसूल के आदेशों पर पक्का व अटूट विश्वास रखना चाहिए और यदि कोई फलसफी यह आपत्ति करे कि यह बात अक़्ल में नहीं आती तो इसका जवाब यह है कि इलाही दवाएं कभी-कभी अपने ख़ासियतों के हिसाब से मुफीद हुआ करती हैं और बहुत से हकीम और डॉक्टर जैसे बहुत-सी दवाओं के उनकी ख़ासियतों के क़ाइल हैं कि वे मुफीद हैं। इसी प्रकार इसे भी मुफीद समझा जाए और अपनी अक़्ल को इसमें दख़ल न दें।

कुछ हदीसों में है कि नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत उम्मे

सलमा रज़ि0 के मकान में एक लड़के को देखा कि जो ज़र्द हो रहा था। आपने फरमाया था कि इस लड़के के लिए चिंता करनी चाहिए क्योंकि इसे जिन्नात की नज़र लग गयी है। इस हदीस से पता लगा कि जिस तरह इन्सानों की नज़र लगती है उसी तरह जिन्नात की भी नज़र लगती हैं और मालूम होना चाहिए कि नज़र या बिच्छू या सांप के काटे का मंत्र या अफ़सूं वही ठीक और जायज़ है जिस में अल्लाह तआला का नाम हो और मंत्र के माने भी मालूम हों। जिस मंत्र के माने मालूम न हों और उसमें अल्लाह का नाम भी न हो तो ऐसा मंत्र या अफ़सूं करना ठीक नहीं है क्योंकि इसमें ईमान जाने का डर है।

कुछ जाहिल आमिल ऐसे नाम जिनके माने मालूम नहीं होते, पढ़ते हैं और उनके साथ में अल्लाह तआला के नाम भी मिला लेते हैं। यद्यपि मुसलमानों को इस तरह के मंत्रों पर कदापि भरोसा नहीं रखना चाहिए। क्योंकि शैतान का यह तरीक़ा है कि वह बीमार की शक्ल बनाकर आदमी के शरीर में घुस जाता है और कभी-कभी सांप या बिच्छू बन कर काट लेता है और फिर जब उसके नाम के मंत्र पढ़े जाते हैं तो निकल जाता है और फिर खुश होता है कि मेरे नाम का ज़िक्र करने वाले भी दुनिया में मौजूद हैं। अहमक़ लोग यह समझते हैं कि फलां आमिल या उसके मंत्र करने से बड़ा फ़ायदा होता है और हमारे बाल-बच्चे ठीक हो जाते हैं। कहने का मतलब यह है कि वे लोग ऐसे मंत्रों और जादू करने वालों पर पूरा विश्वास कर लेते हैं और उनको बुज़ुर्ग व आमिल समझने लगते हैं और हक़परस्तों को झूठा कहते हैं। बल्कि कभी-कभी

तो यहां तक कहते हैं कि आमिल लोग तो इल्म ज़ाहिर के पढ़ने वाले हैं और ये लोग बातिनी उलूम को क्या जानें।

अल्लाह तआला सब मुसलमानों को ऐसे अकीदे से बचाकर रखे और तौबा की तौफीक प्रदान करे। आज-कल हज़ारों मुसलमान इसी रोग और वहम का शिकार है। बल्कि नौबत यहां तक पहुंच चुकी है कि यदि कोई हिन्दू इनसे कहे कि तुम जाप और पाठ करो तो अच्छे हो जाओगे तो ये लोग यह भी कर गुज़रते हैं और अपने दिल में कहते हैं कि काफिर तो वह करने वाला होगा हमें भला कुफ़्र से क्या काम। बड़े दु:ख की बात है कि यह नहीं समझते कि कुफ़्र करने वाला, कराने वाला और कुफ़्र पर राज़ी होने वाला—ये सब के सब कुफ़्र में भागी हैं।

इसी तरह कुछ लोग नज़र और बीमारी के लिए कलेजी और सिरी चौराहों पर उतार कर रखते हैं और कुछ लोग खुश्का और दही तिराहे पर रखते हैं और कुछ लोग काले कुत्ते को तलाश करके खिलाते हैं। इसके अलावा भी और बहुत-सी वाहियात बातें करते हैं। मुसलमानों को चाहिए कि ऐसी बातों से बचे रहें और किसी जाहिल व काफिर की बातों में न आएं और नज़र का वही इलाज करें जो शरीअत की दृष्टि में सही है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने अपनी बीवी के गले में एक गंडा पड़ा देखा तो बीवी से पूछा यह गंडा कैसा है? बीवी ने जवाब दिया कि मेरी आंख में तकलीफ थी। जिस दिन से फलां यहूदी ने यह गंडा मुझे दिया है उस दिन से आंख में तकलीफ नहीं हुई। यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह ने अपनी बीवी से कहा कि

शैतान तेरी आंखों में कोंचा दिया करता था और जब तुझसे शैतान ने शिर्क करा लिया तो उसी दिन से तेरे पास नहीं आता। तुझे चाहिए था कि यह दुआ पढ़ती जो नबी करीम सल्ल0 पढ़ा करते थे। वह दुआ यह है :

अज़हिबिल बासा रब्बन्नासि वशिफ़ अन्तश्शाफी ला शिफा अ इल्ला शिफाउक ला युग़ादिरु सकमा0

"ऐ इन्सानों के पालने वाले! बीमारी को ख़त्म कर दे और शिफा प्रदान कर। तू ही शिफा देने वाला है जो किसी बीमारी को नहीं छोड़ता।"

इस कथन से यह बात भी पता चली कि यह दुआ आंख दुखने के लिए मुफीद है।

बुरी नज़र का घाव

इलाज — जिस आदमी को नज़र लग जाए उसे चाहिए कि यह दुआ पढ़े—

बिस्मिल्लाहि अल्ला हुम्मम अज़हिब हर्रहा व बर्दहा व सब्बहा

"अल्लाह तआला के नाम से शुरू करता हूं। ऐ अल्लाह! इस आंख की सर्दी और गर्मी और तकलीफ दूर फरमा।"

और यदि किसी जानवर को नज़र लग जाए तो ऊपर वाली दुआ पढ़कर चार बार जानवर के दाएं नथुने में और तीन बार बाएं नथने में फूंक दे और इसके बाद यह दुआ पढ़े :

अज़्हिबिल बास रब्बन्नासि अन्तश्शाफी ला यकशिफुज़्ज़ुर्रू इल्ला अन त०

"ऐ इन्सानों के रब! शिफा दे और तकलीफ दूर कर दे तू ही बख़्शने वाला है और तकलीफ दूर करने वाला है।"

हर प्रकार की बला व आफ़त के लिए दुआ

इलाज— जो आदमी सुबह व शाम यह दुआ पढ़ेगा वह हर बला व आफत से बचा रहेगा और अल्लाह की पनाह में रहेगा। वह मुबारक दुआ यह है :

अल्लाहुम्मम अन त रब्बी ला इलाहा इल्ला अन त अलैक तवक्कल्तु व अन त रब्बुल अर्शिल करीम। माशाअल्लाहु कान वमा लम यशाऊ लम यकुन इअलम अन्नल्लाहा अला कुल्लि शैइन कदीर० व अन्नल्लाह कद अहात बिकुल्लि शैइन इलमन अल्लाहुम्मम इन्नी अऊज़ुबिक मिन शर्रि नफ्सि. व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन त आख़िज़ुम बिना सियतिहा इन्ना रब्बी अला सिरातिम मुस्तकीम०

"ऐ अल्लाह! आप मेरे रब हैं आप के सिवा कोई माबूद नहीं। मेरा आपकी ही ज़ात पर भरोसा है और आप ही अर्शे अज़ीम के मालिक हैं। अल्लाह ने जो चाहा वह हुआ और जो नहीं चाहा नहीं हुआ। जानना चाहिए कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है

और अल्लाह ने हर चीज़ पर एहाता किया हुआ है। अल्लाह! मैं आप से पनाह मांगता हूं अपने नफ़्स और हर जानवर के शर से कि आप उसको पेशानी से पकड़े हुए हैं। बेशक मेरा अल्लाह सीधे रास्ते पर है।''

रिवायत है कि अबु दाऊद सहाबी रज़ि0 से किसी ने कहा कि तुम्हारे घर को आग लगी है और वह जल गया है। अबु दाऊद ने कहा कि मेरा घर नहीं जल सकता क्योंकि यह दुआ उस समय से रोज़ाना पढ़ता हूं जब से मैंने नबी सल्ल0 से यह दुआ सुनी है तो फिर मेरा मकान किस प्रकार जल सकता है। अतएव मकान को देखा गया तो उसके चारों ओर आग लगी थी और बीच में उनका मकान पूरी तरह महफ़ूज़ था। उसे कोई आंच नहीं आयी थी।

दुख व चिंता दूर करने की दुआ

फ़ायदा — सिराते मुस्तकीम में लिखा है कि जो आदमी सात बार यह दुआ सुबह व शाम पढ़ेगा अल्लाह उसे दु:ख व चिंता से नजात अता करेगा। वह दुआ यह है :

हसबियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुव अ़लैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम0

''मेरे लिए अल्लाह काफी है कि उनके सिवा कोई माबूद नहीं। मेरा उन पर ही भरोसा है और वह अर्शे अज़ीम के मालिक है।''

हाजात को पूरा करने के अमल

इलाज— जिस आदमी को कोई हाजत हो तो उसे चाहिए कि बारह दिन तक सौ बार इस दुआ को पढ़े। अल्लाह उसकी हाजत पूरी करेगा। दुआ यह है :

या बदीअल अजाइबि बिल ख़ैरि या बदीअ़0

"ऐ अजाइबात को बेहतर तरीक़े से ज़ाहिर करने वाले! भला कर"

पागल कुत्ते के काटे का इलाज

इलाज— जिस आदमी को पागल कुत्ता काट ले वह आदमी चालीस दिन तक हर दिन एक रोटी के टुकड़े पर यह नीचे की आयत लिख कर खा लिया करे। ऐसा करने से इन्शाअल्लाह उसके शर से बचा रहेगा। आयत यह है :

इन्नहुम यकीदूना कैदौं व अकीदु कैदा। फ-मह्हिलिल काफ़िरीन अम हि्ल हुम रुवैदा0

"वे लोग खुफिया तदबीरें कर रहे हैं और मैं भी खुफिया तदबीरें कर रहा हूं तो आप काफ़िर को थोड़े दिन छूट दीजिए।"

बच्चों की हिफ़ाज़त का अमल

इलाज— अल कौलुल जमील में लिखा है कि जो आदमी इस तावीज़ को लिखकर बच्चे के गले में डाल देगा तो वह बच्चा

अल्लाह की पनाह में रहेगा पूरी तरह महफूज़! वह दुआ यह है :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० अऊजु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन शर्रि कुल्लि शैतानिंव वह हाम्मतिंव व ऐनिल्लाम्मतिन व हस्सन्तु लिहिस्निन अल्फा अल्फिन ला हौ ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम०

"शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है और पनाह मांगता हूं अल्लाह के कलिमाते ताम्मा के ज़रिए शैतान के शर से और लगने वाली नज़र से और महफूज़ करता हूं हज़ारों क़िलों में और नहीं कुव्वत और नहीं ताकत मगर अल्लाह के साथ जो आला और अज़ीम है।"

आसेब दूर करने का अमल

इलाज — कौलुल जमील में है कि आसेब वाले रोगी के गले में यह तावीज़ डाले और जिस बच्चे को शैतान सताए या आसेब हो जाए तो उसके बाएं कान में सात बार यह आयत पढ़कर फूंक दे :

व-लक़द सुलैमान व अलक़ैना अलल कुर्सिय्यिहि ज-स-दन सुम्मम अनाब०

"और हमने सुलैमान की आज़माइश की और उसकी कुर्सी पर एक धड़ (लाश) डाल दिया तब वह मुतवज्जह हुआ।"

इस अमल से भी आसेब का असर दूर न हो तो उसके बाएं

कान में अज़ान दी जाए और इससे भी न जाए तो आसेब के रोगी पर सूर: फातिहा, सूरह फ़लक़ व सूर: नास, आयतल कुर्सी, सूरह तारिक, सूर: हश्र की अन्तिम आयतें और सूर: साफ्फात की शुरू की आयतें पढ़कर दम करता रहे। इन्शाअल्लाह इनकी बरकत से आसेब दूर हो जाएगा। शैतान जल जाएगा।

और यदि इतना करने पर भी न जाए तो आयत-अ-फ़-हसिबतुम आखिर तक उसके कान में पढ़ी जाए और एक बर्तन में पानी डाल कर उस पर सूर: फातिहा, आयतल कुर्सी और सूर: जिन्न की पांच आयतें पढ़कर दम करे और वह पानी रोगी के चेहरे पर छिड़क दे तो इससे इन्शाअल्लाह उसे होश आ जाएगा। यदि किसी के मकान में जिन्न का असर हो तो इस पानी को उस मकान में छिड़का दिया जाए तो इससे उस मकान से जिन्न का असर दूर हो जाएगा। और यदि कोई जिन्न या शैतान किसी के मकान में पत्थर फेंकता हो तो चार लोहे की कीलें लेकर उन पर यह आयतें पढ़े और उन कीलों को मकान के चारों ओर गाड़ दे तो फिर घर में पत्थर आना बन्द हो जाएंगे। लेकिन हर कील पर यह आयत २५-२५ बार पढ़ी जाए। आयत यह है :

इन्नहुम यकीदून कैदौं व अकीदु केदा०

"वे ख़ुफिया तदबीर कर रहे हैं और मैं भी ख़ुफिया तदबीर कर रहा हूं।"

जिस्म की हिफ़ाज़त की दुआ

इलाज— अबु दाऊद की हदीस है कि नबी करीम सल्ल० ने अपनी किसी बेटी को यह दुआ बताई थी और फरमाया था कि जो आदमी इस दुआ को सुबह व शाम पढ़ा करे तो वह अल्लाह की पनाह में रहेगा। वह दुआ यह है :

सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि वला हौ ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहि मा शाअल्लाहु कान वमा लम यशा लम यकुन आलम अन्नल्लाहा अला कुल्लि शैइन क़दीर। व अन्नल्लाह कद अहात बिकुल्लि शैइन इल्मा०

"अल्लाह बे ऐब है और प्रशंसा योग्य है। अल्लाह के सिवा किसी की ताकत और कुव्वत नहीं। अल्लाह ने जो चाहा वह हो गया। और जो नहीं चाहा वह नहीं हुआ और अल्लाह तआला अपने इल्म से हर चीज़ का एहाता किए हुए है।"

क़र्ज़ की अदायगी की दुआ

इलाज— अबु दाऊद ने अपनी सुनन में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत की है कि एक आदमी नबी सल्ल० की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझे दुखों ने और क़र्ज़ ने बहुत अधिक सता रखा है। इसका कोई इलाज बता दीजिए। आपने इर्शाद फरमाया "क्या मैं तुझे ऐसा कलाम सिखा दूं जो तू पढ़े अल्लाह तेरे दुखों को मिटा दे और तेरा कर्ज़ भी उतार दे। उस आदमी ने कहा 'हां'! ऐ

अल्लाह के रसूल! मुझको अवश्य आप कोई ऐसा ही कलाम (दुआ) सिखा दें। आपने इर्शाद फ़रमाया कि हर दिन सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा कर :

अल्लाहुम्मम इन्नी अऊज़ु बिक मिनल हम्मि वल हुज़्नि व अऊज़ुबिक मिनल जुब्नि वल बुख़्ल व अऊज़ुबिक मिन फ़िल्नतिद दैनि व कहर्रिजाल०

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं, दुख और फ़िक्र से, और पनाह चाहता हूं बुज़दिली और कंजूसी से, और तेरी पनाह चाहता हूं कर्ज़ के ग़लबे से, और लोगों के प्रकोप व प्रताड़ना से।"

वह आदमी कहता है कि जब मैंने यह दुआ पढ़ी तो इसकी बरकत से अल्लाह ने मेरे दुःख और मेरी चिंता ख़त्म कर दी और मेरा कर्ज़ भी अदा हो गया।

दुख व चिंता दूर करने की दुआ

इलाज— नबी करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जो आदमी सुबह व शाम यह दुआ पढ़ेगा अल्लाह तआला उसका दुख व चिंता दूर कर देगा। यह दुआ यह है :

अल्लाहुम्मम मा असबहतु मिन्का फ़ी नेमतिन व आफ़ियतिन व सत्रि फ़-अतमिम अला नेअ्मतिका व सतर-क फ़िद दुन्या वल आख़िर:०

"ऐ अल्लाह! मैंने आपकी जिस नेमत व आफ़ियत से सुबह की है उसको मेरे लिए दुनिया व आख़िरत में पूरी फ़रमा दे।"

एक और आदमी आपकी सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मुझे हर समय बलाएं और आफ़तें घेरे रहती हैं। आपने फ़रमाया कि तुम हर सुबह को यह दुआ पढ़ा करो :

बिस्मिल्लाहि अला नफ़्सी व अहली व मालीo

"शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से ऐ खुदा! मेरी जान व माल व बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त कर।"

शैतान से बचे रहने की दुआ

इलाज— अबू दाऊद में रिवायत है कि जो आदमी मस्जिद में दाख़िल होकर यह दुआ पढ़े तो शैतान कहता है कि यह आदमी आज के दिन मेरे शर से बच गया। यह दुआ यह है :

अऊज़ू बिल्लाहि व बिवजहिहिल करीमि व सुल्तानिहिल क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीमo

"अल्लाह महान है और उसका बुज़ुर्गी व करीमी और क़दीम शान व शौकत की पनाह चाहता हूं, शैतान मर्दूद से।

बदन की हिफ़ाज़त की दुआ

इलाज— जो आदमी चाहे कि मेरा बदन ठीक-ठाक रहे। महफ़ूज़ रहे तो उसे चाहिए कि इस दुआ को सुबह-शाम पढ़े। हर दिन यह पढ़ी जाए। इन्शाअल्लाह इसकी बरकत से वह हिफ़ाज़त से रहेगा।

अल्लाहुम्मम आफ़िनी बदनी अल्लाहुम्मम आफ़िनी फी समई, अल्लाहुम्मम आफ़िनी फी ब-स-री ला इलाह इल्ला अन त०

"ऐ अल्लाह! आफ़ियत प्रदान कर मेरे बदन में। ऐ अल्लाह! आफ़ियत प्रदान कर मेरे कानों में। ऐ अल्लाह! आफ़ियत प्रदान कर मेरी आंखों में। तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

हर प्रकार की बुराई व आफ़तों से हिफ़ाज़त

इलाज— जो आदमी यह चाहे कि वब डूबने, जल जाने, दब जाने व सांप बिच्छुओं के काटने व दूसरी बलाओं से महफ़ूज़ रहे। उसे चाहिए कि इस दुआ को हर दिन पाबन्दी से पढ़ा करे। दुआ यह है :

अल्लाहुम्मम अऊजु बि क मिनत्तरद्दी व मिनल ग़-र-कि मिनल हर्कि व मिनल हदमि व अऊजुबिक मिन ऐंय-त-ख़ब्ब-त-निश्शैतानु इन्दल मौ ति व अऊजुबिक मिन अन अमूत फी सबीलि-क मुदबिरिवं व अऊजुबिक मिन अन अमूत लदीग़न०

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं ग़र्क़ होने से, जल जाने से, और दबने से और इस बात से कि मुझे शैतान बदहवास कर दे मौत के समय। और इस बात से पनाह चाहता हूं कि तेरे रास्ते में पुश्त दिखाकर मारा जाऊं। और पनाह चाहता हूं इस बात से

कि सांप के डसने से मारा जाऊं।"

नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया है कि जो आदमी सुबह-शाम तीन बार इस दुआ को पढ़े तो वह तकलीफ से बचा रहेगा। वह दुआ यह है :

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रू मअस्मिहि शैउन फ़िलअर्ज़ि वला फ़िस्समाई व हुवस्समीउल अलीम0

"उस अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जिसके होते हुए ज़मीन और आसमान की कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुंचा सकती और वही सुनने व जानने वाला है।"

रिवायत है कि इस हदीस के रावी को फालिज हो गया था। लोगों ने उनसे कहा कि तुम हर दिन इस दुआ को पढ़ते थे। फिर तुम किस तरह इस रोग का शिकार हो गए। उन्होंने जवाब दिया कि उस दिन मैं यह दुआ पढ़नी भूल गया था।

दुःख और चिंता दूर करने की दुआ

इलाज— हदीस शरीफ में है कि नबी करीम सल्ल0 को जब भी कोई दुःख या चिंता होती तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे :

ला इलाह इल्लल्लाहुल करीम0 लाइलाह इल्लल्लाहुल अज़ीम। वल हलीमु ला इला ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति वल अर्ज़ि व रब्बुल अर्शिल करीम0

"उस अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं जो हिकमत व करम वाला है कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा जो बड़ा महान और इल्म वाला है और कोई माबूद नहीं अल्लाह के सिवा जो ज़मीन व आसमानों और अर्शे अज़ीम का रब है।"

जामेअ् तिर्मिज़ी में है कि जब नबी सल्ल० को कोई मुश्किल पेश आती तो यह पढ़ते थे :

या हैयु या कैयूमु बिरहमतिक असतग़ीस०

और कुछ रिवायतों में है कि आपने कभी फरमाया कि दुखी आदमी के लिए यह दुआ है :

अल्लाहुम्मम बिरहमतिक अरजू फला तुकिलनी इला नफ्सी तुर्फ-त अयनिवं व असलिह ली शानी कुल्ल-हु ला इलाहा इल्ला अन्त०

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूं तू मुझे मेरे हाल पर ज़रा भी न छोड़ और मेरी इस्लाह कर दे तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।"

और नबी करीम सल्ल० ने असमा बिन्त उमैस रज़ि० से फरमाया क्या मैं तुमको ऐसा कलिमा सिखा दूं कि चिंता व दुःख के समय तुम उसे पढ़ा करो। असमा ने अर्ज़ किया— सिखा दीजिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने फरमाया यह दुआ सात बार पढ़ा करो :

अल्लाहु रब्बी ला उश्रिकु बिहि शैअन

और इर्शाद फरमाया कि दुआए जुन्नून अर्थात्—

ला इलाह इल्ला अन त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन0

यह हर दु:ख व चिंता को दूर करती है। आगे नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि जो आदमी इस्तिग़फार को पाबन्दी से पढ़े तो अल्लाह तआला उसे भी हर प्रकार की परेशानी व मुसीबत से नजात दिला देता है।

अस्तग़फिरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह हुवल हैयुल कैयूम व अतूबु इलैह0

नबी करीम सल्ल0 ने यह फरमाया कि जिस आदमी को दु:ख व परेशानी प्राय: घेरे रहते हों उसके लिए यह इस्तिग़फार जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

हर प्रकार के शर्र व बला से हिफ़ाज़त

इलाज—अल्लामा स्युती ने अपनी किताब "किताबुल इत्तकान" में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से हदीस नकल की है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि जब तुम सोने का इरादा करो तो सूरह फातिहा और सूरह इख़्लास पढ़ लिया करो। इन आयतों की बरकत से अल्लाह तआला तुम को सिवाए मौत के हर प्रकार की परेशानी व मुसीबत से महफूज़ रखेगा। और सही मुस्लिम में हज़रत अबु हुरैर: रज़ि0 से रिवायत है कि जिस घर में सूर: बकरा पढ़ी जाए। उस घर में शैतान दाख़िल नहीं

होता। और दारमी ने हज़रत मसऊद रज़ि0 से मरफ़ूअन रिवायत की है कि जो आदमी सूरह बकरा: की ये चार आयतें अर्थात् शुरू सूरह से मुफ्लिहून तक और आयतल कुर्सी ख़ालिदून तक और आमनर्रसूल से आखिर तक पढ़े उसके घर वालों के पास उस दिन शैतान नहीं आता और न किसी प्रकार की बुराई का उसके घर के लोग शिकार होंगे। यदि इन तमाम आयतों को पढ़कर किसी मजनूं व दीवाने पर फूंक दिया जाए तो उसका दीवानापन ठीक हो जाएगा।

दुआए ज़ुन्नून पढ़ने का तरीक़ा

फायदा— ज़ुन्नून हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की उपाधि है चूंकि आपने मछली के पेट में यह दुआ मांगी थी इसलिए अल्लाह तआला ने आपको उस मुसीबत से नजात दिलायी थी। इसीलिए इस दुआ का नाम दुआए ज़ुन्नून है।

इस दुआ के पढ़ने का तरीका यह है— पहले वुज़ू करे और किसी अंधेरी जगह पर किबला रुख़ बैठे। एक कटोरे में पानी भर कर वह कटोरा अपने पास रख ले। इसके बाद इस दुआ को तीन सौ बार रोज़ाना सात दिन तक या दस दिन या चालीस दिन तक पढ़े और थोड़ी-थोड़ी देर बाद इस पानी में अपने हाथ डुबो कर अपने चेहरे व बदन पर फेरता जाए। अल्लाह तआला उस आदमी के हर प्रकार के दुख व चिंताएं दूर कर देगा।

अपनी व पड़ोसी की हिफ़ाज़त की दुआ

इलाज— हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी ने नबी करीम सल्ल० से अर्ज़ की कि आप मुझे कोई ऐसी दुआ बता दें जिसके पढ़ने से मुझे बहुत अधिक लाभ हो, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम रात को पाबन्दी के साथ आयतल कुर्सी पढ़ा करो। इसकी बरकत से अल्लाह तआ़ला तुम्हारी हर प्रकार की हिफ़ाज़त करेगा और तुम्हारे व तुम्हारे पड़ौसी के मकान पर भी हर प्रकार की निगहबानी रखेगा।

भूल जाने की दुआ

इलाज— दारमी ने अपनी सुनन में इब्ने मसऊद रज़ि० से रिवायत की है कि जो आदमी सोते समय सूर: बक़र: की दस आयतें पढ़ेगा तो क़ुरआन पाक उसको याद रहेगा और वह भूलेगा नहीं। वे आयतें यह हैं। शुरू से मुफ़्लिहून तक, आयतल कुर्सी की ख़ालिदून तक और अन्तिम तीन आयतें।

क़र्ज़ अदा हो जाने की दुआ

इलाज— तबरानी ने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं तुमको ऐसी दुआ बताता हूं कि उसकी बरकत से यदि पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ होगा तो अल्लाह तआ़ला अदा कर देगा। वह दुआ यह है :

क़ुलिल्लाहुम्मम मालिकल मुल्कि से बिग़ैरि हिसाब

इसके बाद यह दुआ पढ़े :

रहमानुद्दुन्या वल आख़िरति व रहीमुहुमा तुअ्ती मन तशाऊ मिन्हुमा व त-ज़-अ्‌ा मन तशाऊ अरहमनी रहमतन तुग़्नीनी फ़ीहा मिर्रहमतिम्मिन सिवा-क०

''दुनिया व आख़िरत में रहमान और आख़िरत में रहीम० आप जिसे चाहते हैं देते हैं और जिसे नहीं चाहते रोक देते हैं। ऐ खुदा मुझ पर अपनी विशेष रहमत भेज कि मैं सब से बेनियाज़ हो जाऊं।''

जानवरों की सरकशी की दुआ

इलाज— बैहक़ी ने हज़रत्त इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत की है कि यदि किसी आदमी को अपने जानवर से तकलीफ़ पहुंचे अर्थात् जानवर सरकशी और शरारत के कारण सवारी न दे या वज़न न उठाए तो उस आदमी को चाहिए कि उस जानवर के कान में यह दुआ पढ़कर फूंक दिया करे :

अ-फ़-ग़ै-र दीनिल्लाहि यबग़ू न व-लहु अस-ल-म मन फ़िस्समावाति वलअर्ज़ि तौऔं व करहैं व इलैहि युर्जऊन०

''अल्लाह के दीन के अलावा क्या तलाश करते हैं यद्यपि उसी की आज्ञापालन है ख़ुशी और नाखुशी में और तमाम मौजूदात जो आसमानों और ज़मीन में हैं, उसी की ओर पलटते हैं।''

इलाज--तबरानी ने मोजिम औसत में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत की है कि जिस आदमी का गुलाम या लौंडी सरकश हो जाए और अपने मालिक की इताअत न करे या किसी की औलाद सरकश हो जाए तो उसके कान में यही दुआ पढ़कर दम की दी जाए तो इन्शाअल्लाह तआला ग़ुलाम लौंडी या औलाद की सरकशी ख़त्म हो जाएगी और ये सब आज्ञा पालक बन जाएंगें।

हर प्रकार के रोग से शिफ़ा की दुआ

इलाज- इमाम बैहकी ने हज़रत अली रज़ि0 से मौक़ूफ़न रिवायत की है कि जो आदमी बीमार हो उस पर सूरह अनआम पढ़ी जाए तो इन्शाअल्लाह उसकी बरकत से बीमार को शिफ़ा हासिल होगी।

डूबने से हिफ़ाज़त

इलाज- हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में जो आदमी किश्ती पर सवार होने के समय यह दुआ पढ़े तो वह डूबने से बचा रहेगा। वह दुआ यह है :

बिस्मिल्लाहि मजरैहा व मुर्साहा इन्नन रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम0 वमा क़-द-रुल्लाह हक्क़ा क़दरिहि वल अर्ज़ु जमीअन

क-ब-ज़तहु यौमल क़ियामति वस्समावातु मुतवियातुन 10 *बियमीनिहि। सुब्हानहु व तआला अम्मा युश्रिकून०*

"उसका चलना और ठहरना अल्लाह तआला के ही हुक्म से है। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला व मेहरबान है और लोगों ने खुदा की क़दर नहीं की जैसा कि उसका हक़ है। क़ियामत के दिन सारी ज़मीन उसकी एक मुट्ठी में और आसमान सीधे हाथ में लपेटे होंगे वह पाक ज़ात है और शिर्क से बुलन्द है।"

जादू के असर को दूर करने की दुआ

इलाज– इब्ने अबी हातिम ने लैस से रिवायत की है कि जिस आदमी पर जादू हो तो यह आयतें पढ़कर पानी पर दम करके पानी उस पर डाल दें। इन्शाअल्लाह उसको जादू के असर से शिफा नसीब होगी। वे आयतें यह हैं :

सूरः यूनुस की दो आयतें :

फलम्मा अलकै से *मुजरिमून* तक और एक आयत सूरः आराफ की *फ-व-क-अल हक्कु* से *रब्बि मूसा व हारून* तक और एक आयत सूरः ताहा *की इन्न-म स-न-उ कैदा साहिरिउं वला युफ्लिहुस्साहिरून*

परेशानी और तकलीफ़ का इलाज

इलाज– हाकिम ने हज़रत अबु हुरैरः रज़ि० से रिवायत की

है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि मुझ पर जब भी कोई सख़्ती या परेशानी आई जिबरील ने मुझको यह कहा कि मुहम्मद (सल्ल0)! यह दुआ पढ़ा करो :

तवक्कलतु अलल हैयिल्लज़ी ला यमूतु वलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िजु व - ल-दौं वलम यकुल्लहु शरीकुन फ़िलमुल्कि वलम यकुन लहु वलिय्युम मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहु तकबीरा0

''मैंने उस ज़िन्दा की ज़ात पर भरोसा किया जिसको कभी मौत नहीं और सारी प्रशंसा उसी ख़ुदा के लिए है जिसने किसी को औलाद नहीं बनाया और न मुल्क में उसका कोई भागी है न ही कोई मददगार ज़ात में और उसकी बुज़ुर्गी ब्यान कर बुज़ुर्ग जान कर।''

चोरी से हिफ़ाज़त की दुआ

इलाज– इमाम इब्ने स्युति रह0 ने अपनी किताबुल इत्तकान में इब्ने अब्बास रज़ि0 से हदीस नक्ल की है कि नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फरमाया कि जो आदमी यह दुआ पढ़ेगा उसका घर चोरी से महफ़ूज़ रहेगा। वह दुआ यह है :

कुलिद उल्लाह अविद उर्रहमान। ऐयम मा तदउ से अन्त सूर: तक।

कुछ किताबों में लिखा है कि रात को इसे पढ़कर अपने घर पर फूंक दिया करे और यदि कोई आदमी कहीं से माल लाए या

कहीं भेजे तो इसी आयत को लिखकर उसमें रख दिया करे तो हक़ तआला अपने फ़ज़्ल से उस माल को चोरी होने से महफ़ूज़ रखेगा।

बीमारी से शिफ़ा

इलाज– यदि कोई बीमार हो तो उसके मकान में यह आयत पढ़कर फूंक दे। इन्शाअल्लाह उसे शिफ़ा हासिल होगी। वह आयत यह है :

अ-फ-हसिबतुम अन्नन-म ख़लक़नाकुम से सूरः के अन्त तक।

बैहक़ी ने हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से रिवायत की है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया है कि जो आदमी इस आयत को पूरे यक़ीन के साथ पढ़े तो पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाए। कहने का मतलब यह है कि बीमारी तो मामूली चीज़ है। इस दुआ की बरकत से पहाड़ भी हिल सकता है।

दिल की सख़्ती के लिए दुआ

इलाज– मुस्तदरक में अबू जाफ़र मुहम्मद अली अर्थात् इमाम मुहम्मद बाक़र से रिवायत है कि जो आदमी अपने दिल में सख़्ती (अर्थात् आख़िरत की ओर से बेफ़िक्री) महसूस करे और लोगों अर्थात् अल्लाह के बन्दों पर प्यार-मुहब्बत व दया आदि की भावना न रहे और वह आदमी किसी की नसीहत भी क़ुबूल न करे तो ऐसे

आदमी को चाहिए कि एक प्लेट पर सूरः यासीन ज़ाफ़रान से लिख कर पी लिया करे। यह भी मालूम होना चाहिए कि सूरः यासीन हदीस की किताबों में मुख़्तलिफ़ ख़ासियतें आयी हैं जैसे कि मौत के समय पढ़ी जाए तो मौत की सख़्ती कम हो जाती है और यदि हाजत के लिए पढ़ी जाए तो हाजत पूरी होती है। यदि दीवने या पागल पर पढ़ी जाए तो वह स्वस्थ हो जाता है और यदि सुबह को पढ़ी जाए तो शाम तक उसे राहत नसीब होती है। इसके अलावा उलमा का कहना है कि ख़ुशी व राहत के लिए इस सूरः को हमने तिर्याक़ पाया है।

इसी प्रकार यदि कोई आदमी सुबह को सूरह दुख़ान पढ़ेगा तो वह शाम तक अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेगा और दारामी ने रिवायत की है कि जो आदमी सुबह के समय सूरह दुख़ान पढ़ेगा तो वह शाम तक किसी ग़लत काम में न फंसेगा।

बच्चे की पैदाइश में आसानी

इलाज—बैहेकी ने इब्ने मसऊद रज़ि० से मरफ़ूअन रिवायत है कि यदि किसी औरत को बच्चे के पैदा होने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा हो और दर्द व तकलीफ़ अधिक हो और पैदाइश न होती हो तो ये कलिमात लिख कर और धोकर उस औरत को पिला दिए जाएं। कलिमात यह हैं :

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्लल्लाहुल हकीमुल करीम सुब्हानल्लाहि तआला रब्बुल अर्शिल अज़ीम० अलहुम्दु लिल्लाहि

रब्बिल आलमीन क- अन्न-हुम यौ म यरौनहुम लम यलबसू इल्ला अशिय्यतन औ जुहाहा। क-अन्नहुम यौ म य-रौ-न मा यूअदून लम यलबसू इल्ला साअतम्मिन्नहारि बलागुन फ-हल युह्लकु इल्लल कौमुल फासिकून0

"उस अल्लाह के नाम से शुरू करता हू जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है अल्लाह करीम है हकीम है पाक है और अर्शे अज़ीम के लिए है। जिस दिन क़ियामत को देखेंगे तो ऐसा महसूस होगा कि दुनिया में ठहरे ही नहीं मगर एक सुबह या शाम। जिस दिन उस चीज़ को देख लेंगे जिसका वादा है तो महसूस होगा कि नहीं ठहरे मगर एक घड़ी दिन। यह पहुंचा देना है वही हलाक होंगे जो अवज्ञाकारी हैं।"

साहिबे इत्तकान ने इब्ने सनी से रिवायत नक्ल की है कि जब हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां बच्चे की पैदाइश के दिन निकट आते तो नबी करीम सल्ल0 सूरः आराफ की यह आयत ... *इन्नन रब्ब-कुमुल्लाहु* को *रब्बुल आलमीन* तक और सूरः *फलक* व सूरः *नास* को लिख कर दिया करते थे जिससे बच्चे की पैदाइश में आसानी हो जाती थी।

वसवसों को दूर करने की दुआ

इलाज— अबू दाऊद ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत नक्ल की है कि जब तुम अपने दिल में किसी प्रकार का वसवसा महसूस करो तो यह दुआ पढ़ा करो। दुआ यह है :

हुवल अव्वलु वल आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल बातिनु व हुव बिकुल्लि शैइन अलीम०

गुम हो गयी चीज़ हासिल करने की दुआ

इलाज– इमाम जज़्री रह० ने अपनी किताब में लिखा है कि यदि किसी की कोई चीज़ गुम हो जाए या नौकर व काम करने वाली घर से भाग जाए तो उसे चाहिए कि पहले वुज़ू करे। दो रकअत नमाज़ अदा करे और इसके बाद इन कलिमात के साथ दुआ करे :

बिस्मिल्लाहि हादियज़्ज़लालि व राद दिज़्ज़ला लति उरदो अलैया ज़ल्लाति बिकुव्वतिक व सुल्तानि-क फ-इन्नहा मिन अताइक व फज़्लिक०

"शुरू अल्लाह के नाम से जो गुमराह को हिदायत देने वाला है और खोए हुए को वापस करने वाला है। ऐ अल्लाह! मेरी गुमशुदा चीज़ वापस करा दे अपनी इज़्ज़त व शौकत से। इसलिए कि यह तेरा फ़ज़्ल और इनाम है।"

बाज़ार के फ़ित्नों से हिफ़ाज़त

इलाज– मालूम होना चाहिए कि बाज़ारों में तरह-तरह की बुराइयां मौजूद हैं। इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि उस समय तक बाज़ारों में कदापि न जाएं जब तक नबी सल्ल० का बताया हुआ इलाज न कर लें। अतएव इमाम जज़्री रह० ने रिवायत की

है कि जिस आदमी को बाज़ार में जाने की ज़रूरत हो वह पहले यह दुआ पढ़ ले, फिर बाज़ार जाए :

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मम इन्नी असअलुक ख़ै-र हाज़ल यौमि व ख़ैर। हाज़स्सूकि व ख़ै-र मा फ़ीहा व अऊज़ुबिक अन उसीबा फ़ीहा यमीनन फाजिर तन व शफ़्क़-तन ख़ासिरतन

"ऐ अल्लाह! मैं आपसे आज के दिन की ख़ैर का सवाल करता हूं बाज़ार और उसकी चीज़ों की ख़ैर का सवाल करता हूं और आप से पनाह चाहता हूं। बाज़ार में झूठी क़सम खाने और नुकसान वाले मामले से।"

बीमारी से हिफ़ाज़त

इलाज— यदि किसी बीमार को देख कर यह दुआ पढ़ लिया करें तो हक़ तआला उस बीमारी से उस आदमी को अपनी पनाह में रखता है और वह रोग उसे नहीं हो पाता। वह दुआ यह है :

अल्लाहुम्मम इन्नी अऊज़ुबिक अलहम्दुलिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानि मिम्मब्तला-क बिहि व फ़ज़्ज़-ल-नी अला कसीरिम मिम्मन ख़-ल-क तफ़ज़ीला०

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूं। उस ख़ुदा का शुक्र है जिसने मुझको इस बीमारी से महफ़ूज़ रखा जिसमें तुझको मुब्तला किया और दूसरी मखलूक़ पर मुझको फज़ीलत बख़्शी।"

अश्लील बातों से हिफ़ाज़त

यदि किसी आदमी को गालियां देने व गन्दी बातें करने की आदत हो जाए तो उसका इलाज यह है कि इस्तिग़फ़ार की कसरत करे। अतएव नबी करीम सल्ल० की सेवा में एक आदमी हाज़िर हुआ और उसने कहा मेरी ज़बान पर अश्लीलता सवार है। आपने इर्शाद फ़रमाया कि तू इस्तिग़फ़ार क्यों नहीं करता। मैं तो हर दिन सौ बार इस्तिग़फ़ार करता हूं।

हम मुसलमानों के लिए बड़ी अहम और ग़ौर करने योग्य बात यह है कि नबी सल्ल० मासूम व रहमतुल लिल आलमीन होकर भी हर दिन अल्लाह के दरबार से मग़फ़िरत की दुआ मांगते थे। इस हिसाब से हम गुनाहगारों को तो अल्लाह से हर समय इस्तिग़फ़ार करते रहना चाहिए।

वसवसों से हिफ़ाज़त

इलाज— हदीस शरीफ़ में है कि यदि किसी को वसवसे आते हों तो उसे आमन्तु बिल्लाहि व रसूलिहि पढ़ना चाहिए और कुछ रिवायतों में आया है कि यह पढ़ा करे :

अल्लाहु अ-ह-दुन अल्लाहुस्स-म-दु। लम यलिद। वलम यूलद। वलम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद०

और कुछ हदीसों में है कि जो शैतान इन्सान के दिल में

वसवसे डालता है उसका नाम खिन्ज़िब है इसलिए उस समय अऊज़ु पढ़कर बाएं ओर थुतकार दे।

नेमत की अधिकता की दुआ

इलाज— नबी करीम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि बन्दे को जब अल्लाह तआला कोई ख़ास नेमत प्रदान करे और वह बन्दा अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन पढ़े तो अल्लाह तआला उसको उस नेमत से ज़्यादा और बेहतर प्रदान करते हैं।

माल की अधिकता की दुआ

इलाज— जो आदमी चाहे कि उसके माल में बरकत हो तो उस को यह दुआ पढ़नी चाहिए :

अल्लाहुम्मम सल्ले अला मुहम्मदिन अब्दि-क व रसूलि-क व अलल मोमिनीन वल मोमिनाति व अलल मुस्लिमीन वल मुस्लिमात0

"ऐ अल्लाह! अपने बन्दे और रसूल (सल्ल0) पर रहमत भेज और रहमत भेज मोमिन मर्द व औरत पर और मुसलमान मर्द व औरत पर।"

दुरूद शरीफ़ के फ़ायदे व ख़्वास

मालूम होना चाहिए कि दुरूद शरीफ़ के असंख्य फायदे हैं।

लेकिन जो फ़ायदे सहीह हदीसों व रिवायतों से साबित हैं। यहां पर सार के साथ ब्यान किए जाते हैं ताकि तिब्बे नब्वी का पूरा-पूरा फायदा हासिल हो सके।

दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सबसे बड़ा फ़ायदा तो यही है कि जो आदमी एक बार नबी सल्ल0 पर दुरूद भेजता है तो अल्लाह तआला और फ़रिश्ते उस पर दस बार दुरूद भेजते हैं और उस आदमी के दस दर्जे बलन्द किए जाते हैं और दस नेकियां उनके नामे आमाल में लिखी जाती हैं और दस बुराइयां मिटा दी जाती हैं और ऐसे आदमी की दुआ कुबूल होती है और नबी सल्ल0 की शफाअत उस पर वाजिब हो जाती हैं। कियामत के दिन वह नबी सल्ल0 के पास रहेगा और कियामत के दिन हुज़ूर सल्ल0 उस आदमी के काम आएंगे।

इसके अलावा दुरूद शरीफ पढ़ने से दीन व दुनिया के काम पूरे होते हैं और गुनाहों की मग़फिरत होती है। दुरूद शरीफ़ का पढ़ना सदका की जगह ले लेता है और इसकी बरकत से तकलीफ़ व सख़्ती दूर हो जाती है बीमार को शिफा नसीब होती है। दुश्मन पर फतह हासिल होती है और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले आदमी पर फ़रिश्ते हर समय रहमत भेजते हैं। इससे दिल की सफ़ाई होती है। घर और माल में बरकत होती है। दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले आदमी की कई पुश्तों में दुरूद शरीफ़ की बरकतों का ज़हूर होता है। मौत की सख़्ती में कमी हो जाती है। ऐसा आदमी कियामत की घबराहट व भय से अमन में रहेगा। दुनिया में निजात मिलेगी। दुरूद शरीफ़ की बरकत से भूला हुआ ख़्वाब याद आ

जाता है। तंगदस्ती दूर होती है और इसका पढ़ने वाला कंजूस नहीं होता।

जिस मजलिस में दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है तो मजलिस के सब लोगों को अल्लाह की रहमत ढाँप लेती है और इसका पढ़ने वाला आदमी पुलसिरात से बड़ी आसानी से गुज़र जाएगा। नबी करीम सल्ल0 के दरबार में ऐसे आदमी का ज़िक्र होता है और नबी सल्ल0 की मुहब्बत बढ़ती है और नबी सल्ल0 को ऐसे आदमी से मुहब्बत हो जाती है। दुरूद शरीफ पढ़ने वाले का ख़्वाब में नबी सल्ल0 की ज़ियारत और कियामत के दिन मुसाफ़: करना नसीब होगा और उस आदमी से फरिश्ते भी मुसाफ़ करेंगे और मरहबा कहेंगे।

दुरूद शरीफ को फरिश्ते सोने चांदी के कलम से दफ्तर इस प्रकार पहुंचाते हैं कि फलां आदमी ने आपको सलाम कहा है और नबी सल्ल0 की क़ब्र मुबारक पर कोई आदमी जाकर सलाम करे तो हुज़ूर भी उस पर सलाम भेजते हैं और हुज़ूर का सलाम यदि किसी को नसीब हो जाए तो लाखों करामातों और फायदों से अफज़ल समझना चाहिए।

और दुरूद शरीफ की ख़ासियत यह है कि तीन दिन तक इसको पढ़ने वाले के गुनाह नहीं लिखे जाते और वह इसलिए कि शायद यह आदमी तौबा कर ले तो गुनाह ख़त्म हो जाएं। दुरूद शरीफ पढ़ने वाला आदमी उसकी बरकत से अर्श के साए में खड़ा किया जाएगा और उसके आमाल का पलड़ा कियामत के दिन

भारी हो जाएगा और क़ियामत के दिन प्यास से वह अमन में रहेगा।

नबी सल्ल० ने कुछ बुज़ुर्गों का ख़्वाब में मुंह तक चूम लिया क्योंकि ये बुज़ुर्ग दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे।

जिस आदमी के कान में शोर व ग़ुल मालूम होता है उस को चाहिए कि कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करे और दुरूद शरीफ़ के बाद ये कलिमात पढ़े :

ज़-क- रल्लाहु बि ख़ैरिम्म न ज़-क-र-नी

अल्लाह तआला हम सबको (मुसलमानों को) दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सौभाग्य प्रदान करे और उसकी बरकतों से नवाज़े। (आमीन)